

Muharta Chikra wipika

Ram Dyal.

Pub. ~~Mughal~~ ~~vered~~ ~~the~~ ~~for~~

N. K. P. - kakhnew

1874



6585

Price Rs. 1/4/-

# मुहूर्त चक्र दीपिका

जिसको

अनभ्यस्त द्विजातियों के उपकारार्थ मुहूर्त चिन्ता मणि,  
 मणिमाला, मुहूर्त गणपति, संस्कार प्रभा, शोधबोध,  
 रत्नद्योत, ज्योतिर्ग्रन्थों का सारांश लेकर अर्गल  
 पुरस्थ पाण्डित रामदयाल ज्योतिर्वितिलक ने  
 श्रीमद्विजेन्द्र निहामिश्र गुरुचरणार बिन्दु  
 की सहायता से रचा

लखनऊ

मुन्शीनवल किशोर के यन्त्रालय में छपी

अप्रैल सन् १८९४ ई.





सुच  
दी  
२

श्रीगणेशायनमः ॥ प्रगट हो कि सुख दुख मनुष्य को समय अनुसार अर्थात् सुहृत् के अनु  
कूल है इसलिये यह सारणी शीघ्रैप्सित कारणी इन गंधों की सहायता से सुहृत् चिंता मणि मा  
ला सुहृत् गण पति संस्कार प्रभा शीघ्र बोध रत्नोत्तम इन का आशय ले चक्रों में दूषण भूषण  
समेत प्रीयुत हिजेन्द्र निहा मिश्र गुरु के चरणारविंद की सहायता पाके पंडित राम दयाल ने स्वी  
इसलिये कि जो मनुष्य अनभ्यास रखते हैं अर्थात् किसी किसी समय कार्य पड़ने से कंटा  
ग्र नहीं रहता इसलिये वे मनुष्य इस की सहायता पाके अपने चिंतित कार्य की सिद्धि पावेंगे  
इस से नाम सुहृत् चक्र दीपिका रक्ता है जो ब्राह्मण इस को लेकर अपने कार्य में लावें उन को  
हमारा दंडवत प्रणाम नित है शार्ङ्गधर विवाह घटनं चैव लग्नजं ग्रह जंवर नाम अक्षितये त्सर्व

|                |      |  |
|----------------|------|--|
| मासका          | मां. | जन्मन जायते यदा रहस्यति दंपत्यो जन्म ताराभ्यां नामक्षीभ्या मया पिवा भमेलचिं                  |
| पक्षका         | प    | त यत्प्राज्ञः सुख संतानं वृद्धये ज्योतिर्निर्वधे देशा ग्रामे ग्रहे युद्धे सेवायां व्यवहार के |
| तिथिका         | ति   | नाम एते प्रधानत्वं जन्म राशिं न चिंतयेत् का किरणं वर्गं शुद्धे च दाने सूते ज्वरे द           |
| वारका          | वा   | ये मंत्र पुन भूवरणे नाम राशेः प्रधानता विवाहे सर्व मांगल्ये यात्रादौ ग्रह गो-                |
| नक्षत्रका      | न    | चरे जन्म राशे प्रधानत्वं नाम राशिं न चिंतयेत् नारदेन विप्राणां दशधा कूटम                     |
| इत्यादि सब हैं |      | हान्निर्याणां तथा रुधा ॥ वैश्यानां च वृद्धे शूद्रे वर्णं चतुष्टयम् ॥ १॥॥                     |

शि.  
२



सुच.  
३. सी.

| तिथि | नाम    | स्वामी    | उत्तम   | मध्यम | अधम     | मृत्युयो   | सिद्धि  | ककच     | दग्ध    | विषा    | हुता    |
|------|--------|-----------|---------|-------|---------|------------|---------|---------|---------|---------|---------|
| १    | नंदा   | भरि       | कृष्णप. | ०     | शुक्लप. | सूर्यमं.   | शुक्र   | ०       | ०       | ०       | ०       |
| २    | भद्रा  | ब्रह्मा   | कृ.     | ०     | शु.     | चं. शु.    | बुध     | ०       | ०       | बुध     | ००      |
| ३    | जया    | गौरी      | कृ.     | ०     | शु.     | बुध        | मंग.    | ०       | बुध     | ०       | ००      |
| ४    | रिक्ता | गणेश      | कृ.     | ०     | शु.     | बृहस्प.    | प्राणि  | ०       | ०       | सूर्य   | ००      |
| ५    | पूर्णा | सर्प      | कृ.     | ०     | शु.     | प्राणि     | बृहस्प. | ०       | मंगल    | ०       | ००      |
| ६    | नंदा   | स्कन्ध    | ०       | कृ.   | ०       | सूर्यमं.   | शुक्र   | प्राणि  | बृहस्प. | चंद्र   | चंद्र   |
| ७    | भद्रा  | सूर्य     | ०       | कृ.   | ०       | चंद्र. शु. | बुध     | शु.     | ०       | माघा    | मंग.    |
| ८    | जया    | शिव       | ०       | कृ.   | ०       | बुध        | मंग.    | बृहस्प. | शु.     | बृहस्प. | दध      |
| ९    | रिक्ता | दुर्गा    | ०       | कृ.   | ०       | बृहस्प.    | प्राणि  | बुध     | प्राणि  | शुक्र   | बृहस्प. |
| १०   | पूर्णा | यम        | ०       | कृ.   | ०       | प्राणि     | बृहस्प. | मंग.    | ०       | ०       | शुक्र   |
| ११   | नंदा   | विष्णुदे. | शुक्ल   | ०     | कृ.     | सूर्यमं.   | शुक्र   | सोम     | चंद्र   | ०       | प्राणि  |
| १२   | भद्रा  | विष्णु    | शुक्ल   | ०     | कृ.     | चं. शु.    | बुध     | रवि     | सूर्य   | ०       | सूर्य   |
| १३   | जया    | काम       | शुक्ल   | ०     | कृ.     | बुध        | मंगल    | ०       | ०       | ०       | ०       |
| १४   | रिक्ता | शिव       | शुक्ल   | ०     | कृ.     | बृहस्प.    | प्राणि  | ०       | ०       | ०       | ०       |
| १५   | पूर्णा | चंद्र     | शुक्ल   | ०     | कृ.     | प्राणि     | बृहस्प. | ०       | ०       | ०       | ०       |
| ३०   | दर्श   | पितृ      | शुक्ल   | ०     | कृ.     | श.         | प्राणि  | ०       | ०       | ०       | ०       |

शि.  
३



सु. च.  
दी.  
४

| तिथि शून्यानि उभयपक्षे |                         | रघु | घट्यावर्ज | निंद्यभे                                     | शून्य   | नक्षत्रा लग्न तिथ्याः |       |       | तिथि वारभे त्याज्य   |      |         |
|------------------------|-------------------------|-----|-----------|--|---------|-----------------------|-------|-------|----------------------|------|---------|
| १                      | भाद्रं क. शु.           | .   | जन्मनि    | उषाद   | मास     | नक्षत्र               | लग्न  | तिथि  | वार                  | तिथि | नक्षत्र |
| २                      | भाद्रं क. शु. श्राव     | .   | चद्रमा    | शुक्रा.                                      | चैत्र   | रो. अ                 | कुंभ  | ००    | सू.                  | ५    | हं.     |
| ३                      | श्राव क. शु. फा. क.     | .   | ००        | उत्तरा३                                      | वैशा.   | चि. स्वा              | मीन   | ११।१३ | चं.                  | ६    | सू.     |
| ४                      | पौष क. शु. का. क.       | ८   | मंगल      | ००   | ज्येष्ठ | उषा. शु               | दृष   | १३।०० | मं.                  | ७    | अ.      |
| ५                      | पौष क. शु. मा. क.       | ०   | ००        | मघा  | श्रावा. | पू. फा. ध             | मिथु. | ५।००  | बु.                  | ८    | शु.     |
| ६                      | श्रावा. क. मा. शु.      | ८   | ००        | रोहि.  | श्राव.  | उषा. श्रा             | मेष   | ००    | दृ.                  | ९    | पुष्य   |
| ७                      | मार्ग क. शु. आ. शु.     | ०   | सूर्य     | हं. सू.                                      | भाद्र.  | श. रे.                | कर्क  | ५।००  | शु.                  | १०   | रो०     |
| ८                      | मार्ग क. शु. चै. क. शु. | १४  | श. व.     | हं. आ.                                       | श्रा.   | पू. भा.               | दृशि  | ००    | श.                   | ११   | रे.     |
| ९                      | चैत्र शु. क.            | १५  | शु. उ.    | कृति.  | का.     | क्र. म.               | तुल   | १।०५  | प्रवेश               | मं   | अ.      |
| १०                     | आश्विन क. शु.           | ०   | मं. शु.   | ००   | मार्ग   | चि. वि                | धन    | ७।११  | मात्रा               | श.   | रो.     |
| ११                     | आश्विन क. शु.           | ०   | रहस्य     | रोहि.  | पो.     | उद्देह                | क.    | ७।८   | दिवा.                | दृ.  | पू.     |
| १२                     | वैशा. क. शु.            | १०  | बुध       | स्नेहा                                       | मा.     | म. अ.                 | म.    | १।३   | यथा क्रमवर्ज<br>नीयः |      |         |
| १३                     | ज्येष्ठ श्रादी          | ०   | ००        | स्वा. चि.                                    | फा.     | म. सू.                | सिंह  | ३।८   |                      |      |         |
| १४                     | ज्येष्ठ कृष्णा का. शु.  | ५   | शनि       |  |         |                       |       |       |                      |      |         |
| १५                     |                         | ०   | रह        | तिथियो मास शून्याख्या शून्य लग्नानि यानि च ॥ |         |                       |       |       |                      |      |         |
| ३०                     |                         | ०   | केतु      | मध्य देशे विद्वर्जानि न दूषाणि तेषु च ॥ १ ॥  |         |                       |       |       |                      |      |         |

शि.  
४



सु. च. ५ दी.

| नाम      | फल           | ज्ञानेदादियोगाः |      |      |      |      |     |      | फल              |        |      |       |     |      |      |      |       |
|----------|--------------|-----------------|------|------|------|------|-----|------|-----------------|--------|------|-------|-----|------|------|------|-------|
| त्याज्य  | त्याज्य      | सू.             | चं.  | सं.  | ब.   | लृ.  | शु. | श.   | त्याज्य         | नाम    | सू.  | चं.   | सं. | बु.  | लृ.  | शु.  | श.    |
| आनंद     | धनलाभ        | अ.              | म.   | श्ल. | ह.   | ऽनु  | उषा | श.   | ऽऽदि४           | पस्त   | चि.  | ज्ये. | ऽभि | पू   | भ    | ऽऽ   | म.    |
| कालदेड   | सर्व         | भ               | ऽऽ   | म.   | चि   | ज्ये | ऽभि | पू   | ऽऽ दि४          | लुपक   | स्वा | सू    | अ   | उ    | क    | पु   | ह.    |
| धूम्र    | ऽऽदि१        | क               | पु   | पू   | स्वा | मू   | अ   | उ    | सर्व            | उत्पात | चि.  | पू    | ध.  | रे   | रो   | पु   | उ.    |
| ब्रजाय   | सुरवदा       | रो              | पु   | उ    | वि   | पू   | ध   | रे   | सर्व            | मृत्यु | ऽनु  | उ     | श   | अ    | म    | श्ले | ह.    |
| सोम      | सर्वक्रियासि | म               | श्ले | ह    | ऽनु  | उ    | श   | अ    | ऽऽदि२           | काण    | ज्ये | ऽभि   | पू  | भ    | आ    | म    | चि.   |
| ध्वाक्ष  | ऽऽदि५        | आ               | म    | चि   | ज्ये | ऽभि  | पू  | भ    | धनप्राप्ति      | सिद्धि | मू   | अ     | उ   | क    | पु   | पू   | स्वा. |
| ध्वज्य   | वस्त्रागम    | पु              | पू   | स्वा | मू   | अ    | उ   | क    | आरोग्य          | शुभ    | पू   | ध     | रे  | रो   | पु   | उ    | वि.   |
| श्रीवत्स | रत्नसंचय     | पु              | उ    | चि   | पू   | ध    | रे  | रो   | भोगमैश्वर्यसात् | ऽमृत   | उ    | श     | अ   | म    | श्ले | ह    | ऽनु.  |
| वज्र     | ऽऽदि५        | श्ले            | ह    | ऽनु  | उ    | श    | अ   | म    | ऽऽदि२           | मृशाल  | ऽभि  | पू    | भ   | आ    | म    | चि   | ज्ये. |
| मुद्गर   | ऽऽदि५        | म               | चि   | ज्ये | हभि  | पू   | भ   | आ    | ऽऽदि२           | गद     | अ    | उ     | क   | पु   | उ    | स्वा | सू.   |
| कत्रं    | राजाभिषेक    | पू              | स्वा | मू   | अ    | उ    | क   | पु   | धनसंचय          | मातंग  | ध    | रे    | रो  | पु   | उ    | चि   | पू.   |
| मित्रं   | मित्रसमागम   | उ               | वि   | पू   | ध    | रे   | रो  | पु   | सर्वऽऽदि        | राहास  | श    | अ     | म   | श्ले | ह    | ऽनु  | उ.    |
| मानसं    | स्त्रीलाभ    | ह               | ऽनु  | उ    | श    | अ    | म   | श्ले | स्थैर्यचित्य    | चर     | पू   | भ     | आ   | म    | चि   | ज्ये | ऽभि.  |
|          |              |                 |      |      |      |      |     |      |                 | स्थिर  | उ    | क     | पु  | पू   | स्वा | मू   | अ.    |
|          |              |                 |      |      |      |      |     |      | धनदा            | प्रवरई | रे   | रो    | पु  | उ    | वि   | पू   | ध     |

शि ५



मु. च.  
ह.

अथ नक्षत्र वारेण्य योगाः

|         | सू.   | चं.  | मं.                                   | बु.                                   | ह.                                       | शु.                               | श.                                       |
|---------|---|--|---------------------------------------|---------------------------------------|--|-----------------------------------|--|
| विरुद्ध | भ. वि.<br>मू. सु.<br>ज्ये.                            | कृ. पा.<br>उ. पा.<br>चि. त्रा.<br>स्वा वि. | उ. पा.<br>ःः पा.<br>ध. पा.<br>पू. भा. | ध. भ.<br>मू. रे.<br>ःः वि.<br>पू. भा. | कृ. रो.<br>म. शो.<br>ःः द्रो.<br>पू. भा. | ज्ये.<br>पुष्य.<br>मल.            | पू. पा.<br>उ. पा.<br>चि. ह.<br>र. उ. भा. |
| सुसिद्ध | ह. अ.<br>मू. उ. भा.<br>ध. पुष्य.<br>उ. पा.<br>कृ. पा. | अ.<br>पुष्य.<br>ःः सु.<br>गो.<br>ह.        | ज्ये.<br>अ.<br>मू.<br>म.              | पुष्य.<br>ःः सु.<br>कृ. रो.<br>म.     | पुष्य.<br>ःः सु.<br>अ. उ.<br>ह.          | पू. पा.<br>अ. वि.<br>र. अ.<br>पू. | स्वा.<br>अ.<br>पू. पा.<br>म. र. ध.       |
| यमघट    | म.  | चि.  | ःः द्रो.                              | बु.                                   | कृ.                                      | स.                                | य.                                       |
| उत्पात  | वि.   | पू. पा.                                    | ध.                                    | र.                                    | गो.                                      | उ.                                | उ. पा.                                   |
| मस्यु   | ःः सु.  | उ. पा.                                     | पा.                                   | अ.                                    | म.                                       | ज्ये.                             | ह.                                       |
| कारा    | ज्ये.   | मि.  | पू. भा.                               | म.                                    | ःः द्रो.                                 | म.                                | चि.                                      |
| सिद्ध   | मू.   | अ.   | उ. भा.                                | कृ.                                   | पू.                                      | पू. पा.                           | स्वा.                                    |

कुयोगा स्तिथि वारेण्य तिथि भात्या भवा रजाः  
 हुगा वंगध्य प्रोष्ये वं वजी स्त्रिय जा स्तथा ९

सर्वम १२५ श्रांश्रांश्रां

सर्वम १२५ श्रांश्रांश्रां

अथादि अयगदि कुलि काहीनां

| सू. | चं. | मं. | बु. | ह. | शु. | श. | वार          |
|-----|-----|-----|-----|----|-----|----|--------------|
| ४   | ७   | २   | ५   | ८  | ३   | ६  | अर्द्ध याम   |
| १४  | १२  | १०  | ८   | ६  | ४   | २  | कुलिक        |
| ६   | ४   | २   | १४  | १२ | १०  | ८  | कैटक         |
| ८   | ६   | ४   | २   | १४ | १२  | १० | कालवला       |
| १०  | ८   | ६   | ४   | २  | ४   | १२ | यम घटक       |
| १४  | १२  | १०  | ८   | ६  | ४   | १२ | दुष्ट क्षाण  |
| ७   |     |     | १   |    |     |    | संवर्तः योगः |

रात्रौ कुलि कादि योगः

| सू. | चं. | मं. | बु. | ह. | शु. | श. | वार         |
|-----|-----|-----|-----|----|-----|----|-------------|
| १३  | १३  | ८   | ७   | ५  | ३   | १  | कुलिक       |
| ५   | ३   | १   | १३  | ११ | ९   | ७  | कैटक        |
| ७   | ५   | ३   | १   | १३ | ११  | ९  | कालवला      |
| ९   | ७   | ५   | ३   | १  | १३  | ११ | यम घट       |
| ०   | ०   | ७   | ०   | ०  | ०   | ०  | दुष्ट क्षाण |

वृ. श्रांश्रां

|          |              |       |       |
|----------|--------------|-------|-------|
| गहलस     | सकादिनम      | सकल   | मास ई |
| हलादय    | पश्चादिनः    | अर्क  | मास ह |
| मध्याकाल | प्रतिपद्यादि | पाद   | मास   |
| राध गह   | पश्चादिनः    | नत्या | जम    |

शि.  
ह.



मु. च. ७

अयोगे मुयोगेपि वेत्या तदानीं मयोगं निहत्येपसिद्धिं तनोति परलग्नमुज्जाकुयोगादिना प्रा. दिना  
 ईतरं विष्टि पूर्वच सस्तम् - मृत्यु ककच दग्धादीनि दो शस्तं शुभो जगुः के चिद्या मोत्तरं चान्ये थाया  
 नायामेव निदितान् राजमार्तडिककचा मृत्युयोगाख्यादिनदग्धं तथैव च चंद्रे शुभे स्यं याति वृक्ष  
 कावज्रहताद्रव- वारक्षतिथि योगेषु यात्रा यामेव वर्जितं विवाहादीनि कुर्वीत गार्गादीनामिदं व  
 च ॥ अयोगेषु च वर्षेषु वर्जिते घटिकाद्वयं उत्पात मृत्युकाणानां पंचषट्सप्तनाडिका जन्म मासे जन्म  
 भेचन जन्मदिवसे पिवा ज्येष्ठमासे न ज्येष्ठस्य विवाहं कार्ये क्वचित् आरभ्य जन्मदिवसाद्या विविंशदिनं भव

| कयोगे चाख्यादि वर्जितं      |         |      |       |      |      |      |       |         |       | अथ मन्वादि तिथि |       |       |    |    |    |      | अथ वारदेवता |       |        |         | र      |
|-----------------------------|---------|------|-------|------|------|------|-------|---------|-------|-----------------|-------|-------|----|----|----|------|-------------|-------|--------|---------|--------|
| क.                          | ख.      | ग.   | घ.    | ङ.   | च.   | ज.   | झ.    | ञ.      | ट.    | ड.              | ण.    | त.    | थ. | द. | ध. | न.   | प.          | सूर्य | स्वामी | शिव     |        |
| ३।५                         | १५।१२   | १०।५ | २५    | १५   | २    | १५   | २     | १५      | २     | ३।५             | १५।१२ | १०।५  | २५ | १५ | २  | १५   | २           | वार   | चंद्र  | स्वामी  | दुर्गा |
| १९                          | ३       | २।३० | ६     | १९   | ३    | २।३० | ६     | १९      | ३     | १९              | ३     | २।३०  | ६  | १९ | ३  | २।३० | ६           | वार   | मंगल   | स्वामी  | स्कंध  |
| १९                          | ३       | २।३० | ६     | १९   | ३    | २।३० | ६     | १९      | ३     | १९              | ३     | २।३०  | ६  | १९ | ३  | २।३० | ६           | वार   | बुध    | स्वामी  | विष्णु |
| अथ दिन निशितिथ्यं प्रादेवता |         |      |       |      |      |      |       |         |       |                 |       |       |    |    |    |      | वार         | बृह.  | स्वामी | ब्रह्मा |        |
| सुहृत्                      | १       | २    | ३     | ४    | ५    | ६    | ७     | ८       | ९     | १०              | ११    | १२    |    |    |    |      | वार         | शुक्र | स्वामी | काल     |        |
| दिन                         | प्राव   | सर्प | मित्र | पित  | वसु  | अंभ  | विस्व | ब्रह्मा | विधि  | चंद्र           | शक्र  | मित्र |    |    |    |      | वार         | शनि   | स्वामी | स्वामी  |        |
| रात्रि                      | प्रांभु | अंज  | हिब   | पूषा | दस्र | यम   | मि    | ब्रह्मा | चंद्र | अरि             | गुरु  |       |    |    |    |      | वार         | ००    | ००     | स्वामी  |        |
| सूर्यभात ४।११।१६।१०।१३।२०   |         |      |       |      |      |      |       |         |       |                 |       |       |    |    |    |      |             |       |        |         |        |
| चंद्रक्षरविभागः             |         |      |       |      |      |      |       |         |       |                 |       |       |    |    |    |      |             |       |        |         |        |

मासे सविज्ञेयो वर्जितः सर्वकर्मसुः तैलाभ्यंगोने दोषस्यात्मत्यहं क्रियते चयः उत्सवे वा



सुच  
रक्ष

१५५५

|       |         |       |          |         |      |        |      |      |      |        |        |             |
|-------|---------|-------|----------|---------|------|--------|------|------|------|--------|--------|-------------|
| वव    | वालव    | कोलव  | तैतल     | गर      | वणिक | दृष्टि | शकुन | चतु  | नाग  | किंस्त | करणानि | तैलाभग      |
| इंद्र | ब्रह्मा | मित्र | ज्येष्ठा | प्रथ्वी | रसा  | वन     | कल्प | लक्ष | वायु | मरुत   | देवता  | दोषायांवादः |

इनतिथींमें यह वस्तु नखाय

|   |   |   |   |   |   |   |   |   |    |    |    |    |    |    |    |     |                                |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|-----|--------------------------------|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | ति. | तैलाभंगोंनि दोष स्यात्सत्यह    |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७  | क्रियते चयः उत्सवे वात रोगे वा |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७  | पत्र वाचनिकोपि वा              |

तैलाभंगों मनुष्याणां कुरुते नात्र संशयः रवौ भौमे व्यतीपाते संक्रं तौ वैधता वपि षष्ठ्याष्टम्योश्च वि  
 द्यांच तैलाभंगो न पर्वसु-अथाहर्दययोगः माघे मासे रवौ दर्श ३०-व्यतीपाते श्रवान्विते अर्द्ध  
 दयाभिधा योगा सूर्य पर्व प्राताधिका कपिला षष्टि योग आश्विने कृत्त पक्षे च षष्ठ्या भौमे अथ र  
 ह्मिणी ॥ व्यतीपाते तदा षष्ठी कपिलानंत पुण्यदा ॥ चंद्रस्यैव बलं शुक्लं नतु तारा प्रधानता सति कांते  
 चले पते स्वतंत्र न च योषतः कृत्त पक्षांतु ताराया बल ग्राह्य सदायतः क्षीण वा योषिते कांते गा  
 हं स्थंगे हनी चरेत् वैधतौ व्यतीपाता रवौ विष्टा वा भौम वासरे तथैव दुष्ट तारा शुभ मध्याना त्यरते  
 शुभः लुप्त वत्सर दापतु देव नद्या तदा वर्धा नर्मदा यास्तदा दाहु वशिष्ठा त्रिपरा शराः लल्ल नर्मदा  
 पूर्व भाग च शोण स्योत्तर दक्षिणे गंडिका पश्चिमे कूले मकर स्थे न दोष भाक् मागधे गौड देशे च ॥  
 सिंधु देशे च कौ कणे व्रत चूडा विवाहं च वर्जयेन्मकरे गुरौ ॥ मघाया पंच पादेषु गुरु सर्वत्र निंद  
 तः गंगा गोदा नरं हित्वा शेषांघ्रि न दोष भाक् ॥

शि.  
८



मुन  
हो  
ह

सिंहे गुरु या सिंह राशि के नवांश में हो वह सति तो विवाह नेष्ट और नेष पै सूर्य होय तो श्रेष्ठ है वापी  
वाग तलाव कुवा मकान प्रतिष्ठा जनेऊ उत्सर्ग वधू प्रवेश महा दान यज्ञ गोदान नवान्न व्योउषा  
कर्म काम्य वर्षोत्सगी दुकान बालक कामेय प्रथम करना देवता स्था. दीक्षा मोजी विवाह हुंड  
न सन्वास अग्नि होत्र राजा मे प्रथम मिलना राज गद्दी चातुर्मास मोजी संस्कार कर्ण देधन परीक्षा  
अर्थात् इमूतहान् एने काम वह सति शुक्र के बाल वृद्ध अस्त में और न्यून अधिक मास में न  
करे और सिंह मकर का गुरु वा वक्री अति चारी मास पौष चैत्र १३ दिन का पक्ष विलुपनाब्द ये भी  
शुभ कर्मों में वर्जित हैं वष मेघ मीन कुंभ दून में और राशि पै गुरु अति चार हो और पीछे वक्री हो  
कः पहिली राशि पै न आवें तो विलुप ताब्द होता है शुभ काम में वर्जित है मिश्र मान में १५ जोड़े तीवार सुनू हो  
अथ तिथि क्षय वृद्धि दोष भाह

तिथीनां त्रितयं वार एक स्पष्ट प्रातिपद्वै अथ मंत द्विनं होय शुभ कर्म सु संत्यजेत् वाराणां त्रितयं यत्र  
तिथि रेका स्पष्ट प्रोद्यदा त्रिद्यु स्पष्ट कचेति साख्या तान ग्राह्या मंगलादिषु जन्मे प्रास्तं मनो भंगं सक्तं कं  
मातु शर्तवं शंगोत्पाताद्य रिष्टानि शुभेतानि ह संत्यजेत् सर्व कार्य लग्न बलम् सर्वेषु शुभ कार्येषु  
नेष्टाः खेदा व्यपाष्टगाः लग्ने पापारिषो सौम्याः पापा केन्द्र त्रिकोणा गा सौम्याः केन्द्र त्रिकोणा स्थाः  
पापास्तु त्रिषडाष्टगाः ते सर्वे लाभगाः खेदाः श्रेष्ठास्तुः शुभ कर्मणि ॥







सूचिका  
२१

शुक्ले कथो पूर्वभागे

अथ भद्रा चक्र में जो बड़ी है इनकी बाद मुख पुरु है

| शुक्ले कथो परभागे |          |           |       | अंग       |          |           |           | घड़ी पलानि चंद्रो परिग्र वास |    |          |  |        |         |        |            |
|-------------------|----------|-----------|-------|-----------|----------|-----------|-----------|------------------------------|----|----------|--|--------|---------|--------|------------|
| तिथि              | मुख प्र. | पुरु प्र. | वास   | ति.       | मुख प्र. | पुरु प्र. | वास       | मुख                          | ५  | मृत्युका | कै.  | सिं.   | कुं.    | मी.    | मृत्युली   |
| १                 | प्र. ३   | प्र. २    | रक्षि | ३         | प्र. ८   | प्र. ०७   | रक्षि     | कंठ                          | ०९ | कार्य    | कै. ४  | सिं. ५ | कुं. ११ | मी. १२ | क. शुभ     |
| २                 | घ. १५    | घ. १२     | रा    | ४         | घ. १५    | घ. ०८     | रा        |                              |    | नाश      | मे. १  | वृ. २  | मि. ३   | वृ. ४  | स्वर्ग शुभ |
| ३                 | प्र. २   | प्र. १    | मृग   | ४         | प्र. ५   | प्र. ०८   | मृग       | हृदय                         | ११ | इच्छा    | कै. ६  | तु. ७  | ध. ८    | म. ९   | पाताल      |
| ४                 | घ. ७॥    | घ. ४॥     | शुक्र | ५         | घ. ३०    | घ. १७     | शुक्र     | नाभि                         | ४  | बुद्धि   | कै. ७  | तु. ८  | ध. ९    | म. १०  | धनकारी     |
| ५                 | प्र. १   | प्र. ४    | रक्षि | १०        | प्र. ६   | प्र. १५   | रक्षि     | घटि                          | ६  | कलेसदा   | तिथ्य पारुई जादिवा<br>निथ्य पूवार्द्ध जा<br>रात्रो   |        |         |        | कुं. ११    |
| ६                 | घ. २०    | घ. २०     | रक्षि | १०        | घ. ४०    | घ. ३०॥    | रक्षि     | पुरु                         | ३  | जयदाता   |  |        |         |        |            |
| ७                 | प्र. ४   | प्र. ३    | शुक्र | ११        | प्र. ७   | प्र. १६   | शुक्र     | कश्यप                        | १० | पेक्षि   | दिवाच सर्पणी भद्रा तिसासदा चषाश्च की वृष्टि<br>की त्यजते पुरुं सर्पणी वदन त्यजेत् ॥ १॥ आदौ अष्ट<br>घड़ी स्वर्गे ततो षोडश भूतले ॥ ततो दृष्ट दुपाता<br>ले भद्रा त्रिपात घड़ी क्रमात् ॥ |        |         |        | शि. ११     |
| ८                 | घ. २५    | घ. १८॥    | शुक्र | ११        | घ. ४७॥   | घ. ४२     | शुक्र     |                              |    |          |  |        |         |        |            |
| ९                 | ५५ दिव्य | ५५ त. ३   | सन्धु | ५५ दि. य. | ५५ त. ३  | सन्धु     | ५५ दि. य. |                              |    |          |  |        |         |        |            |
|                   | शुभ.     | शुभ.      | नेष्ट | शुभ.      | नेष्ट    | नेष्ट     | नेष्ट     |                              |    |          |  |        |         |        |            |



अथ नक्षत्र व्याख्या

नाम महश कृत्यं

| नक्षत्र  | अ.         | भ.      | कु.        | मो.   | म.      | आ.       | पु.       | उ.     | श्ले.   | म.    | पु.   | उ.         | ह.  | वि. | अधोमुख                                       | तिर्यक                     | उर्ध्वमुख    |
|----------|------------|---------|------------|-------|---------|----------|-----------|--------|---------|-------|-------|------------|-----|-----|--|----------------------------|--------------|
| सायी     | अश्विनीकुं | यम      | अश्विनी    | मूल   | चंद्रमा | रव       | आदेत      | हस्तम  | मघ      | पित्र | भारग  | अश्विन     | मृग | रवि | मृ.श्ले.म.                                   | पु.ऽनु.ज्ये.               | उ.३रो.पुष्य. |
|          |            |         |            |       |         |          |           |        |         |       |       |            |     |     | पूर्वा३क                                     | ह.चि.स्वा.                 | ११वा.अ.ध.    |
|          |            |         |            |       |         |          |           |        |         |       |       |            |     |     | चि.भ.  | मृ.रे.अ.                   | ३            |
| नक्ष     | स्वा.      | वि.     | कु.        | ज्ये. | मृ.     | पु.      | उ.        | ऽमि.   | अ.      | प.    | म.    | पु.        | उ.  | रे. | स्त्रीनक्षत्र आदी पु.पु.श्ले.म.पु.हउ.वि.स्वा |                            |              |
| सायी     | वाम        | अश्विनी | मित्र      | हस्त  | मूल     | क्षीरा   | विश्वदेवा | विधातो | विश्व   | मृग   | पित्र | अश्विन     | मृग | रवि | नक्षत्रक                                     | वि.कु.ज्ये.क.रो.म.         |              |
|          |            |         |            |       |         |          |           |        |         |       |       |            |     |     | पुलकन.                                       | मृ.ह.उ.अ.ध.रा.पु.उ.रे.अ.भ. |              |
|          |            |         |            |       |         |          |           |        |         |       |       |            |     |     | तापस   | म.कु.रो.म.                 |              |
|          |            |         |            |       |         |          |           |        |         |       |       |            |     |     | देवता  | रा.दे.राक्षसःशे.शुभम       |              |
|          |            |         |            |       |         |          |           |        |         |       |       |            |     |     | मृग  | रा.म.देवमनययोः शुभम        |              |
|          |            |         |            |       |         |          |           |        |         |       |       |            |     |     | देवता  | रा.दे.राक्षसःशे.शुभम       |              |
| अथ स्थिर |            |         | वार चल     |       |         | उपक्रम   |           |        | मिथसाधन |       |       | क्षिप्रलघु |     |     | मृदुमैत्र                                    | तिक्ष्णधामा                | नामा         |
| उत्तरा ३ |            |         | अवगा.ध.    |       |         | पूर्वा ३ |           |        | विशाखा  |       |       | ह.अ.पु.    |     |     | मृ.रे.चि.                                    | मूल.श्ले                   | व.           |
| रोहिणी   |            |         | श.स्वा.पु. |       |         | भरणी.म.  |           |        | कृतिका  |       |       | पु.ऽमि.    |     |     | अनुगधा                                       | ज्ये.हा.आ.                 | क्ष.         |
| सूर्यवार |            |         | चंद्रवार   |       |         | मंगल वार |           |        | बुधवार  |       |       | गुरु वार   |     |     | शुक्रवार                                     | शनि                        | नवार         |



| सं. | नाम मु.                     | नाम नक्षत्र                                    | ति.                   | वार            | ल.            | साक्षी मुहुर्त गणपति   |
|-----|-----------------------------|--|-----------------------|----------------|---------------|--|
| १   | नवानव<br>स्व धारण           | अ.पू.रे.रो.ह.वि.<br>स्वा.वि.उ.३ पु.उ.          | शु. ३३<br>५४५<br>१४३१ | बु. ३<br>शु.   | शु. २८<br>१२५ | वास्तववायुकर पंचक व सवेज्यादिते प्रवाल रत्न राव सु<br>वर्णवस्त्र धार्य विरेक शनि चंद्र कुजे हिरेक विवाह शुभे   |
| २   | स्त्रीणां वि<br>शेष मुहूर्त | अ.ध.रे.ह. वि<br>स्वा.वि.५ उ.                   | शु.                   | शु. ३३<br>१४३१ | शु.           | भौमे प्रजादिति युगे शुभ गान दद्यात् विप्राज्ञया शुभम्<br>राजस्मिन्वत शुभम्   |
| ३   | सीसा                        | रे.उ.३ ब्रतोक्त<br>नक्षत्र                     | शु.                   | शु.            | शु.           | गोहिरयोत्पन्न रामो जीवधनोदिति भादिषु मंत्र दीक्षा शुभे<br>चाहि गृहस्थाया गमोदिना ॥   |
| ४   | मंत्र यंत्र व<br>तोपखना     | उ.ह.अ.अ.<br>वि.म.                              | शु.                   | शु.            | शु.           | उफाहस्ताश्विनी कर्ण विशाखा मृगशिरा निशुभे सूर्ये युते<br>सस्तं मंत्र यंत्र व्रतादिकं ॥   |
| ५   | वीरसाध<br>न                 | म.५५ श्रीभ.<br>शु.म.                           | शु.                   | शु.            | शु.           | मृगशीर्षा भरणी मूले मृगेश्वर सवधे घटे शुद्धे शुभे मृगोत्तरे<br>वीरिताल साधनम् ॥  |
| ६   | श्रीपथी<br>कर               | ह.३ अ.मू.पु.अ.<br>३ म.रे.२ पु.वि.<br>क.मू.ध.अ. | शु.                   | शु. ३३<br>१४३१ | मि. ३२<br>३४० | हस्तत्रये नृगाधाय मूले पुष्ये श्रवत्रये मृगशिरा युग्मे<br>पुनर्वसो विजन्म भेजे दुष्टं कुंज्य सूर्यानां वासरे पतिथा<br>वपिदिस्त्रभावे शुभे लगे शुद्धे मति व्ययं ॥ |
| ७   | रसोपाद<br>न                 | ह.म.ज्ये.५५ दी.                                | शु.                   | शु.            | शु.           | विशाखा कालिका मूले धनिष्ठा श्रिकरे मृगशिरा युग्मे<br>भाद्रमे सौम्ये वासरे श्रु सक्रिया ॥   |
| ८   | रस सेवनं                    | ह.चि.स्वा.अ.पु.भ.<br>र.अ.ध.श.पु.म.             | शु.                   | शु. ३३<br>१४३१ | शु.           | हस्तत्रये श्रिनी पुष्ये नृगाधाय श्रवत्रये पुनर्भे मृग<br>शिर्षके भौमे ज्येष्ठ सभक्षणम् ॥   |

शि.  
१३



सूर्य मंत्र  
मुच  
१४

| संख्या | नामसूत्र        | नाम नक्षत्र                                   | तिथि       | वार                | लग्न  | साक्षात्सुदूतं गणपति  |
|--------|-----------------|---|------------|--------------------|-------|---|
| १      | कंसुभा<br>दिजब  | प.पु.ह.चि.स्वा.<br>वि.ऽनु.अ.ध.अ.              | शुभ<br>शुभ | र.शु.<br>ह.        | शुभ   | पुनर्वसुदूतं हस्तासंच केअवण दयेअश्विभरके कर्वाज्या<br>रेवासं सारंजातं शुभम् ॥   |
| २      | सुची<br>कर्म    | म.चि.ऽनु.अ.<br>पुरो.ह.जे.                     | शुभ        | बु.चं.<br>बु.शु.र. | शुभ   | मृगचित्राऽनुगधाश्विपुष्यंवागेह गी कग ज्येष्ठा मृग<br>शरासार्कः सूची कर्मणि सम्मतः ॥   |
| ३      | बतु<br>धारण     | रो.ह.चि.स्वा.वि.<br>ऽनु.अ.बु.शु.उ.पु.         | शुभ        | ह.चं.<br>ह.शु.     | शुभ   | पौषशु वाश्विकर पंचक वासवेज्यादित्ये प्रवालरदशं<br>रवसुवर्गा वस्त्रधार्यादिरिक्तशनिचंद्र कुजेहिरक्तं विवाहे शुभम् ॥  |
| ४      | स्त्रीनि<br>वेध | रो.ऽनु.उ.३<br>प.पु.                           | रिक्त      | मं                 | मूर   | रोहिण्याश्वि तरे पुष्य पुनर्वसु कदाचन न दद्यात्<br>शुभगां भूषावस्त्राण्यने कुजेपि न ॥   |
| ५      | रंगीन<br>वस्त्र | प.घ.अ.ह.चि.<br>स्वा.वि.पू.३३.३४.३५            | शुभ        | ह.बु.              | स्थिर | पुनर्वसु धनिष्ठाश्वि भेहस्ताचतषपेपातं पूर्वोत्तरे शयाधार्यो<br>नीलतासिता वर शुक्लै स्त्रोतसे धार्य रवौ शुक्रं गुरो बुधं विशुके<br>कपूर पीतं भोमै रक्तं अवरं २ |
| ६      | पट्टसूत्र       | अ.श.रो.ह.चि.स्वा.<br>वि.ऽनु.अ.उ.३५.<br>उ.ध.र. | शुभ        | र.चं.<br>ह.        | स्थिर | जौवर्केऽनुबुधेबुधेवस्त्रास्तज्जेअवान्विते<br>सिधरेमेसेज्ञे हेर्युक्ते दूकुलस्य धारणां ॥   |
| ७      | कौशेय<br>वस्त्र | अ.अ.रे.हे.रो.ध.<br>श.पू.३३.३५.<br>स्वा.उ.मं.  | शुभ        | ह.चं.<br>चं.       | शुभ   | आश्विनी रवेतीहस्त रोहिण्यांश्वरात्रय पूर्वोत्तरे पुनर्वसु<br>स्वानौ पुष्य मघाभिधे रवौ च दृगधार्य कौशेय वसन जने १  |

शि.  
२४



शुक्र  
१५

| संज्ञा | नाममुहूर्त             | नामनक्षत्र  | ति.    | वार                    | लग्न | साक्षी मुहूर्त गणपति   |
|--------|------------------------|---|--------|------------------------|------|--|
| ८      | सतूल<br>वस्त्र         | पु. उ. ३५ नु. रे. ध.<br>अ. ह. वि. स्वा. रो.               | शुभ    | बु. शु.<br>चं.         | शुभ  | पुष्योतरानुराधासिधनिष्ठाश्विकरत्रये रोहिण्यो<br>गुरुशुक्राङ्गो देहे दुर्गा धृति शुभा ॥               |
| ८      | गोटेस<br>हितव<br>स्त्र | रो. ह. चि. स्वा. रो. वि.<br>ऽव. अ. ३५ पु. धे. रे.         | शुभ    | रं. शु.<br>चं          | शुभ  | सुवर्णतंतु संमिश्रवासाधार्यखौकुजे राजतंत<br>द्विष्टुक्रेश्व वस्त्रचधारण शुभ                          |
| १०     | वस्त्रनि<br>र्माण      | रो. रे. चि. ५ नु. मृ. उ.<br>३                             | शुभ    | शुभ                    | शुभ  | रोहिणी रेवती चित्रा अनुराधा मृगशिरा शनि<br>हिल्ला कुयोगानां तंत भियदसाधनम् ॥                         |
| ११     | वस्त्रला<br>त्न        | प. पु. ५ अ. ध. चि.<br>स्वा. चि. ५ नु. हे.                 | रिक्ता | बु. शु.<br>चं. मं.     | शुभ  | पुनर्वसहयो श्वित्वां धनिष्ठा हस्त पंचके हिल्ला<br>कोकिवुधान् रिक्ता पटी आहो दिन तथा                  |
| १२     | उपानपर<br>धारन         | चिं ५३ ५ नु. ५५ द्रा.<br>जेष्णे. सं. मृ. वि. कु. मू.      | शुभ    | बु. सु.<br>श           | शुभ  | चित्रा पूर्वानुराधा ज्येष्ठा श्लेषा मृगशिरा विष्ण<br>खाकृतिका मूले खेत्याष्टार्क सूर्यजे उपानपरिधानं |
| १३     | वरखाल<br>वाधन          | उ. ३० रो. पुष्य. ५५ द्रा.<br>अ. ध. प्र.                   | शुभ    | बु. शु. चं.<br>रे. बु. | शुभ  | कुर्याद्वस्त्रोदिते धिमे बुला कामुपधानकमू चित्ता<br>नांघं च वध्नीया दई मूई मखोदय ॥                   |
| १४     | तंवूतान<br>ना          | अ. ध. श. अ. पु. व्य.<br>तु. रो. मृ. स्वा. पुरे. ह.<br>चि. | शुभ    | शुभ                    | शुभ  | श्रवणत्रये श्विनी पुष्ये नुराधारोहिणी मृगहस्त<br>त्रेये पन भैसे अंतर पट्टवेश्मनी ॥                   |

शुक्र  
१५

शि.  
१५



| सं. | नाममुहूर्त             | नामनक्षत्र   | ति.                     | वार               | लघ्न | साक्षा मुहूर्त गणपति  |
|-----|------------------------|--|-------------------------|-------------------|------|---|
| १५  | सुगंध<br>लगाना         | अ. ध. श. अ.<br>पु. अनु. रो. स्वा<br>पु. रे. म. श. ह. | शु.                     | शु.               | शु.  | अवगात्रयेचिनीपुष्पे पूर्वाषाढानुगधयोः हस्तत्रयेपुनर्भेत्ये<br>मगभंच शुभं हनिचंदनागरुकसूरीपुष्पाणांधारणं शुभम् १       |
| १६  | ढोडीका<br>मुहूर्त      | अ. ध. श. ह.<br>चि. स्वा. ने. अ.<br>ज. म. पु. च.      | शु.                     | वृ. शु.<br>बु. च. | शु.  | अवगात्रतीयेहस्तेत्रितयेरेवती ह्येजेराधांरमशीर्वेच पुन<br>र्भेतसदयेभवेत्क्षरकमंबुधेप्रोक्तव्यताभौमशनिरविं १            |
| १७  | होस्त्या<br>ज्यतिथयः   | अ. नु. पू. फा.<br>क. रो. म.                          | रा. १<br>ह. १५<br>३. १५ | मं.<br>श.<br>र.   | शु.  | अनुराधापुकांचैवळतिका रोहिणी मघाज्यहमीप्रतिपत्तही<br>रिक्तापर्वोणिसंत्यज्येत् चतुर्दशीत्वमावज्येहोरेलज्यचसर्वथा        |
| १८  | रत्नपरी<br>क्षात्याज्य | पु. श. ह.<br>ज्ये. अ.                                | २<br>१५                 | मं.<br>श.         | शु.  | पुनर्भेशतहस्तर्धेअवज्येष्टेपरीक्षाणंस्नानांमहमेभूनां हि<br>त्वाभौमशनैश्चरः  |
| १९  | पालकी<br>कामुहूर्त     | उ. रे. ज. ह.<br>चि. स्वा. अ. ३<br>पु. पु. ज. म.      | शु.                     | शु.               | शु.  | उत्तरारेवतीसुमेत्रिभेहस्तात्रिभेश्रवात् पुनर्वसो तथा पुष्पे<br>अनुराधा द्वितीये मगे रोहणं शिवकायास्तुमल्लग्नेघटनं तथा |
| २०  | विद्यारंभा             | म. ५ ह. ह. ३<br>अ. अ. ३ ह. ३                         | शु.                     | शु.               | शु.  | मगारिपंचकेमूलहस्तादित्रितयेचिभेश्रवात्रयपूर्वासुवि<br>द्यारंभःप्रशस्त्यति ॥   |
| २१  | गणिता<br>रंभः          | श. पू. अ. नु.<br>मारे. ह. पुष्प                      | शु.                     | वृ.<br>बु.        | शु.  | शतह्येनुराधोरेरोहिणीरेवतीकरेपुपेजोविबुधेकुथीत्यारंभांग<br>णितादि ॥  |

शि.  
१६



मु. च. हा.

मु. च. हा.  
२७

| सं. | नाम मुद्रा                      | नाम नक्षत्र  | ति. | वार               | म.         | साक्षां मद्रुर्त गणपति   |
|-----|---------------------------------|--|-----|-------------------|------------|--|
| २२  | न्याय                           | उ. ३ रो. पु. पु. अ. ज्ञ.<br>श. स्वा. ह.                      | शु. | शु.<br>वृ.<br>उ.  | शु.        | शु. तरे रोहिणी पुष्य पुनर्भे श्रवणे करे अश्विन्यां प्रा<br>तमे स्वातो न्याय शास्त्रादिकं पठेत ।                                      |
| २३  | व्याकरणा                        | रो. पु. मृ. पु. ह. अ.<br>ध. ५                                | शु. | बु.<br>हृ.<br>शु. | शु.        | रोहिण्यां पंचके हस्ते पुनर्भे मृग भे श्विनी पुष्ये शुक्ले<br>ज्येष्ठि द्वारे प्राब्द प्रास्त्रापठेत्सुधी                             |
| २४  | धर्म शास्त्र                    | ह. चि. स्वा. वि. ५ नु.<br>पु. रे. ज्ञ. मृ. अ. ध. प्रा.       | शु. | पु.<br>शु.<br>वृ. | शु.        | हस्तादि पंचके पुष्ये रेवती द्वितीये मृगे श्रवणा त्रये<br>शुभारे भ धर्म शास्त्र पुराणा योः  |
| २५  | वैद्य गारुडी<br>ज्येष्ठा हीनेगा | ह. ३ नु. पु. २ अ. ३.<br>ज्ये. २ रे. २ मृ. २ पुष्य २          | शु. | मं<br>चं<br>र.    | शु.        | हस्त त्रये नृगधायां पुनर्भे श्रवणा त्रये मूले चात्ये श्वि<br>नी पुष्य ज्येष्ठा श्लेषा द्वे भ मृगे वैद्य विद्या कुजे ज्येष्ठां ज      |
| २६  | जैन                             | अ. ३ म. पू. ३ रे.<br>पु. स्वा. ५ नु.                         | शु. | शु.<br>क.         | शु.        | पुष्य हीने च गारुडी ॥ श्रवणा त्रये मघा पूर्वा नृगधा<br>रेवती त्रये ॥ पुनर्भे स्वाति भे सूर्ये शुके जे नाग भे पठेत                    |
| २७  | फारसी                           | ज्ये. श्ले. म. पू. ३ रे. भ.<br>क. वि. ५ ५ द्वा. उ. धा. प्रा. | शु. | श.<br>म.<br>र.    | स्थि<br>र. | ज्येष्ठा श्लेषा मघा पूर्वा रेवती भरणी हये विष्णु राचो न<br>रा वाढा शत भे याप वासरे लग्ने स्थिरे मचंद्रे च फारसी                      |
| २८  | लिखना                           | रे. ज्ञ. अ. ५ नु. ज्ञा. ३<br>ह. ३                            | शु. | शु.               | शु.        | शु. भे तिथौ शु. भे वारे रेवती युगले तथा श्रवणा रा<br>नृगधायां तिथे वार्द्रा दिषु त्रिषु हस्तादि त्रितये कुर्या<br>लिखनारं भनं बुधी ॥ |

मु. च. हा.

शि.  
२७



| सं. | सुहर्तना         | नामनक्षत्र                               | ति.                 | वार   | लग्न | साक्षी सुहर्त गणापति  |
|-----|------------------|--|---------------------|-------|------|---|
| २६  | पालाण<br>धारण    | अ.श.ह.पु.सु.<br>स.श.पु.                  | शु.                 | शुभ   | शुभ  | अयतो शतभेदस्त पुष्ये भूले मृगे च भे पुनर्वश्वोग<br>जाश्वी वृषल्याणां रागा शुभं ॥  |
| ३०  | शस्त्रधा<br>रण   | प.पु.वि.ने.स.<br>विःनु.जे.उ.३.र.ज.       | शु.                 | शुभ   | शुभ  | पुनर्वसुह्ये हस्त चित्रायां रोहिणी द्वये विषाखादि<br>त्रये कर्कशे मृगशिरा खती द्वये शस्त्राण धारणं अष्ट स.<br>हो सति धौ शुभम् ॥   |
| ३१  | धनुषा<br>विद्या  | अ.म.पु.सु.                               | र                   | शु.   | शु.  | अनुराधा मघा मृगशीर्षे अश्लेषा तिथि धनु वि<br>द्यादिकं कार्यं हारण्या शुभवासरः ॥   |
| ३२  | सर्वशा<br>स्त्र  | ह.वि.खा.उ.पु.<br>पु.अ.                   | शु.                 | शु.   | शु.  | हस्त त्रयोत्तर श्रिण्या पुनर्भ अवारण्ययो शुभे द्वि वि<br>धे खड्ग कुंता दीप्य सयन्य सतः ॥  |
| ३३  | निशास्त्र<br>घटन | वि.क्र.पु.३.म.श्ले.<br>अ.म.स.५.दाभ.जे    | शु.                 | क.श.  | शु.  | विषाखा कृत्तिका पूर्वा मघा श्लेषा श्रिणी मृगशिरा<br>दीभराणी ज्येष्ठ मित्रावे कूरवामो घटन धारणा प्राक्त<br>वदि शस्त्रे स्य शोभने ॥ |
| ३४  | बंदकका           | श्ले.क.सू.जे.अ.म.<br>खा.वि.रे.पु.विश.पु. | ३१८<br>१३१४<br>२४१६ | मं.श. | शु.  | ज्येष्ठा कृत्तिका मूल ज्येष्ठा दीभराणी अवे पूर्वा हस्ता च<br>तुरके ज्येष्ठ स मघा मिघे रक्त जया मृगहिना लजा                        |
| ३५  | शस्त्रचौ<br>रहमन | जे.५.ह.भी.पूर्वा ३<br>मृ.श्ले.म.         | ४१८<br>१४           | मं.श. | शु.  | ज्येष्ठा दीभराणी पूर्वा मूला श्लेषा मघा द्वये कूर खर पुन<br>लान्क मंदार वामो शत्रुणां मघनं कुर्यात् शशभिला                        |

सूत्र १८



६५८००

| क्र.सं. | गुरु नाम            | नाम नक्षत्र                               | ति.              | वार           | लग्न        | साक्षी मुहूर्त गणपति   |
|---------|---------------------|---|------------------|---------------|-------------|--|
| १६      | शत्रुसंधि           | शु.म.पु.म.इ.ते.तल                         | ८<br>१४          | मं.पा.<br>सु. | सं.<br>इ.ह. | अनु राधा मघा पुष्ये तिर्य्यं हंतै तला भिधे लोने<br>सहृष्टिग्वहृम्याहादप्रय सिरयते                            |
| ३७      | मघभक्षणा            | ५५ श्री.श्ले.म.इ.र्वा.इ.जे.<br>सु.पा.भ.   | ८<br>१४          | शु.<br>मं.    | पु.         | आर्द्राश्लेषामघा पूर्वज्येष्ठा मूल प्राक्ता भिधा भर<br>राया सुदिने मेहन्य श्रीयान्मादक मधु ॥                 |
| ३८      | नवांगनाभे<br>ग      | ५३ म.ह.५३ रो.स्या<br>म.ध.श.               | पु               | शुभ           | पु.         | जघमासिगमस स्तोनवतध्वा शुभनि<br>गर्भाधानीक नक्षत्र शस्त्रज्योत्स्ना करे निश                                   |
| ३९      | गीतनृत्य            | ५१.शु.ध.श.इ.रो.                           | पु.              | शुभ           | पु.         | रेवत्यां अनु राधा यां ध निष्ठादिद्वये को रोहिणी<br>पुगले पुष्ये ते नरे गीत नृत्यने ॥                         |
| ४०      | नटनृत्य             | ५५.५५ दो.पुष्य.पु.म.<br>ध.श.चि.सा.वि.३३मु | पु.              | शुभ           | पु.         | मृगाद्री रोहिणी पुष्य पुनर्भे श्रवणा ज्ये चित्रा त्रयोत<br>ग मूल कृत्वे सदा र जीवनी ॥                        |
| ४१      | दुंदुभीचा<br>मदरा   | ह.चि.सा.५३ रो.पु.पु.<br>श.श.ध.पा.म.       | ५३<br>२५३<br>८१३ | ह.<br>ह.      | पु.         | इतान्नः अनु राधाले पुनर्बसु पांगे श्रवण मर्गे कर्कटि शु<br>भे पूर्वाजया उच शुभ दुंदुभि कृया त्र राघव समीरिते |
| ४२      | वंशादिपुद्गी<br>र्त | जे.५५ श्री.सु.सु.पूर्वा.इ.<br>श्ले.म.     | ८<br>१४          | शु.मं.<br>सु. | कू.         | ज्येष्ठा द्वाभराणी मूल पूर्वो श्लेषा मघा सुच<br>रिक्ता तिर्य्योच पाया हे सुख वाघं प्रशस्यते ॥                |

शि  
१८



कुच  
२०

| सं | नाम मुहूर्त        | नाम नक्षत्र   | ति. | वा.          | लग्न     | साक्षी मुहूर्त गणपति  |
|----|--------------------|---|-----|--------------|----------|---|
| ४३ | मृगया              | मृ. म. पू. उज्ये. ५५ द्रो                                 | शु. | मृ.          | शु.      | अश्लेषा भरणो पूर्वज्येष्ठा द्रो स्वाति मूल भे विशाखा<br>याच पापे द्विषा पादा खट केन पः ॥  |
| ४४ | जलयंत्र            | पूर्वा. म. मृ. श्रा. यु.                                  | शु. | शु.          | ११<br>१२ | पूर्वा पादा मघा मूल शते उष्य ख चारिणि लम्बे व्या<br>किं कजे वारे जलयंत्र क्रिया शुभा ॥  |
| ४५ | वापीकूप<br>तडागादि | ५नु. म. ह. रे. उ. ३ गे.<br>मृ. पु. ध. पू. पूषा.           | शु. | शु.          | शु.      | अनुराधा मघा हस्त रेवती अश्लेषा त्रये रेहिणी युग द्वे पु<br>धे धनिष्ठा द्वितीया तथा पूर्वा पादा भिधे भे च शुभे मासि शु<br>भदिने वापी कूप तडागा नाशारभ कथितो दुधा ॥ |
| ४६ | वृक्षलता<br>दिशेपण | हृदि. उ. ३ मृ. ५नु. रे.<br>अ. वि. रे. पु. मृ. पूषा.       | शु. | शु.          | शु.      | हस्त चित्रा नक्षत्र मूल अनुराधा रेवती हय विशाखा रोहिणी<br>पुष्ये व्या नाश विमरो पते ॥   |
| ४७ | मौकाकृत्य          | जे. म. वि. ५५ द्रो. रो. म.<br>न. श्ले. रे. तेत्वा जर्क्षे | शु. | र.<br>क. शु. | शु.      | ज्येष्ठा मघा विशाखा द्रो रोहिणी भरणो हय श्लेषा याच विहा<br>यान्य नक्षत्र के गुणै मृगो मूल भे मनिष्ठा नवका परने तर   |
| ४८ | पशुपराणा           | रो. उ. ३ चि. अ.   | शु. | शु.          | शु.      | त्यक्ता मृ. भिमा रिकारो रोहिणी अश्लेषा त्रय चित्रा ख्य श्रवण<br>मो म पशुना सर्व कर्षे च ॥   |
| ४९ | उषमहिषा<br>दि      | ध. श्रा. पू. याति र्यड.<br>अरवि                           | शु. | शु.          | शु.      | धनिष्ठा द्वितीया पूर्वा पादा निश्वरेका हय अजा विमहिषो<br>साणा कृत्य चाश्रुती शुभा ॥   |

नक्ष. नक्ष. नक्ष. १४  
ध. श्रा. पू. शा १५  
उ. भा. रे. व. न. १६

धनिष्ठा नाशये द्रव्यं क्लेशं कर्ता च वाहणी पूर्वा यादं उये द्राजा उत्तरा सत्यु मादिशे त कुरुते  
चापि पो क्षा भं तस्मात्पंचकं त्वजेत धनिष्ठा त श्रुतं मध्य पूर्वा रो चीत रोत के एतत्पंच घटी  
त्याजारेवती सर्व वर्जयेत शुभा शुभ कृतं कार्यं पंच गुण्यं च पंच के भस्म योग सूर्या भास्वमम  
अक्ष भस्म रक्ष स उच्यते यत्किंचित्कुरुते कर्म तत्सर्व भस्मता भवेत् ॥

मृ. मृ. ११



| सं. | नाम मुहूर्त                      | नाम नक्षत्र                                  | ति.             | वा.       | ल.  | साक्षात् मुहूर्त गणपति   |
|-----|----------------------------------|--|-----------------|-----------|-----|--|
| ५०  | मृगादिघन<br>चरशृंगी              | ज्ये. मृ. पु. पु. रो. ह.<br>उ. ३             | शु.             | शु.       | शु. | ज्येष्ठा स्वात्यग्निभे पुथ्ये पुनर्मे रोहिणी कर उत्तराशु शुभे<br>कृत्ये शृंगी एण वनचारिणां ॥   |
| ५१  | सिंहादिन<br>खी                   | जे. ३३ इ. रो. ह. वि. पु.<br>षा               | शु.             | कू.       | शु. | ज्येष्ठा इ. रोहिणी हस्ते विशाखा पृष्यभे शुभे कृत्तिका घ्रा<br>मुख्यानां कृत्य नख बली यशाम शुभम् ॥  |
| ५२  | पक्षी कृत्य                      | शु. ह. मृ. पु. ज्ये. मृ.<br>ऊर्ध्वमुख        | शु.             | शु.       | शु. | शुभादे सैवी तय्ये ड्युखे चोई मुखे पिमे सारका शुक्र<br>मुख्यानां तत्कृत्य शुभम् शुभम् ॥   |
| ५३  | पशूनां क्रय<br>विक्रय            | वि. रे. पु. थ. मृ. ह. पु.<br>जे              | शु.             | शु.       | शु. | विशाखा रेवती पुष्ये धनिष्ठा श्लेष्मे शुभे हस्ते पुनर्वसु<br>ज्येष्ठे पशूनां क्रय विक्रयो ॥   |
| ५४  | सर्वतलु<br>विक्रय                | श. मृ. वि. मृ. स्वा.<br>रे                   | शु.             | शु.       | शु. | शततारा श्विनी चित्रा अरुणो श्वाति भे पुच रेवत्यां<br>चक्रय श्रेष्ठे विक्रयान कदाचनः ॥  |
| ५५  | सर्व वस्तु<br>विक्रय             | विक्र. श्ले. मृ. पु. ३                       | शु.             | शु.       | शु. | विशाखा कृतिका श्लेषा भरणी पूर्णिका त्रय विक्र<br>यः सतिषा चेषु कर्तव्यो न क्रय शुभः ॥  |
| ५६  | गर्हक्षेत्र<br>मिक्रय वि<br>क्रय | मृ. मृ. पु. ३ श्ले. मृ.<br>रे. वि. ३ पु. पु. | १६<br>१९<br>२०५ | र.<br>शु. | शु. | जोवे शुक्रे च नंदा सु पूर्णायां मूलभे मृगे पूर्वा श्ले<br>षा मघा त्रय च विशाखा हितिये तथा पुनर्मे मुनि<br>भिः प्रोक्त क्रय विक्रय एण भवि ॥ |



| सं. | सं. | नाम मुहूर्त                                    | नाम नक्षत्र  | नि. | वार | ल.  | साक्षी मुहूर्त गणपति  |
|-----|-----|--|--|-----|-----|-----|---|
| १२  | ५७  | वाणिज्य  | नु. उ. ३ पु. रे. रो. म.<br>ह. वि. ज.                   | शु. | शु. | शु. | अनुगद्योत्तरा पुष्य रेवती रोहिणी मंग<br>हस्त चित्राश्वि भवृ पति वाणिज्यं दिवसं शुभे ॥   |
| ५८  |     | निधिद्रव्या<br>दिव्यद्विसेग                    | पु. म. ५ नु. प्र. ध. रा<br>श. पु. रे. वि.              | शु. | शु. | शु. | पुष्ये मंगे नरा धावो अत्रा नतयं श्रिभे<br>पुनर्भेत्या चि प्राखायां निधं वृद्धिश्च संग्रह ॥  |
| ५९  |     | द्रव्य निधि<br>शुभस्थान<br>रखना                | ध. उ. का. वि. पू. पा.<br>रे. रो.                       | शु. | शु. | शु. | धनिष्ठा कां विष्णाखा ख्ये पूर्वा पांठा निधं न्यभे<br>रोहि तगयां च निधं भूसौ स्थापनं शुभ मार्गं ॥  |
| ६०  |     | स्वयं प्रयोग<br>काले रं पुं<br>याधन रं वन वृषे | प्र. ध. रा. चि. त्वा.<br>वि. ५ नु. रे. ज. पु. पु. म.   | शुभ | शुभ | शु. | श्रवणादि नभं चित्रा तुष्करेवती धये पुनर्वसु मंग पुष्ये<br>शुभाद्रव्य प्रयोगकः संक्रांतौ वृद्धि शंका तु हस्त संर वि<br>भौमयानं च ग्राह्य कृणुय स मानं दृष्टात् स्थिर भवत |
| ६१  |     | धाम्य विक्रय                                   | रो. ध. प्रा. उ. ३                                      | शु. | शुभ | शु. | रोहितां पानिष्कथान् न निष्ठा शत भोजे ॥  |
| ६२  |     | रस संग्रह                                      | रो. उ. ३ रे. ध. प्रा. म. म.<br>५ नु. ह.                | शु. | शु. | शु. | रस संग्रहणे अष्टोत्तार भो दितो दुष ॥  |
| ६३  |     | रथार्थ लाभे                                    | वि. रो. जे. पु. प्र. रा. ३<br>भा. उ. ३ त्वा. पु. व्ये. | शु. | शु. | शु. | विष्णाखा रोहिणी ज्येष्ठा मुनर्भे श्वि प्रातः नयं<br>शुनुरा स्वाति पुष्य नु धान्य वृद्धि शुभ रितम् ॥   |



मु.च.  
२३

| सं. | मु.नाम                                | नाम नक्षत्र   | ति. | वार | लग्न | साक्षी मुहूर्त गाथा पति   |
|-----|---------------------------------------|---|-----|-----|------|---|
| ६४  | हल प्र-<br>वाह                        | पु.पु.मू.उ.३गे.मू.ह<br>चि.स्वा.५नु.र.अ.अ.पु.              | शु. | शु. | शु.  | पुनर्वसु हृये मूले चूत्तर रोहिणी हृये हस्त त्रयेः म्रड<br>राधायां रव्याश्रवाजयेतिथि वारे शुभे श्वित्यां हल प्रवहण               |
| ६५  | वीजोपि                                | ह.चि.स्वा.म.उ.३गे.<br>मू.ध.रे.अ.मू.५नु.                   | शु. | शु. | शु.  | हस्त त्रये मघा पुष्ये शुभे रोहिणी हृये धनिष्ठो वती पुमे<br>तथा मूलानुराधयो शुभ वारे तिथो श्रेष्ठा वाजाति मवयगुह                 |
| ६६  | सस्य गंय<br>गांधिना<br>पती            | ह.चि.स्वा.उ.३मू.ध.<br>श.मू.प.अ.५नु.रे.म.                  | शु. | शु. | शु.  | हस्त त्रयोत्तरा मूले धनिष्ठो रोहिणी मगे पुष्ये श्वित्यां नुरा<br>धान्ये मघायां शुभ वासर त्यक्ता रिशति भौमस्य सदा म्याम्या       |
| ६७  | सस्यादष्ट<br>क्षलतादि<br>नाजनाम<br>वन | चि.स्वा.उ.३मू.ध.गं.प.<br>अ.५नु.रे.                        | शु. | शु. | शु.  | सस्या रोषो दिने काले हित्वा क्षाक कर्म मघा करे ॥<br>वृक्ष सस्य लता दीनां प्रप्रास्त जल सेवनं ॥                                  |
| ६८  | धान्य का<br>दन                        | पु.३उ.३म.मू.ज्ये.५<br>श्री.अ.ध.म.क.मू.म.पु.<br>ह.चि.स्वा. | शु. | शु. | शु.  | श्वेत्तिरा मघा श्लेवा ज्येष्ठा रोहिणी श्रवणा हृये भरणी हितं<br>मूले मगे पुष्ये कात्र्य धान्य केरु शुभारिक्ता हित्वा भाय शनि श्र |
| ६९  | कार्गमर्द<br>दाय                      | ५नु.अ.म.रे.म.पू.फा.<br>उ.फा.जि.रो.                        | शु. | शु. | शु.  | अनुराधा श्रवे मूले रव्या च मघा त्रये ज्येष्ठायां चैव रो<br>हिण्या शुभ स्यात्कार्गमर्दनं ॥                                       |
| ७०  | धायादि<br>काल पुष्य<br>तारणा          | पुष्य.ह.चि.स्वा.उ.३<br>म.ध.गं.मू.अ.नु.रे.न.               | शु. | शु. | शु.  | रोहिणी दिन नक्षत्र वासरे मंदिर कृषे जल स्नान यन<br>पुष्य कला धृता रणा च सत् ॥   |

सं.सं.परा  
२३

शि.  
२३



२४  
 सं.

| सं. | नाममुहूर्त                | नामनक्षत्र   | ति. | वार.             | ल.           | साक्षीमुहूर्त गणपति  |    |    |     |      |     |     |    |     |     |       |       |      |
|-----|---------------------------|--|-----|------------------|--------------|--|----|----|-----|------|-----|-----|----|-----|-----|-------|-------|------|
| ७१  | अनादिक<br>पाकक्रिया       | मू. चि. अनु. विक. मू.<br>उ. ३ रो. जे. रे.              | शु. | शु.              | शु.          | मूल चिन्ना नुराधा सु विशाखा कनिका मगे उत्तरा<br>रोहिणी ज्येष्ठा रेवती धनुषि क्रिया ॥   |    |    |     |      |     |     |    |     |     |       |       |      |
| ७२  | नवान्न प्राश<br>न फला     | ह. चि. अनु. रे. रो. म.<br>ध. म. म. उ. ३ ह.             | शु. | शु.              | शु.          | हस्त चिन्ना नुराधा मगे रोहिणी श्रवणा द्वये मगाश्र्वि सु<br>तरा स्वर्क शुभे वारे तिथा वपि ॥                                       |    |    |     |      |     |     |    |     |     |       |       |      |
| ७३  | कोणार्द्रिधा<br>न्यस्थिति | पु. मू. रे. अनु. म. ध. म.<br>ह. चि. स्वा. म. रो. उ. ३  | शु. | शु. श.<br>र. चं. | शु.          | पुनर्ममग शीर्षे न्ये नुराधा श्रवणा बदे हस्त त्रये श्र्विनी पुष्ये<br>रोहिणी मग रात्रये गुरे श्रवे रेवती दोसको शो दो धान्य रक्षणे |    |    |     |      |     |     |    |     |     |       |       |      |
| ७४  | बीजसंग्रह                 | ह. चि. स्वा. पु. रो. म.<br>ध.                          | शु. | व. श.<br>व.      | ल.<br>रा. १२ | हस्त त्रये पुनवस्ये रोहिणी श्रवणा द्वये स्थिरलने शु<br>भे वारे विचंद्र बीज संग्रहः ॥   |    |    |     |      |     |     |    |     |     |       |       |      |
| ७५  | नृणां सु वि<br>धान        | स्वा. मू. ह. रे. पू. भा. उ.<br>भा. म. पू. धा. उषा. रो. | शु. | शु.              | शु.          | स्वातो मूले बहस्तं ये भाद्राषाढा द्वये मगे रोहिणी कु<br>श को हस्त धन्य संरक्षणं शुभम् ॥  |    |    |     |      |     |     |    |     |     |       |       |      |
| ७६  | धर्म क्रिया               | रे. म. ह. वि. स्वा. रो. म.<br>म. म. श. उ. ३ पु. उ. ३   | शु. | व. श.<br>व.      | शु.          | जेज्य शक्रं दु संयं पु जेजे षट्पश्च लिनी लग्ने जीव यु<br>जे जीते वलिष्ट धर्म वाचरेत् ॥   |    |    |     |      |     |     |    |     |     |       |       |      |
| ७७  | श्रीति योषि<br>कर्म       | पु. पु. स्वा. उ. ३ म. ध.<br>श. रे. म. ह. अनु. रो. म.   | शु. | शु.              | शु.          | पुनर्वसु द्वयो स्वातो मृते श्रवणा त्रये रेवती द्वितीये हस्ते<br>नुराधा रोहिणी मघा श्रीतिकं योषिकं कर्म पुन्ये हि कीर्ति          |    |    |     |      |     |     |    |     |     |       |       |      |
|     | यमदं                      | ८  | ८   | १०               | २            | ३  | ४  | १४ | ति. | यमदं | ८   | ८   | १० | २   | ३   | ४     | १४    | ति.  |
|     | योगः                      | रो.  | चि. | रे.              | पुष्य        | उ.   | ह. | आ. | न   | योगः | म.  | मू. | भ. | उ.  | रे. | स्वा. | प्रा. | नक्ष |
|     |                           |  | म.  | म.               | म.           | म.   | म. | म. | म.  |      | वि. | ध.  | क. | फा. | म.  | रो.   | ह.    | व    |

शि.  
२४



मुच्यते  
३५

| सं. | नाम मुहुर्त    | नाम नक्षत्र                           | ति.     | दा.         | ल.  | साक्षात् मुहुर्त गणपति  |
|-----|----------------|---------------------------------------|---------|-------------|-----|---|
| ८२  | दिव्य परीक्षा. | श्र. जे. पु. श.                       | कू.     | शु.         | शु. | द्विस्वभावे चो लगने वाल न्यत्रे सतार के जीवे च श्रवणे ज्येष्ठा पुनर्वसुभिर्धे शते सता शनैश्चरै भोमभूतांचति चिमहमी भद्रा जन्मर्क्ष मासादौ विलगने चाष्टमे रविना डी भंच प्रथा योग्य कर्मा दिव्य परीक्षाणाः |
| ८३  | सर्प राक्षस    | भ. आ. म. ज्ये. पू. ३ जे. मू.          | कू.     | शु.         | हि. | भरण्या दानघा श्लेषा पूर्वा ज्येष्ठा राख्य मूल भे करे हि के द्रौणी पावे हि त्वा काले नहि ग्रहाः  |
| ८४  | घोड़ा फेरना    | क. रे. पु. स्वा. ह. श्र. ध. मू.       | शु.     | शु.         | शु. | कृतिकारे वती पुष्ये स्वाति हस्ते श्रवण त्रये मृगे करि विपुस्तु सशस्त्रं गो नर वाजिनां ॥   |
| ८५  | सेत बंध        | उ. ३ रो. स्वा. मू.                    | शु.     | रं. वृ.     | शु. | श्रुतरे रोहिणी स्वाती मृगे ऽर्के मंगले गुणै सेतूनां बंधनं शस्त्रं शुभे लगने शुभक्षिते ॥   |
| ८६  | लवण कृत्य      | भ. रो. श्र.                           | शु.     | श.          | शु. | लवणा रंभ कृत्यं तु भरणी रोहिणी श्रवण शनि वारे दिवा ये हं जन्म राशे शनि वेली ॥   |
| ८७  | जैन धर्म       | उ. पा. ज. म. स्वा. पु. श्र. ध. श. पु. | ज. मापू | शु. मं. वृ. | शु. | उषा श्रिनी मृगे स्वाती पुनर्भे श्रवण त्रये जया पूर्णा सुशुक्रे ज्ये बुधे हनि च रादये चार्वाक जिन पार्थे ड मंडली   |
| ८८  | शैलू कनट कर्म  | चि. आ. रो. पु. उ. ३ श्र. ध. श.        | शु.     | शु.         | शु. | चित्रा द्रो रोहिणी पुष्ये उत्तरे श्रवण त्रये शुभा है के च शैलूष नट कृत्यं समीरितं ॥   |

म. सु. ह. क.

शि. २५



मुनि  
दी  
२६

| सं. | नाममुहूर्त         | नाम नक्षत्र  | ति.        | वार       | लग्न      | साक्षीमुहूर्त गणपति  |
|-----|--------------------|--|------------|-----------|-----------|--|
| ८६  | तेल का<br>यंत्र    | ध. अ. ह. चि. अनु<br>व्या.                            | शु.        | शु.       | शु.       | धनिष्ठाश्विकरचित्राऽनुराधापुष्येभेतथाज्येष्ठायांच<br>पुनर्वसोरेवत्याशुभवासरेतेलयात्राक्रियाशस्ताहि<br>त्वारिक्तामयाषपि |
| १०० | कुंभकार<br>कृत्य   | पु. पु. ह. चि. स्वा. रे.<br>रो. म. ज. अ. जे.         | शु.<br>शु. | र. शु.    | चर.       | पुनर्वसुद्वयेद्वयेहस्तत्रयेत्यरोहिणीमृगश्रनुराधाश्रवेजे<br>छेससूर्यसौमवासरेतथाचरेद्वयेप्रीक्षाकुंभकाराक्रयाबुधे        |
| १०१ | काव्यत्यो<br>शिले  | ह. ई. अ. पुरे. अ. य.<br>श. पु. रो. म.                | शु.        | शु.       | शु.       | हस्तषट्केश्विनीपुष्य— रेवत्यांश्रवणोत्रयेपुनर्भेरोहि<br>णीयुगमेसूत्रधारक्रियातमा ॥                                     |
| १०२ | स्वर्णकार<br>कृत्य | अ. ध. श. अ. प. म.<br>ह. चि. स्वा. वि. क. प.          | शु.        | शु.       | शु.       | अवत्रयाश्वनीपुष्यमृगहस्तचतुष्टयकृतिकायांपुनर्व<br>सोषष्यभूलनेतिथावपिहेमकारक्रयासस्ताबुधशने<br>श्रवे ॥                  |
| १०३ | लुहार<br>कृत्य     | स्वा. जे. मू. चि. आ.<br>भ. क्र. रो. अ.               | शु.        | पाया      | स्थि<br>र | सातीज्येष्ठाहयमूलेचित्राद्राभरणीलोहाशम<br>तांकृत्यपापचान्हिस्यरोदये ॥  |
| १०४ | नापिक<br>कृत्य     | जे. ह. चि. स्वा. अ. ध.<br>अ. म. रे. पु. पु. श.       | शु.        | शु.       | र<br>शु.  | ज्येष्ठहस्तत्रयकरोत्रियश्वमृगेत्यमपुनर्वसद्वार्याहस्ता<br>क्षाषकृषाष्टमीतिथिसहारनीपिकानांचक्षरादिसकला                  |
| १०५ | अमीर<br>जन         | वि. पु. रे. जे. ह. अ. म.<br>पूर्वा. भा. पु. य. ध. श. | शु.        | बुध<br>चं | शु.       | विशाखायांपुनर्भेत्येज्येष्ठाहस्ताश्विनीमृगपूर्वा<br>कारात्रयेपुष्येक्षर्केनवल्लभक्रिया ॥                               |

न  
दि

शि.  
२६



मु. च.  
२७.

| सं. | नाम मुहूर्त    | नाम नक्षत्र   | ति.     | वार               | लग्न              | साक्षी मुहूर्त गणपति   |
|-----|----------------|---|---------|-------------------|-------------------|--|
| १०६ | चार कृत्य      | वि. कृ. पू. ३ मृ. आ.<br>भ. म. ज्ञे.                       | शु.     | शु. मं.<br>स.     | शु.               | विशाखा कृतिका पूर्वा मृलाद्र भरणी मघे अश्लेषा ज्ये<br>ष्ठये भेद भौम वोशावने वले लग्ने वा दशमे भौम चौर सद्रव्य<br>लव्यय   |
| १०७ | चूलेका         | पू. भो. रो. पु. उ. ३<br>आर्द्रा. ज्ञ.                     | शु.     | शुभ               | शु.               | पूर्वाभाद्रा रोहिणी पूषे उत्तरा तृतीये अश्वि मे स्थिति महान सत्ये<br>द्रोगे हे पस्कराणे सहः  |
| १०८ | चित्ररंभ       | ह. चि. स्वा. वर. म.<br>अ. अ. च. श. पु.<br>रो. पु. पू. षा. | शु.     | शुभ               | १०६<br>११३<br>८१३ | हस्ते त्रयेतराधये मृगे अश्विन्या अश्विन्या पुनर्भे रोहिणी पुष्ये<br>पूर्वाषाढाभिधेतथा नंदायांच शुभे वारे कुर्याद्दाराजवेश्म<br>निचनाना विष रम्यं शिलीराम यसा शुभम् ॥ |
| १०९ | बुहारीका       | जे. थ. वि. पु. ष्य.<br>जु.                                | शु.     | शुभ               | शु.               | सुरपति वसतक्षे पुष्ये मैत्रेष्णु तक्षरं जनीकरभयुक्तचंद्र<br>शुक्रज्यवारे भवित शुभतिथौ वामार्जेनी चालनं सत्   |
| ११० | अनिधान्य       | वि. कृ. जे. म. उ. ३<br>रो. पु. रो.                        | शु.     | मं. रे<br>चं. शु. | शु.               | सौम्यायने विशाखायां कृतिका रोहिणी मृगे<br>अनगरेवती ज्येष्ठा पुष्य ग्याधान मिष्यते  |
| १११ | राजाभिषे<br>के | रो. म. पुष्य ज्ये. उ. ३<br>रो. अ. ह. चि. अ.               | ५<br>१० | सूर्य<br>बली      | शु.               | रोहिणी द्वितीये पुष्ये ज्येष्ठायां तुल्ये रेवती युगहस्त<br>चित्रा या अवाणो पित्रे  |
| ११२ | युवराजाति<br>क | रो. म. पु. जे. उ. ३ रे<br>अ. ह. चि. अ.                    | शु.     | ग.                | शु.               | युवराजाभिषेकरपादभिकोक्तभादिषु  |

शि.  
२७



शुक्र

२८

| क्रं. | नाममुहूर्त              | नाम नक्षत्र                             | ति.            | वार          | ल.  | साक्षात् मुहूर्त गणपति   |
|-------|-------------------------|---|----------------|--------------|-----|--|
| १     | मद्यमांसा<br>दिभक्षणा   | ५५ दो. ज्ये. म. पू. ३<br>ज्ये. म. श. म. | शु.            | शु.          | शु. | तीक्ष्णो ग्राम्नुपभेषु मद्यमुदितं तस्मिन्नेव भक्षाः  |
| २     | क्षौरत्याज्य<br>मुहूर्त | ५ नु. उ. फा. क.<br>रो. म.               | ४८<br>१४<br>३० | मंश<br>र.    | शु. | मघा मै ५ कृतिकाः ६ नुरा. ३ रो. ८ उ. फा. ४ जो<br>क्षौरे करावै तो १ वर्ष न जीवै ॥              |
| ३     | राजक्षौर<br>मुहूर्त     | शु.                                     | शु.            | शु.          | शु. | क्षौर मस्यो दये राज पंचमे पंचमे हनि क्षौरे कर्म समा<br>ख्यातं निषिद्ध तारका न चेत्           |
| ४     | स्त्रिकदोष<br>जातकर्म   | शु.                                     | शु.            | शु.          | शु. | यदि पुत्र त्रया दृढे चतुर्थी कन्यका भवेत् एक कन्या<br>त्रया तु त्रस्तदा दोषो स्त्रिकाभिधा    |
| ५     | ज्येष्ठा<br>जन्म        | शु.                                     | शु.            | शु.          | शु. | यदुक्तं मूल पादेषु फल तस्माद्दिलोमकं   |
| ६     | ज्येष्ठा<br>जन्म        | शु.                                     | शु.            | शु.          | शु. | आय पादे गृहं हंति ज्येष्ठा या अनुजं द्विके तृती<br>ये जनुनी जाताः स्वात्मानं च बुरीषके ॥     |
| ७     | विसांग<br>ना            | श. ज्ये. शुभ. क.                        | भद्रा          | स. मं.<br>श. | शु. | सूर्य भौ मार्कि वारेषु तिथि भद्रा शिता मिधां ज्येष्ठा<br>कृतिका चेत्स्या तत्र जाता विषागना ॥ |

शि.  
२८







३०

| सं. | नाम मुहूर्त                   | नाम नक्षत्र   | ति.                | वार              | ल.  | साक्षी मुहूर्त चिंता मणि  |
|-----|-------------------------------|---|--------------------|------------------|-----|---|
| १२० | राजदर्शन                      | ह. वि. उ. ३. अ. ध. म.<br>पुष्य. ५. नु. रो. रे.          | शु.                | म. बु.<br>गु.    | शु. | राधा मूल मधुघु वक्ष वरुणाक्षि पल ता पाद पारो यो<br>घोनप दर्शन ध्रुवम दाक्षत्र श्रवो वासव ॥                                  |
| १२१ | दासदासी<br>लेना               | उ. ३. रो. ह. ५. अ. पु.<br>म. रे. वि. ५. नु.             | शु.                | शु.              | शु. | क्षिप्र मैत्रे विति सिता केज्य वार सौम्ये लग्ने कर्क जैवा<br>त्वलाभे योने मैत्रे स्वमपि मैत्र्या सेवा कार्य स्तामिन सेव केन |
| १२२ | मुद्रा कार्या<br>हट प्राल     | उ. ३. नु. ध. प्रा. प.<br>पु. ह. वि. स्वा. ५. अ. रो.     |                    | बु. गु.<br>शु.   | शु. | मुद्राणां पातनं सध्रुव मधुचर मैक्षि प्रभेवा दुमैरिधस्त्रे पु<br>गा जयाख्येन च गुरु भगु जास्त विलग्ने शुभ स्वात् ॥           |
| १२३ | पालकी<br>चढन                  | रे. ५. ह. स्वा. प. ध. प्रा.<br>पु. म. ५. नु. जे. म. रो. | शु.                | र. शु.<br>बु. च. | शु. | रिक्तायमीदृशां कुज श्रवो ध्रुव त्वाष्ट्र पयानं स्थिति<br>वेशानं सत् ॥   |
| १२४ | हाथी कार्य<br>भु. अ. क. प्रा. | अ. ध. प्रा. ह. पु. वि.<br>स्वा. रे. प्र. म. प. उ.       | शु.                | शुभ              | शु. | स्वय हस्ति कार्य कुर्यात् मरुदु क्षिप्र चरेषु धिद्वानु शुभ तारे<br>शुभ लग्ने शुभा शो भने तिथौ अंकुशा र्णो या ज्पा शविला     |
| १२५ | अश्व कार्य                    | ह. ध. रे. अ. पु. प. स्वा.<br>म. प्रा.                   | ५११<br>२१३<br>०१२३ | अ.<br>गु. उ.     | शु. | क्षिप्रा त्यचस्वि दुम रुजले शादित्य व रिक्ता र दिन प्रशा<br>स्तां स्पां द्वा जि कस्य सूर्य भात ॥                            |
| १२६ | सवारी ले<br>नी में            | अ. प्रा. ह. पु. प.<br>म. म. अ.                          | शु.                | शुभ              | शु. | नक्षत्र ५ १. २ ४ ५ २ जाम<br>स्व पी अ. ५ उ.<br>अ. शु. स्त्री. ना रण भं ना अशु शुभ फल   |

६५



मु. च. ३१

५१

| सं. | नाममुहूर्त                | नाम नक्षत्र   | ति. | वार             | लग्न   | साक्षी मुहूर्त चिन्ता मणि   |
|-----|---------------------------|---|-----|-----------------|--------|---|
| १३४ | ग्य का कार्य              | पु. पु. जे. शु. अ. ध. श. रे. अ. चि. स्वा. रो. म.                        | शु. | र. गु. शु. व.   | शु.    | रिक्ताष्टमी दर्श कुज श्रवो ध्रुव व्याष्टे पयानं सिति वेश न न सत ॥   |
| १३५ | स्त्रीणां कंज लक्ष्मणा धा | चि. स्वा. वि. शु. अ. ध. रे. म.  | शु. | शु. मृ. शु. ग.  | शु.    | नदद्यान्स भगा मृषा स्त्रीकज्जाल दर्पणां ध्रुवेष्व्यो दिति तस्या तथापि कुज वासरे ॥                                     |
| १३६ | चूड़ा पहन ना              | अ. रे. ध. ह. चि. स्वा. वि. शु.  | शु. | मृ. मं. व. शु.  | शु.    | हस्तादि पंचके धिस्ते वासवे न्ये श्विना मथा गुरु शु क्रार सूर्ये च स्त्रीणां चूड़ापि धारणां ॥                          |
| १३७ | मज्या सना दिभोग           | अ. अ. नु. उ. ३. रो. म. पु. पु. ह. चि. अ. भ.                             | ११२ | व. गु. चं. शु.  | शु. भ. | भोगः सध्या सना सनादे ध्रुव मृदुल घुट्टु व्यंतिकादि सवष्ट त्रिय पुष्कर योगादि देयता ॥                                  |
| १३८ | आभूषण घटन                 | उ. ३. रे. अ. अ. ध. म. पु. अ. पु. शु. ह. वि. स्वा. रो. म.                | शु. | र. गु. शु. शु.  | शु.    | स्याद्वा घटनं त्रिपुष्कर चरक्षि प्रधरत्न युक्त तनी होमपि हीन भवती ॥   |
| १३९ | रत्नयुक्त आभूषण           | क. रो. म. ह. चि. स्वा. वि. शु. अ. नु. उ. ३. रो. म. पु. पु. ह. चि. अ. भ. | शु. | मं. रे. शु. शु. | शु.    | कुजे मेषालि सिंह तनी तन्मक्ता सहितं चरध्रुव मृदु क्षिप्र शुभं सतना ॥  |
| १४० | स्वर्णादि नात्र भोजन      | रो. म. ह. चि. स्वा. रे. अ. ध. श. पु. पु. इ. न. ३. ३.                    | शु. | व. व. शु. शु.   | मि. द. | रोहिणी युगले हस्त त्रितये रेवती ह्ये श्रवण त्रये पुष्य पुन वस्ति न राधयोः अतरे बुध शुक्र ज्येष्ठा वारे चास्त योगिके स |

नरो रेष्वापात्रे शुभो जनादि शुभ प्रदम्

शि. ३१



| सं. | नाम मुहूर्त              | नाम नक्षत्र                               | ति.           | वा.            | ल.  | साक्षी मुहूर्त मण पति  |
|-----|--------------------------|---|---------------|----------------|-----|--|
| ८४  | वातरोगादि<br>हैल         | श्ले.म.सू.वि.आद्रा.<br>भ.क.वर्जित         | शु            | शु.<br>मं.     | शु. | हिल्लाप्लेपा मघा मूल विषा द्वाभरणी द्वय मदेजे स्थि<br>तितेलत्रिक्रियादिस्तयेतिथौ ॥   |
| ८५  | रक्तमोक्षणा<br>वसन       | ह.चि.स्वा.श्र.पु.शु.<br>रो.सू.अ.ऽनु.ज्ये. | शु.           | शु.            | शु. | हस्त त्रयेष्विनी पुष्ये प्रांत भेरुं हिणी द्वये श्रवणे चानु<br>राधायां ज्येष्ठायां रक्त माक्षणा ॥                              |
| ८६  | सागतप्र<br>लोहा          | श.चि.अ.मू.वि.क.<br>आ.ज्ये.श्ले.           | शु.           | मे.र<br>वु.    | कूर | प्रातः चित्रा श्विनी मूल विषा खां कति कार्दभे ज्ये<br>ष्ठा श्लेपा कुजे केजे कूर लोहाग्नि भेषजं ॥                               |
| ८७  | गंगा मुक्त<br>स्नानम्    | म.पु.स्वा.रो.उ.३<br>श्ले.रे.              | ४<br>१४       | शु.चं<br>शु.मं | शु. | मघा पुनर्वसु स्वाती रोहिणी तुला त्रये श्लेपा पांचरैव<br>त्याभगादे चंद्रवासे रिक्तायां शनिभासा के वासे रल गये                   |
| ८८  | रक्तमोक्षणा<br>तरस्नानम् | म.पु.स्वा.रो.उ.३<br>श्ले.रे.              | शु.           | शु.            | शु. | पौष्टिके रक्तमोक्षे तु स्नानं काले शुभं युतं रोहिणी रुधि<br>रश्रावे निध काले तु तत्स्मृतम् ॥                                   |
| ८९  | गंगा मुक्तव<br>हिर्गम    | ह.पु.रे.अ.अ.सू.<br>श्ले.म.                | शु.           | शु.            | शु. | सद्वारं गमनोक्तर्क्षे सतिथौ शोभने विधौ सल्लग्नये तोग<br>शुक्तस्य वह्निर्निसरां शुभं ॥  |
| ९०  | होलिकोत्स<br>वस्नानम्    | शुभ.                                      | शु.           | शु.            | शु. | रात्र गुणैपि सचंद्रो शोभनर्क्षे शुभे तिथौ होलिकाने<br>तरे स्नाया द्विमंदार दिने प्रजाः ॥                                       |
| ९१  | मल्ल<br>क्रिया           | जे.आ.भ.पू.३ सू.<br>श्ले.म.                | जया<br>पूर्णा | शु.            | शु. | ज्येष्ठा द्वाभरणी पूर्वा मूल श्लेपा मघा भिधे जया पूर्णा सुसदाशि<br>रे सांके शीर्षी द्यगको सत्वे दे के द्रुगः सांके मल्ल त्रीडा |

शुभायज्ञः

३३



|    |      |  |
|----|------|--|
| ३५ | तिथि |  |
| ३६ | मास  |  |

| शुभ ५७ नक्ष |             |         |                 | अथ यात्रा सुहृत् |                   |                   |                |                 |            | सेवेवर्ग     |               |             |              |
|-------------|-------------|---------|-----------------|------------------|-------------------|-------------------|----------------|-----------------|------------|--------------|---------------|-------------|--------------|
| तिथि        | वार         | नक्षत्र | पूर्वाह्नदिन    | मध्याह्न         |                   | अपरह्न            |                | रात्रोपूर्वाह्न |            | उद्दे रात्रे |               |             |              |
| कल          | पूर्व       | अशु.    | उद्दे           | वि.              | स. ज्ञे. ज्येष्ठा |                   | ह. अ.          |                 | स. रै. चि. |              | पू. उ. म.     |             | अ. अ. पु. श. |
| १           | २. शु.      | पु. शु. | क. वर्जम        |                  | ५५ द्रा           |                   | ५. सि. पुष्य.  |                 | ५. नु.     |              |               |             | स्वा.        |
| २           | ३. मं. च.   | म. ह.   | ग. शु. क. व. द. | १३ जीव. व.       | भोग               | नक्षत्र           | १५ म. न. प. द. | वारि दि. ग. शूल |            |              |               | नक्षत्र शूल |              |
| ३           | ४. पु. शि.  | र. अ.   | सु.             | सु. म.           | गं. लं. व.        | चं                | शु.            | ग. लं. व.       | १. अ.      | ग. ह.        |               |             |              |
| ४           | ५. च. श.    | च.      | सु.             | सु. म.           | गं. लं. व.        | चं                | शु.            | ग. लं. व.       | १. अ.      | ग. ह.        |               |             |              |
| ५           | ६. उ. न. र. | अ.      | चं              | सु. म.           | गं. लं. व.        | चं                | शु.            | ग. लं. व.       | १. अ.      | ग. ह.        |               | वि. न.      |              |
| ६           | ७. व.       | ह.      | चं. सु.         | म. थ.            | क्षयं             | चं. सु.           | म. थ.          | जय              | ५. ह.      | अ. थ.        |               |             |              |
| योग शूल     |             |         |                 | काल पास          |                   | महा लक्ष्मी योगनी |                | चंद्र वासः      |            | राशि         | रंग           |             |              |
|             | पू.         | ई.      | पू.             | अग्नि.           | ई.                | पू.               | अग्नि.         |                 | पू.        | च. शि.       | रक्त          |             |              |
|             | मं. व. न.   | पासि    | शनि             | शु.              | ५१३०              | ११११              | कामा           |                 | मं. सि.    | ध.           | युद्ध         |             |              |
| उ. भु.      | व्यात       | उत्तर   | मनुरा           | व.               | ग. ह. र. वी       |                   | वा. ग. ही      | उ.              | ह.         | ११११         | उ. जे. न. सि. |             |              |
|             | वैधृत       | सु.     | पास             | ह.               | उत्तर             | ११११              | ह. ५           | क. वृ.          | ह. क.      | ११११         | पौ. न. वी     |             |              |
|             | वय. न.      | वा.     |                 |                  | वा.               | प.                | न              | म.              |            | १०११         | स्याम         |             |              |
|             | प.          | चं.     |                 |                  | चंडिका            | ह. ११४            | वै. ल. वी      | मि. वृ.         |            | ६            | म. न्यु       |             |              |

पि  
३३



मु. च. ३४

| प्रकल योग                |     |    |    |    |    |    |    |    |    | कलाकुल             |     | कुलसधांक           |        | अथ शेषः    |               | इन भावों पजोये गह गालाट योग |     |     |    |     |       |
|--------------------------|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|--------------------|-----|--------------------|--------|------------|---------------|-----------------------------|-----|-----|----|-----|-------|
| स्वा. भ. ज्यो. ध. रे. न. |     |    |    |    |    |    |    |    |    | मृ. पा. ३३ रा. भि. |     | वृ. ३३ पुष्य ज. म. |        | वृ. ज. द.  |               | न.                          | प.  | वा. | उ. | ई.  | दिशा  |
| भू. म. उ. ३३ रा. भि.     |     |    |    |    |    |    |    |    |    | मृ. ३३ क. वि. चि.  |     | मृ. ३३ म.          |        | रा.        | श.            | चै.                         | वृ. | ह.  | गह |     |       |
| पा. भ. म. ११ रा. भि.     |     |    |    |    |    |    |    |    |    | निध. ११ रा. भि.    |     | वार. भू. म. निधि   |        | लग्न ११ १० | ह.            | ७                           | ५   | ४   | २  | भाव |       |
| श. चं. सु. वृ.           |     |    |    |    |    |    |    |    |    | वार. बुध           |     | १२ रा. १४ १४       |        | यात्री     | इन दशमने नवदे |                             |     |     |    | ३   | लाज्य |
| के                       | मा. | फा | चै | वि | जे | जा | आ  | भा | आ० | का                 | मा. | पूर्वादि           | दक्षिण | पश्चि.     | उत्तर         | राह चक्र म                  |     |     |    |     |       |
| १                        | २   | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११                 | १२  | सौरव               | केश    | भयक        | ध्यागम        | ई पू. न                     |     |     |    |     |       |
| २                        | ३   | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२                 | १   | मृत्य              | नख     | धला        | निष्प्र       | ३ १ ६                       |     |     |    |     |       |
| ३                        | ४   | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १                  | २   | इयना.              | दुख    | इपना       | धवकर          | ३ एकद ई                     |     |     |    |     |       |
| ४                        | ५   | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १  | २                  | ३   | लाभकर              | सौरव   | संगल       | वितला         | १ शाम ००३                   |     |     |    |     |       |
| ५                        | ६   | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १  | २  | ३                  | ४   | इयना               | मरा    | मरा        | सौरव          | ५ ५ ५                       |     |     |    |     |       |
| ६                        | ७   | ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १  | २  | ३  | ४                  | ५   | अतीभ               | लाभ    | इय         | इयाग          | २ ५ ६                       |     |     |    |     |       |
| ७                        | ८   | ९  | १० | ११ | १२ | १  | २  | ३  | ४  | ५                  | ६   | लाभ                | कह     | केश        | तिदह          |                             |     |     |    |     |       |
| ८                        | ९   | १० | ११ | १२ | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६                  | ७   | वाद्यय             | सौरव   | कार्य      | सुख           | परिधर चक्र                  |     |     |    |     |       |
| ९                        | १०  | ११ | १२ | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७                  | ८   | सौरव               | लाभ    | इयाग       | कह            | क. म. म. ३५ पु. ३३          |     |     |    |     |       |
| १०                       | ११  | १२ | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८                  | ९   | केश                | कह     | इयना       | धतीग          | म                           |     |     |    |     |       |
| ११                       | १२  | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९                  | १०  | मरा                | लाभ    | निध        | भूय           | म                           |     |     |    |     |       |
| १२                       | १   | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १०                 | ११  | इय                 | सौरव   | मरा        | कह            | म                           |     |     |    |     |       |



३५  
धर्म गेहे गता दौ च तत्काले समधारणं तत्ता  
भोजन च हानि स्यात् भोगान् जय र्नाथ धर्म  
गेहे गते सूर्ये अर्थ गेहे निशा करे यात्राया  
शुभे तत्र सिद्धि लाभो न संशयः आदित्ये धर्म  
भागे स्थे काम मार्गे निशा करे वजे मे राहरी  
यात्रा विग्रह स्वर्जने सहः धर्म मार्गे गते सूर्ये  
चंद्र मोक्ष ग्रहं गते गजा भूमिश्च लभं च  
वत्सरत्नादिकं लभेत्

| अर्थ   |      |      |       | मोक्ष |        |   |  |
|--|------|------|-------|-------|--------|---|--|
| अर्थ गेहे गते दौ च हानि यात्रा तदा भवेत्         | ध    | अ    | क     | मोक्ष | त      | विग्रहश्च भवत न राय युत रायमः का            |  |
| गत्वा संगम वात्रा ति अशुभ मृत्यु राय के          | म    | भ    | क     | श     | म      | गेहे गते सूर्ये चंद्र मोक्ष ग्रहं गते कुशलं |  |
| अर्थ गेहे दिन करे निशीशे काम संस्थिते            | पु   | पु   | आ     | म     | त      | त्र यात्रायां लाभं च बहुलं भवेत् कामगे      |  |
| सिद्धि कार्यणि नश्यति अन कार्य विशेष             | प्ले | न    | पू    | उ     | हे     | गते सूर्ये धर्म गेहे निशा करे लाभश्च वा     |  |
| तः अर्थ गेहे गते भानौ चंद्र मोक्ष ग्रहं गते      | वि   | स्ला | वि    | ह     | र्य    | संपन्ना यात्रा कुशलतां व्रजेत् कामगे        |  |
| गजा भूमि लाभं च शत्रु सैन्य पराजय                | नु   | जे   | म     | पू    | हे     | गते सूर्ये अर्थ गेहे निशा करे आरोग्य        |  |
| अर्थ मार्गे गते सूर्ये धर्म मार्गे सिधा करे अर्थ |      |      |       |       | स      | र्व संपत्ति पुन राया तिवेश्मनि ॥            |  |
| लाभ भवेत् न च धर्म नाना विधस्तदा ॥               |      |      |       |       |        |   |  |
| अर्थ गेहे गते दौ च हानि यात्रा तदा भवेत्         | ध    | अ    | मि    | उ     | मोक्ष  | मार्गे गते दौ च भयत न विनिर्दिशत            |  |
| गत्वा संगम वात्रा ति अशुभ मृत्यु राय के          | श    | पू   | उ     | रे    | भंग    | मृत्यो विना शौचा जायते नात्र संशयः मो       |  |
| अर्थ गेहे दिन करे निशीशे काम संस्थिते            | वादे | षपरि | हार्थ | भक्ष  | क्ष    | मार्गे दिन करे हिम गो धर्म संस्थितः ला      |  |
| सिद्धि कार्यणि नश्यति अन कार्य विशेष             | सु   | चंभु | रुशु  | शवा   | भार्व  | सिद्धि संपन्न विय प्राप्य ते कर्म मोक्ष     |  |
| तः अर्थ गेहे गते भानौ चंद्र मोक्ष ग्रहं गते      |      |      |       |       | मार्गे | दिन करे अर्थे च हिम मालिनी धैर्यं           |  |
| गजा भूमि लाभं च शत्रु सैन्य पराजय                |      |      |       |       | कुर्ये | ना यात्रा यां प्राप्ता फलतां व्रजेत् मोक्ष  |  |
| अर्थ मार्गे गते सूर्ये धर्म मार्गे सिधा करे अर्थ |      |      |       |       | मार्गे | गते भानु हिम गो कान संस्थितः                |  |
| लाभ भवेत् न च धर्म नाना विधस्तदा ॥               |      |      |       |       | का     | च न हानि स्यात् रोगी पीडालभत                |  |

शि  
३५



अथ द्वादश राशि घात चक्रं

दिग्दश

शु. सं. ३६

| राशि | मे | रु  | मि   | के  | सि  | कं  | तु   | रु    | ध     | म     | कुं | मी   | पु.     | ज.    | प    | के.    | प.     | वा     | उ.     | ई.   |
|------|----|-----|------|-----|-----|-----|------|-------|-------|-------|-----|------|---------|-------|------|--------|--------|--------|--------|------|
| सु.  | ४  | ८   | १२   | ५   | ४   | १   | ६    | १०    | ७     | ११    | २   | ३    | घा      | घातल  | तिल  | सु     | म      | न      | वि     | क    |
| चं.  | १  | ५   | ९    | २   | ६   | १०  | ३    | ७     | ८     | ८     | ११  | १२   |         |       |      |        |        |        |        |      |
| मं.  | ५  | ९   | १    | ६   | १०  | २   | ७    | ११    | ८     | १२    | ५   | ४    |         |       |      |        |        |        |        |      |
| तु.  | २  | ६   | १०   | ३   | ७   | ११  | ४    | ८     | ५     | ८     | १२  | १    |         |       |      |        |        |        |        |      |
| व.   | ६  | ३   | २    | ७   | १०  | ७   | ६    | १२    | ८     | १     | ४   | ५    |         |       |      |        |        |        |        |      |
| शु.  | ३  | ७   | ११   | ४   | ८   | १२  | ५    | ८     | ६     | १०    | १   | २    | विंडरही | हृदयव | कोजी | रुभगाम | रहीमिह | धीर    | तिलचाव | वस   |
| श.   | ७  | ११  | ३    | ८   | १२  | ४   | ८    | १     | १०    | २     | ५   | ६    |         |       |      |        |        |        |        |      |
| रा.  | ८  | १२  | ४    | ८   | १   | ५   | १०   | २     | १०    | ३     | ६   | ७    |         |       |      |        |        |        |        |      |
| के.  | ८  | ११  | ५    | १०  | २   | ६   | ११   | ३     | ११    | ४     | ५   | ६    |         |       |      |        |        |        |        |      |
| मा.  | का | सा  | पौ   | सा  | फा  | चै. | वै.  | ज्ये. | ज्या. | ज्या. | भा. | ज.   | केपव    | मंडल  | घात  | सत     | हविषा  | सर्नजल | पडे    | अनार |
| नि.  | नं | मू  | भ    | ज   | पू  | भ.  | रि.  | नं    | भ.    | रि    | ज.  | पू.  |         |       |      |        |        |        |        |      |
| वा.  | श. | रु. | चं   | तु. | श.  | चं  | रु.  | श.    | स.    | मै    | सू. | सु.  |         |       |      |        |        |        |        |      |
| न.   | म. | ह.  | स्वा | चु  | मू. | अ   | प्रा | रे    | भ.    | शे.   | ३३  | ह.   |         |       |      |        |        |        |        |      |
| योग  | इ  | वि  | सा   | सा  | धू  | सा  | प    | शु    | सा    | व     | ध   | व्या |         |       |      |        |        |        |        |      |

दि. २६



सु  
३७

|     |    |       |       |    |      |    |     |     |        |     |    |           |  |          |
|-----|----|-------|-------|----|------|----|-----|-----|--------|-----|----|-----------|--|----------|
| १   | २  | ३     | ४     | ५  | ६    | ७  | ८   | ९   | १०     | ११  | १२ | भावगणि    | उच्चक्षेत्रगतचंद्रप्रशीणश्च रविगुरुः       | संजीवन   |
| ०   | ०  | ०     | ०     | उ  | सू   | .  | .   | रु  | .      | .   | .  | भाज्ययोग  | भाग्ययोग्यगोनीचो पुत्रस्थाने शानियर        | पत्नीहान |
| .   | .  | म     | .     | .  | .    | .  | .   | रु  | .      | .   | .  | चिंतामणि  | उच्चमूलत्रिकोणाय वर्तते गुरुभागेव          | अभययोग   |
| स   | .  | .     | .     | .  | .    | .  | रु  | .   | .      | .   | .  | मयंजय     | एकक्षेत्रगो जीवशुक्रौ स्यातामन्योन्यसप्राग | भयंकर    |
| .   | .  | म     | .     | .  | सू   | .  | शु  | .   | .      | .   | .  | धनष       | सोचिं मूलत्रिकोणस्थे सोम्य प्राप विवर्जित  | अनंदयोग  |
| व   | .  | मे.पू | वृ    | .  | .    | वृ | .   | .   | उव     | श.म | .  | हिमाव     |  |          |
| रु  | .  | श     | शु    | .  | .    | वृ | .   | .   | उव     | सू  | .  | शत्रुजित  |  |          |
| सू  | .  | .     | .     | .  | श    | .  | .   | .   | व      | .   | .  | रिधजन     |  |          |
| वै  | .  | पा    | .     | .  | पा   | .  | .   | .   | सो     | या  | .  | निदिप्रयो |  |          |
| रु  | .  | श     | सो    | .  | .    | सो | हान | .   | सो     | सो  | .  | सिधयो     |  |          |
| रु  | .  | पा    | .     | .  | व    | .  | .   | .   | सो     | सो  | .  | वश्ययो    |  |          |
| वरी | जम | योगः  | .     | .  | .    | .  | .   | .   | सो     | व   | .  | नयनिधो    |  |          |
| सो  | .  | .     | सो    | .  | .    | सो | .   | .   | सो     | .   | .  | सिद्धयोग  |  |          |
| .   | .  | वृ    | .     | वृ | .    | .  | .   | .   | उ.च.शु | .   | .  | खदशेन     |  |          |
| वृ  | .  | वृ    | .     | वृ | .    | शु | .   | सू  | .      | श   | .  | वापीरूप   |  |          |
| सो  | सो | ऊ     | सो    | सो | ऊ    | सो | .   | सो  | सो     | ऊ   | .  | शांति     |  |          |
| सो  | .  | .     | सो    | .  | रु   | वृ | .   | इलो | मा     | .   | .  | विजय      |  |          |
| साश | लय | .     | .     | .  | .    | .  | .   | .   | .      | .   | .  | शरव       |  |          |
| सो  | वृ | .     | .     | .  | .    | .  | .   | .   | .      | .   | .  | अविजय     |  |          |
| वृ  | रु | शु    | वर्गो | तम | लग्न | .  | .   | .   | .      | .   | .  | जययोग     |  |          |
| सो  | .  | .     | सो    | .  | सो   | .  | .   | सो  | पा     | .   | .  | कल्याण    |  |          |
| शु  | .  | .     | वृ    | .  | .    | .  | .   | रु  | .      | .   | .  | सिंहयोग   |  |          |
| .   | .  | .     | .     | .  | मसू  | .  | .   | .   | .      | बल  | .  | नक्षत्रप  |  |          |

लग्ने चंद्रे वापि वर्गे तमस्थे यात्रा प्राक्का वांछितार्थे  
 कदात्री अंभो एषो वातदंशे प्रष्टे तनो कायानेका  
 यानं सर्वसिद्धिप्रदायि दिग्द्वारभेलग्ने गते प्रशस्ता  
 यात्रार्थदात्री जयकारणी च हार्नि विनाशे रिपुनौ  
 भयं च कुर्या तथा दिक्प्रतिलोम लग्ने ॥  
 केद्रे दिग्धीशे गच्छेदवनीश ॥  
 प्राच्यादौ तरणि स्तनौ मृगसुतो लाभव्यये भूमनः  
 कर्मस्थाय तमोन वाष्टम गृहे सौरिस्तथामहमे ॥  
 चंद्रशत्रु गृहात्मजैपिव बुधपाताल गोरी ध्यति  
 चित्तभात गृह विलग्न सदना लल्लाटकार्केतिना



मुच...

३८

| अथ नक्षत्र दोहक                 |   |        |                 |         |       |           | प्रस्थान दिन ३ तथा ५ वा ७ रवें  |   | सु. सु. |
|---------------------------------|---|--------|-----------------|---------|-------|-----------|---|---|---------|
| अ<br>भ<br>क<br>र<br>म<br>ज<br>उ | कुम्भी  | म्ले.  | कसारऽनु.        | चित्रान | श.    | जौ का आरा | अपने घर से २००० हाथ ५०० धनव   | म<br>उ<br>त<br>र<br>प<br>न<br>म<br>र<br>म |         |
|                                 | मिथु  | म.     | वीर. जे.        | श्रीफल  | पू.भा | मही आदि   | गवनऽनु. न. च. ध. रे. पु. ध्य.   |   |         |
|                                 | उत्तर   | पू. का | पपेय कामां. मू. | कछुवा   | उ. भा | मिसा आरा  | हरना जे ११ आ चिस्वा. रो.  |   |         |
|                                 | हरी   | उ. का  | खर गोशमां पुष   | शणैष    | रे.   | वही जन्म  | यात्रा क मू. पु. चि.  |   |         |
|                                 | मकर   | ह.     | सरी चाव उ. पा.  | धानधी   | ००    | ० ० ०     | पूर्व दक्षिण १ पश्चिम उत्तर दिशा  |   |         |
| अ<br>भ<br>क<br>र<br>म<br>ज<br>उ | चि  | वि.    | खखरीमां मि      | मृगचाव  | ००    | ० ० ०     | हमी रय घंटा पालकी सवारी   | म<br>उ<br>त<br>र<br>प<br>न<br>म<br>र<br>म |         |
|                                 | उत्तर   | स्वा   | फल शरम अ        | कसार    | ००    | ० ० ०     | उपका म. मान साथ लय रत नान्य   |   |         |
|                                 | हरी   | वि.    | हृदि धी. ध.     | मृ. ग   | ००    | ० ० ०     |   |   |         |
|                                 |   |        |                 |         |       |           |   |   |         |
|                                 |   |        |                 |         |       |           |   |   |         |
| अ<br>भ<br>क<br>र<br>म<br>ज<br>उ | विप्रश्चम फलान् न दृग्धमि गो सिद्धार्थं वाता वरवे शया वाध मधुर त्रय केन क्षत्र से च न न क्षत्र न क वि   |        |                 |         |       |           | न कुम्भ ध्वे क पश्चामिष सहा क्य कुसमं क्षु पूर्य कलशं कृत्वा गि। निवि गुण कर २ ति धि वा मोड             |   |         |
|                                 | मृत् कन्य कारन्ना श्रि य सिना ह्म मृच त सत स्त्री दी ति वै श्या नारा १ र्द का भाग से जो ७ व च दि व र हो |        |                 |         |       |           | मृत् कन्य कारन्ना श्रि य सिना ह्म मृच त सत स्त्री दी ति वै श्या नारा १ र्द का भाग से जो ७ व च दि व र हो |   |         |
|                                 | मृत् कन्य कारन्ना श्रि य सिना ह्म मृच त सत स्त्री दी ति वै श्या नारा १ र्द का भाग से जो ७ व च दि व र हो |        |                 |         |       |           | मृत् कन्य कारन्ना श्रि य सिना ह्म मृच त सत स्त्री दी ति वै श्या नारा १ र्द का भाग से जो ७ व च दि व र हो |   |         |
|                                 | मृत् कन्य कारन्ना श्रि य सिना ह्म मृच त सत स्त्री दी ति वै श्या नारा १ र्द का भाग से जो ७ व च दि व र हो |        |                 |         |       |           | मृत् कन्य कारन्ना श्रि य सिना ह्म मृच त सत स्त्री दी ति वै श्या नारा १ र्द का भाग से जो ७ व च दि व र हो |   |         |
|                                 | मृत् कन्य कारन्ना श्रि य सिना ह्म मृच त सत स्त्री दी ति वै श्या नारा १ र्द का भाग से जो ७ व च दि व र हो |        |                 |         |       |           | मृत् कन्य कारन्ना श्रि य सिना ह्म मृच त सत स्त्री दी ति वै श्या नारा १ र्द का भाग से जो ७ व च दि व र हो |   |         |
| अ<br>भ<br>क<br>र<br>म<br>ज<br>उ | ग सधाता अ मक स्त्री पुष्य स्वरट खगह देन भारजार यदं क्षुत मृ २   |        |                 |         |       |           | गिन ७ का भाग दि जो २ व च म ह्म  |   |         |
|                                 | ग सधाता अ मक स्त्री पुष्य स्वरट खगह देन भारजार यदं क्षुत मृ २   |        |                 |         |       |           | गिन ७ का भाग दि जो २ व च म ह्म  |   |         |
|                                 | ग सधाता अ मक स्त्री पुष्य स्वरट खगह देन भारजार यदं क्षुत मृ २   |        |                 |         |       |           | गिन ७ का भाग दि जो २ व च म ह्म  |   |         |
|                                 | ग सधाता अ मक स्त्री पुष्य स्वरट खगह देन भारजार यदं क्षुत मृ २   |        |                 |         |       |           | गिन ७ का भाग दि जो २ व च म ह्म  |   |         |
|                                 | ग सधाता अ मक स्त्री पुष्य स्वरट खगह देन भारजार यदं क्षुत मृ २   |        |                 |         |       |           | गिन ७ का भाग दि जो २ व च म ह्म  |   |         |
| अ<br>भ<br>क<br>र<br>म<br>ज<br>उ | पुद्ग वेप विना दे व कुमारी पूजने तथा राज सेवा तथा पात्र धात चंद्र                                       |        |                 |         |       |           | (ति+वा+न+)... वचे हान   |   |         |
|                                 | विद र्जयेत् तीर्थ गन्ना विवानं प्रसना पनय न्ना दि सु मां गल्य सर्व कार्ये                               |        |                 |         |       |           | (ति+वौ+न)... वचे रिपु मय  |   |         |
|                                 | सु धात चंद्र म चिंतयेत् ॥   |        |                 |         |       |           | ३ (ति+वा+न+)... वचे हलु   |   |         |
|                                 | सु धात चंद्र म चिंतयेत् ॥   |        |                 |         |       |           | ३ (ति+वा+न+)... वचे हलु   |   |         |
|                                 | सु धात चंद्र म चिंतयेत् ॥   |        |                 |         |       |           | ३ (ति+वा+न+)... वचे हलु   |   |         |



मन्त्र  
३३

१९

| सूर्यचक्रम् |             |         |      | पाषाणगुरुचक्रम्    |                 |     |     | वायुगुरुचक्रम् |                 |        |   | विषमक्षत्र |                 | पंचम |     | मार्गेशिवचक्रम् |                 |     |  |  |
|-------------|-------------|---------|------|--------------------|-----------------|-----|-----|----------------|-----------------|--------|---|------------|-----------------|------|-----|-----------------|-----------------|-----|--|--|
| श्री.म.व.   |             |         |      | १६ई.               | ५४              | अ०४ | दृ० | ५              | अ०५             | कृतकाल |   | ५          | ५               | ५    | ५   | ५               | ५               | ५   |  |  |
| धनकुंठ      | ज्येष्ठशुभं | द.मि.क. | २८उ. | ०                  | २१२             | ०३  | ०   | २              | ५               | ७      | ७ | ५          | ७               | २.५० | ५.५ | २५              | २५              | २५  |  |  |
| क.स.व.      |             |         |      | वा०                | ५२०             | ५३२ | ५४४ | ५५६            | ५६८             | ५९०    |   | ६००        | ६१०             | ६२०  | ६३० | ६४०             | ६५०             | ६६० |  |  |
| वारयोगिनी   | ०ई.         | ५       | ५    | मंदेदुनदानवमीचं    | ति.१२०।१२ कल    |     |     |                | ति.१२०।१२ कल    |        |   |            | ति.१२०।१२ कल    |      |     |                 | ति.१२०।१२ कल    |     |  |  |
|             | ५           | ५       | ५    | ज्येष्ठाचलीममासाप  | २।१४वा.प्रा.वु. |     |     |                | २।१४वा.प्रा.वु. |        |   |            | २।१४वा.प्रा.वु. |      |     |                 | २।१४वा.प्रा.वु. |     |  |  |
|             | ५           | ५       | ५    | मघश्रवश्रमलोचस्था  | लग्नचंद्र १२३३  |     |     |                | लग्नचंद्र १२३३  |        |   |            | लग्नचंद्र १२३३  |      |     |                 | लग्नचंद्र १२३३  |     |  |  |
|             | ५           | ५       | ५    | नलकुंभलग्नविवर्जये | गुरुनहो ईशाने   |     |     |                | गुरुनहो ईशाने   |        |   |            | गुरुनहो ईशाने   |      |     |                 | गुरुनहो ईशाने   |     |  |  |
| आमभात       | ५           | ५       | ५    | वर्षादिशे प्रायागो | ति.१२०।१२ कल    |     |     |                | ति.१२०।१२ कल    |        |   |            | ति.१२०।१२ कल    |      |     |                 | ति.१२०।१२ कल    |     |  |  |
|             | ५           | ५       | ५    | कश्चिद्विवा        | वा.स.तु.म.च.    |     |     |                | वा.स.तु.म.च.    |        |   |            | वा.स.तु.म.च.    |      |     |                 | वा.स.तु.म.च.    |     |  |  |
|             | ५           | ५       | ५    | शिवश्रभार          | व.ज.का.ह.रे     |     |     |                | व.ज.का.ह.रे     |        |   |            | व.ज.का.ह.रे     |      |     |                 | व.ज.का.ह.रे     |     |  |  |
|             | ५           | ५       | ५    | हाजश्रमंगल         | ल.३।५५.५४नहो    |     |     |                | ल.३।५५.५४नहो    |        |   |            | ल.३।५५.५४नहो    |      |     |                 | ल.३।५५.५४नहो    |     |  |  |
| मस्त        | हृदि        | एष्ट    | गुरा | पाद                | ति.१२०।१२ कल    |     |     |                | ति.१२०।१२ कल    |        |   |            | ति.१२०।१२ कल    |      |     |                 | ति.१२०।१२ कल    |     |  |  |
| ७           | ७           | ७       | ७    | ह                  | १२०।१२ कल       |     |     |                | १२०।१२ कल       |        |   |            | १२०।१२ कल       |      |     |                 | १२०।१२ कल       |     |  |  |
| राज्यं      | धनं         | —       | मत्प | भय                 | मचंद्रहोयतोत्या |     |     |                | मचंद्रहोयतोत्या |        |   |            | मचंद्रहोयतोत्या |      |     |                 | मचंद्रहोयतोत्या |     |  |  |
|             |             |         |      |                    | ज्य वाच्य       |     |     |                | ज्य वाच्य       |        |   |            | ज्य वाच्य       |      |     |                 | ज्य वाच्य       |     |  |  |

३२



मुच  
ही  
४०

|  |           |                                    |                           |         |         |  |    |            |    |           |         |                |
|--|-----------|------------------------------------|---------------------------|---------|---------|--|----|------------|----|-----------|---------|----------------|
| विष्णु प्रतिष्ठा अ. ध. पु. पु. म. न. न. उ. श. र. र. पा. वा. र. दि. मु. ल. र्हीत. ५३३११ |           |                                    |                           |         |         | ५  | २० | ८          | १२ | १८        | २६      | वर्तमाननक्षत्र |
| यद्यपि शो चोग राक्षसश्च सात्वती भूतगणेषु सिद्धाणामप्रतिष्ठा क्रियते जीवेयुः कार्यसु    |           |                                    |                           |         |         | भये नक्षत्रं होतो दृष्टी सुप्त खोद ना कृपादि ग्रहनिव श्रेष्ठ नही |    |            |    |           |         |                |
| दुर्गा   | शिव       | लोकपाल                             | उरुषि                     | जीव     | दंड     | श.   | व. |            |    | मु. व.    | मे. शु. |                |
| उ. उ. ह. मू.   | ५ द्रोण   | रो. उ. ३५.                         | श.                        | म.      | जे. र.  | श.   | व. |            |    | मु. व.    | मे. शु. |                |
| ल. दी. दी. १२  | ल. पा. ३  | ल. रा. ८११                         | ल. रा. ८११                | रा. ८११ | रा. ८११ | श.   | व. |            |    | मु. व.    | मे. शु. |                |
| ध्वजकाल प्रादि   |           | रो. मु. उ. ३५. म. अ.               |                           |         |         | ५५ यु. ८० वर्ष   |    | ५५ यु. ८०  |    | ५५ यु. ८० |         |                |
| तिथि काल चक्रं   |           | एको ज्ञेय सिनेषु पंचमतयः केंद्रेषु |                           |         |         | श.   | व. |            |    | मु. व.    | मे. शु. |                |
| धारी १५  | मु. पूर्व | शु. २११२                           | योगस्तथा होवेत धि योग एषु |         |         | श.   | व. |            |    | मु. व.    | मे. शु. |                |
| क. ई   | १६११      | अ. ३                               | मकला योगाधि               |         |         | ५५ यु. १००   |    | ५५ यु. २०० |    | ५५ यु. ८० |         | प्रवेष्टा      |
| श. ८१३   |           | शु. ३१८१३                          | योगस्ततः योगे हो          |         |         | श.   | व. |            |    | मु. व.    | मे. शु. |                |
| उ. क.  |           | अ. ३१८१३                           | म गथा धि योग ग.           |         |         | श.   | व. |            |    | मु. व.    | मे. शु. |                |
| वा   | प         | नै. शु.                            | मने क्षेम रि पूणां वध     |         |         | श.   | व. |            |    | मु. व.    | मे. शु. |                |
| २११२   | १६११      | धारी १५                            | चाथो क्षेम म पूणां व      |         |         | श.   | व. |            |    | मु. व.    | मे. शु. |                |
| क.   | क.        |                                    | नी श्वल भते योगा          |         |         | श.   | व. |            |    | मु. व.    | मे. शु. |                |
|  |           |                                    | धि योगे व्रजम् ॥          |         |         | श.   | व. |            |    | मु. व.    | मे. शु. |                |

प्रि.  
४०



१५

| सुच.टी  |                       | ग्रहार्थमुद्घर्त                   |            |  |  |
|---|-----------------------|------------------------------------|------------|--|--|
| ४१  | पूर्व पश्चिम          | उत्तर । दक्षिण                     | दिग        | कुंभः कैं फाल्गुने प्राक्ः परमुख ग्रहं श्रवणे सिंह कर्क पौषेन                                    |  |
|   | कर्क सिंह<br>मकर कुंभ | तुला मेष वृष<br>पश्चिम             | सूर्य      | कैंच याम्यौ चरमुख सदन गोजगै कैंच राधे यागैजू कालिगे सत   |  |
| उ. ३. ४. ५. ६. ७. ८. ९. १०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. |                       | नक्षत्र<br>लग्न                    |            | ध्रुव मृदु वरुण स्वाति वस्वर्के पुष्ये सती गंह त्वदित्या हरि भवि<br>धिभयो स्तत्र शास्तः प्रवेशः  |  |
| २३३५।३।१३।१०।१५।११  |                       | तिथि<br>वार                        |            | आश्वनी सौम्य आदित्या भित्रं चैव रेवती हस्त त्रयं तथा वृषा<br>तिर्यवक्रा प्रकीर्तिता कडी तरवते गे |  |
| निवकाचक्र सूर्य के नक्षत्र से   |                       | गोहाद्यार्थं कैं भाद्र पौष रमै दहा |            | कूपचक्र देशो   |  |
| धिर   | अ. पा.                | वि. पा.                            | पृष्ठ      | ऽ पू   | वद भैरव पादे शून्य वेदेः पृष्ठ पादेः स्थिर |
| ३   | ४                     | ४                                  | ३          | नक्षत्र  | तं रमै पृष्ठे श्रीयुगे दक्ष कुक्षौ लाभौ    |
| दाह   | शून्य                 | स्थिर                              | श्रीदा     | फल   | रमै पुच्छगे स्वामी नाशो वेदेने श्रवाम      |
| द. कु.  | पुच्छ                 | वा. कु.                            | मुख        | ऽ ग  | कुक्षौ मुख स्थै रमै पीडा-                  |
| ४   | ३                     | ४                                  | ३          | नक्षत्र  |  |
| लाभ   | खानाः                 | शून्य                              | दुःख       | फल   | अथो मुखे भै विदधीत                         |
| राशि  | मुख                   | पात                                | राशि       | मु. पा.  | खातं तिर्य मुखं स्थापन                     |
| ५।६।७   | इशान                  | अग्नि.                             | २।३।४      | अ. ने.   | काष्ट काश्च ॥                              |
| ८।९।१०  | वायव्य                | ईशान                               | राहुचक्रम् |  |  |
| ११।१२।१३  | नैऋत                  | वायव्य                             |            |  |  |
|   |                       |                                    |            | क्षारजलं   | खंडजलं                                     |
|   |                       |                                    |            | मिश्रजलं   | स्वादजलं                                   |
|   |                       |                                    |            | शिलाः ३  | स्वादजलं ३                                 |
|   |                       |                                    |            | स्वादुदकं ३  | जल क्षय ३                                  |
|   |                       |                                    |            | क्षारजलं   | स्वादजलं ३                                 |

शि.  
४१



सु. च.  
दी.  
४२

भवसूषण मेवपुष्पचशंकाकोदस्नाचिवानलेचादिनेचगुरुशुक्रचंद्रार्किसौम्यपुवारतिथोनंदपूजाजया॥  
 वारिषातरो.उ.३ध.प्रा.म.म.ऽनु.ह.  
 हारसाया.अ.उ.३ह.पु.पु.म.स्वा.रे.रो.  
 यहप्रवेशउ.३रो.ऽनु.रे.म.चि.वा.व.शु.चववामेरविदोषो  
 जीर्णप्रवेशध.प्रा.पुष्प.उ.३रो.म.चि.स्वा.ऽनु.रे.  
 नवदुर्गप्र.जे.रे.दे.चि.स्वा.पु.शु.ध.शु.उ.३ऽनु.  
 देहराप्रति।उ.रे.पु.रो.म.अ.ध.प्रा.उ.३ह.चि.स्वा.पु.  
 तपडम.अ.म.पु.पु.प्ले.ह.चि.२जो.अरे.वाचंव.प्रा.वुति.  
 पित्रकिय.अ.म.पु.३ह.३जे.शु.रे.वाचंव.प्रा.वुति.रकारहि  
 राजामिल.अ.रो.म.पु.क.उ.३हचि.ऽनु.अ.ध.रे.  
 नवीग्रामम.चि.ऽनु.उ.३रे.रो.ध.स्वा.वा.वु.व.शु.  
 होमकागक.रो.म.पु.जेउशे.चि.वि.वा.चं.र.व.शु.  
 सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक आहुती  
 सु. बु. शु. प्रा. च. मं. व. के. रा.  
 ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३  
 शु. शु. शु. शु. शु. शु. शु. शु. शु.

| यो चक्र सूर्य के नक्षत्र सरत्राघठमे प्रवेश<br>चक्र गविनक |          |         |   |       |         |
|--|----------|---------|---|-------|---------|
| ४  | शिर      | लक्ष्मा | ९ | वज्र  | ऽग्नि.  |
| ८  | कौक      | उदवसन   | ४ | पूव   | उदवस    |
| ८  | सारवा    | सारव    | ७ | दक्ष  | लोभ     |
| २  | देहली    | मस      | ४ | पशु   | श्री.न. |
| ४  | भय       | १९।१२   | ४ | उत्तर | कलि     |
| पूर्व  | रा.दे.१० | रा.दे.  | ४ | गर्भ  | विनाश   |
| ह.   | ५।६।७    | ५।६     | ३ | गुदा  | स्थय्य  |
| प.   | २।३।४    |         | ५ |       |         |
| उ.   | १९।१२    | १३।३०।  | ३ | कंठ   | स्थिर   |

तिथ्यवारके पाग में १ जोडे. ४ भाग देजो  
 शुभचैतोविवन्हवास शुनेष्टजोवचैतो  
 स्वार्ग॥ राहचक्रम  
 ३इ वा नै. अति. ३. ॥

मीमेवमीकसिंक तवधमकुंदे बालसि  
 कनु बुधमकुमी मे वमक गेहपुकमी  
 पेहुमिकमिकतबुधजल्वरश ॥

शि  
४२



| अथ संक्रांति चक्रम      |         |        |          |        |        |         |         |         |        |        |                 |              |
|-------------------------|---------|--------|----------|--------|--------|---------|---------|---------|--------|--------|-----------------|--------------|
| बब                      | वाल     | को.    | तै.      | गर     | वार्ग  | दृष्टि  | पाकु    | चत      | नाग    | किस    | वार्ग           | समिश्मू४५    |
| वैठी                    | वैठी    | उभी    | सूती     | वैठी   | वैठी   | वैठी    | उभी     | सूती    | सूती   | उभी    | आसन             | पु-विरोपु.   |
| सि                      | व्याघ्र | वराह   | रसभगधा   | वज्र   | महिष   | अश्ले   | श्वान   | मेढा    | वैल    | कुकुट  | वाहन            | उन्नाभाइपद   |
| स्वेत                   | पति     | हरित   | पांडु    | रक्त   | कृष्ण  | काला    | चित्र   | कवल     | दिग    | धनाम   | वस्त्र          | उन्नापाड     |
| मुयुंड़ी                | गक्ष    | खंड    | हंड      | धनुष   | तोमर   | कुंत    | पाश     | अंकुश   | अस्त्र | वाण    | युध             | उन्नाकानाम   |
| अन्न                    | बीर     | भैक्ष  | पक्वान   | दुग्ध  | दही    | चित्रान | गुड     | मंशू    | घृत    | शर्करा | भोज             | नामवत्स      |
| कस्तूरी                 | केसर    | चंदन   | मृत्तिका | गोगोचन | श्लक्त | कौतद    | हरिद्रा | कज्जल   | आगर    | कर्पूर | लेपन            | दुभिश्म१४    |
| देवता                   | भूत     | सर्प   | पक्षी    | पशु    | मृग    | विप्र   | क्षत्री | वैश्य   | शूद्र  | शंकर   | जात             | म.५५ द्राष्ट |
| पुत्राग                 | जायनी   | वकुल   | केतकी    | विल्व  | आक     | दुर्वा  | कमल     | माल     | पाइल   | जयि    | पुष्प           | स्वा.जे.पा.  |
| नूपुर                   | किकिनी  | मुक्ता | विहय     | कंकण   | माली   | गजा     | कौडी    | नील     | हारा   | पुंनाग | ५५मरी           | नामजधन्य     |
| वाल                     | कुसारी  | रडा    | जवान     | पोटा   | मालभा  | बूडा    | वंध्या  | तिवंध्य | अस्त्र | बोडा   | वय              | समानास३०     |
| संक्रांतिके अधमक्षत्रसै |         |        |          |        | यंशौ   | सुख     | पीडी    | सुख     | यंशौ   | धन     | अ.क.च.पु.स.पु.३ | ४३           |
| ह.वि.५.म.अ.प.५.नामवत्ता |         |        |          |        |        |         |         |         |        |        |                 |              |



| देवता    | देसोच्चावि | देवता  | गन      | जंत    | पूर्वा | ३० |
|----------|------------|--------|---------|--------|--------|----|
| उत्तरभा  | दुष्यन्त   | मानव   | गो      | भय     | पर     | २४ |
| पूर्वाभा | सेसोदीर    | मानव   | सिंह    | ३३दि   | पर     | २४ |
| शतभि     | गोमपि      | राक्षस | ऽश्व    | ३३दि   | पर     | २८ |
| धनिष्टा  | गर्गगरो    | राक्षस | सिंह    | मध्य   | पर     | २० |
| अवगा     | विषुवेषो   | देव    | वान     | अंत    | पर     | २० |
| इ.पा.    | अभोजि      | मानव   | गाम     | अंत    | पर     | २० |
| ए.वा.    | शुधाकर     | मानव   | वानर    | मध्य   | पर     | २८ |
| मूल      | येयोभसि    | राक्षस | खान     | ३३दि   | पर     | २६ |
| जंझा     | नोयपिपू    | राक्षस | मगा     | ३३दि   | पर     | २४ |
| इनुगा    | नननून      | देवता  | मगा     | ३३दि   | पर     | २० |
| विशा     | वतीनंत     | राक्षस | व्याघ्र | अंत    | मध्य   | २४ |
| साति     | रोसेना     | देव    | महिष    | अन्त्य | मध्य   | २४ |
| चित्रा   | पेयोरा     | राक्षस | व्याघ्र | मध्य   | मध्य   | २० |
| हस्त     | पुषाण      | देवता  | महिष    | आदि    | मध्य   | २२ |
| उताका    | दंटापापी   | मानव   | गो      | आदि    | मध्य   | २८ |
| यू.का.   | मोटादि     | मानव   | मुषा    | मध्य   | मध्य   | २० |
| मघा      | ममीमू      | राक्षस | मुषा    | अंत    | मध्य   | ३० |
| प्लेपा   | इडीड       | राक्षस | मार्जार | अंत    | मध्य   | ३२ |
| पुष्य    | हृहोडा     | देवता  | वक्रो   | मध्य   | मध्य   | २० |
| पुन.     | ककोहो      | देवता  | मार्जार | आदि    | मध्य   | ३० |
| आर्दी    | कुपडक      | मानव   | अधान    | आदि    | मध्य   | २१ |
| मगाशि    | वेवोका     | देवता  | नागा    | मध्य   | पूर्व  | २४ |
| रोहिणी   | शोवादि     | मानव   | सर्प    | अंत    | पूर्व  | ४० |
| कनिका    | आइश        | राक्षस | काग     | अंत    | पूर्व  | ३० |
| भरणी     | लिबले      | मानव   | गज      | मध्य   | पूर्व  | २४ |
| शुभ्र    | चुचेचो     | देवता  | अश्व    | ३३दि   | पूर्व  | ५० |
| नक्षत्र  | चनेनक्ष    | गण     | योनि    | माडी   | भगा    | ०  |

एतविंशघटिका नक्षत्र मुक्ति चरित्रे राशि कजे निकाल लेकर भयाल गुरा विंशघटी वटी भभाग पर वरा कोरे



च. टी.  
४५

| वर्णचक्रं | राशि   | वैशचक्रं | राशि       | ताराचक्रम्   |
|-----------|--------|----------|------------|--|
| ब्राह्मण  | १२।४।८ | चतुष्पद  | १०।१।५।८।२ | बगके नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिने फिर भाग<br>८ का दे तो वचे तो तारा ॥ |
| क्षत्री   | १।५।८  | द्विपद   | ७।३।६।५।८  |  |
| वैश्य     | २।६।१० | कीटक     | ४।८        |  |
| शूद्र     | ३।७।११ | जलचर     | १०।५।११।१२ | जन्म सं. वि. क्षे. प्र. सा. व. मे. : निमे.                                   |

| मैत्री सम शत्रु चक्रम् |       |      |       |      |     |      |       | भकूटचक्र |       |      |      |      |      |      |      |      |       |      |       |
|------------------------|-------|------|-------|------|-----|------|-------|----------|-------|------|------|------|------|------|------|------|-------|------|-------|
| स.                     | च.    | मं.  | व.    | वृ.  | शु. | श.   | ग.    | १        | २     | ३    | ४    | ५    | ६    | ७    | ८    | ९    | १०    | ११   | १२    |
| व.सं.                  | व.    | सूचं | सूचं  | सूचं | व.  | व.   | मित्र | प्रा     | प्रा  | प्रा | मि   | प्रा | मि   | प्रा | मि   | प्रा | मि.   | प्रा | मि.   |
| च.                     | सू.   | ह.   | सू.   | मं.  | श.  | शु.  |       | ६        | ७     | ८    | ९    | १०   | ११   | १२   | १    | २    | ३     | ४    | ५     |
| व.                     | मं.व. | शु.  | मं.व. | श.   | व.  | व.   | सम    | मि.      | प्रा. | मि.  | प्रा | मि   | प्रा | मि.  | प्रा | मि   | प्रा. | मि.  | प्रा. |
|                        | शु.श. | श.   | श.    |      | मं. |      |       | ८        | ९     | १०   | ११   | १२   | १    | २    | ३    | ४    | ५     | ६    | ७     |
| शु.                    |       |      |       | व.   | सू. | सूचं | शत्रु | वैशी     | वैश्य | तारा | यानि | शुभ  | ग    | भा.  | ना.  |      |       |      |       |
| श.                     | +     | व.   | चं.   | शु.  | चं. | मं.  |       | १        | २     | ३    | ४    | ५    | ६    | ७    | ८    |      |       |      |       |

नवर्ग वर्णो नगणो यानिदिहा दृष्टौ चैव षडाष्टके वा तारा विरुद्धे न न पंन सस्याद्रा श्रीप्रा मैत्री शुभ  
 दो विवादे। १। ह्रीण वर्णो यदा राशी राशीप्रो वर्णा मुत्तमं ॥ तदा राशीश्रुगे ग्राह्यो तस्य राशिं न चिंतये  
 त राश्ये केचिदिन्न गृह्यं द्वयोः स्थानक्षत्रं को राशि युग्मं तथैव चः नाडी दोषो नो गणा नीच दोषो न  
 क्षत्रे को पाद भेद शुभ स्यात् ॥

शि  
४५



| देवती    | देसोच्चावि | देवता | गज      | अंत  | पूर्व | ३० |
|----------|------------|-------|---------|------|-------|----|
| उत्तरभा  | दृष्टमज    | मानव  | गो      | अध   | पर    | २४ |
| पूर्वाभा | सरोरदरि    | मानव  | सिंह    | ३३दि | पर    | २४ |
| शतभि     | गोसासि     | गक्षस | ऽज्व    | ३३दि | पर    | २८ |
| धनिष्ठा  | गर्गामरो   | गक्षस | सिंह    | अध   | पर    | २० |
| अवला     | विषुवेषो   | देव   | वान     | अंत  | पर    | २० |
| दृ. पा.  | अभोजनि     | मानव  | गज      | अंत  | पर    | २० |
| तु. पा.  | अथाकर      | मानव  | वानर    | अध   | पर    | २८ |
| मूल      | येयोभसि    | गक्षस | सान     | ३३दि | पर    | ३६ |
| अंक्षा   | नैयामिषू   | गक्षस | मृगा    | ३३दि | पर    | २४ |
| ऽनुाथा   | नैननैते    | देवता | मृगा    | ३३दि | पर    | २० |
| विष्णु   | नतीनते     | गक्षस | व्याघ्र | अंत  | अध    | २४ |
| स्वाति   | रोरेता     | देव   | महिष    | अन्त | अध    | २४ |
| चित्रा   | पेयोपरी    | गक्षस | व्याघ्र | अध   | अध    | २० |
| दस्त     | पुषाण      | देवता | महिष    | आदि  | अध    | २८ |
| उता.का   | दंटापापी   | मानव  | गो      | अध   | अध    | २० |
| पृ. का.  | मोटादि     | मानव  | मुषा    | अंत  | अध    | ३० |
| मघा      | ममीप्रे    | गक्षस | मुषा    | अंत  | अध    | ३२ |
| अनेषा    | ददीरु      | गक्षस | मार्जार | अंत  | अध    | २० |
| पुष्य    | हृदेहोडा   | देवता | वकरी    | अध   | अध    | २० |
| पुन.     | केकोहरी    | देवता | मार्जार | आदि  | अध    | ३० |
| आर्द्रा  | कुवडक      | मानव  | अवान    | आदि  | अध    | २२ |
| मृगशिरा  | वेवोका.    | देवता | नागा    | अध   | पूर्व | २४ |
| रोहिणी   | जोवावि.    | मानव  | सर्प    | अंत  | पूर्व | ४० |
| कनिका    | आईशर       | गक्षस | कागा    | अंत  | पूर्व | ३० |
| अराणी    | लिखले      | मानव  | गज      | अध   | पूर्व | २४ |
| अश्वि.   | चुचेचो.    | देवता | अश्व    | ३३दि | पूर्व | ३० |
| नक्षत्र  | चर्ननक्ष   | गण    | योगि    | नाडी | भागा  | ०  |

विहैवरापरभाभवीवटीघटीविंशगुराभयानलेनिकाललेनैराशिकमुक्तिचरनैराशिकनक्षत्रविंशघटीकाल



सु. च. दी  
४५

| वर्णचक्रं | राशि   | वैशचक्रं | राशि       | ताराचक्रम्  |
|-----------|--------|----------|------------|---|
| ब्राह्मण  | १२।४।८ | चतुष्पद  | १०।१।५।८।२ | वर्के नक्षत्रसे कन्याके नक्षत्र तक गिने फिर भाग<br>८ का दे तो वचे तो तारा ॥ |
| क्षेत्री  | १।५।८  | द्विपद   | ७।३।६।५।८  |   |
| वैश्य     | १।६।१० | कीटक     | ४।८        |   |
| शूद्र     | ३।७।११ | जलचर     | १०।५।११।१२ | जन्म सं. वि. क्षे. प्र. सा. व. मै. निमै.                                    |

| मैत्री समप्रानुचक्रम् |        |      |        |      |     |      |       | भकूटचक्र |       |      |      |      |    |     |     |     |     |     |     |
|-----------------------|--------|------|--------|------|-----|------|-------|----------|-------|------|------|------|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| सु.                   | च.     | मं.  | वु.    | वु.  | सु. | शु.  | गह    | १        | २     | ३    | ४    | ५    | ६  | ७   | ८   | ९   | १०  | ११  | १२  |
| व.मं                  | वु.    | सुचं | सुप्र  | सुचं | वु. | वु.  | मित्र | शु       | शु    | शु   | मि   | शु   | मि | शु  | मि  | शु  | मि. | शु  | मि. |
| च.                    | सु.    | वु.  | सु.    | मं.  | शु. | शु.  |       | ६        | ७     | ८    | ९    | १०   | ११ | १२  | १   | २   | ३   | ४   | ५   |
| वु.                   | मं.वु. | शु.  | मं.वु. | शु   | वु. | वु.  | सन    | मि.      | शु.   | मि.  | शु   | मि   | शु | मि. | शु  | मि. | शु. | मि. | शु. |
|                       | शु.शु  | शु.  | शु.    |      | मं. |      |       | ८        | ९     | १०   | ११   | १२   | १  | २   | ३   | ४   | ५   | ६   | ७   |
| शु.                   |        |      |        | वु.  | सु. | सुचं | शुनु  | वैशी     | वैश्य | तारा | यानि | ग्रह | ग  | भा. | ना. |     |     |     |     |
| श.                    | +      | वु.  | चं.    | शु.  | चं. | मं.  |       | १        | २     | ३    | ४    | ५    | ६  | ७   | ८   |     |     |     |     |

नवर्ग वर्णो नगणो योनिद्विहा दशौ चैव षडाष्टके वा तारा विरुद्धे न न पंन सस्यादा श्रीपामैत्री शुभ  
 दो विवाहे ॥ १ ॥ हीण वर्णो यदा राशी राशीशो वर्णो मुत्तमं ॥ तदा राशीश्वरे गाह्यो तस्य राशिं न चिंतये  
 त राशये केचिद्दिन मष्टं दयोः स्यान्क्षत्रं को राशि युग्मं तथैव कुचः नाडी दोषो नो गणनी च दोषो न  
 क्षत्रे कोपाद भेद शुभ स्यात् ॥

शि  
४५



गण रक्षो गण यदा पुंसा कुमारे नृगुण भवेत सन्द कूटा वर्ग प्रीती तदा योनि शुभे गणोः भूत प्रोक्ते दुष्ट भूत  
 के परिणय स्वेकाधिपत्ये शुभो घोस घी श्वर सौ हरे पिग दने नाड्य र्क्ष अहिर्यदि अन्य र्क्ष प्रापयोर्वलित्व सति  
 दते नाड्य र्क्ष शुद्धे तथा तारा शुद्ध वशे च राशि व सत्ताभावे निरुक्ती बुधैः अन्य द्विहा दशं वान वयंच मे वाष ष्टा  
 र्क्ष के राक्षस योषितो वा एकधि पत्ये भवने शुभे त्रै शुभाय पाणि गहणं विधये अन्य राशि नाथे विरुद्धे पिसव  
 लाव पा काधिपौ त्रैपि च कर्त्तव्य द्रव्यं त्यो सषामि कृति राशे नाथे विरुद्धे पिभिन्न त्वं चांशानां पयो विवा  
 हं कारये धीमान् दंपत्यो सौख्यं नाडी एक नाडी विवाह शुभे सर्व समन्वितः वर्ज तीथ प्रपत्ये नहं  
 पत्यो निधन पतः अर्के दुजक्षोणि तनू जीवा के तु सितो सह शशांक पणे राजन्मादि सानाडी त्रिये शुभा ॥

जन्म कालावती सशुभं

सू. १। १०। २८। . . .  
 बु. २। ११। २। . . .  
 मं. ३। १२। २१ . . .  
 के. ४। १४। २३ . . .  
 वृ. ४। १३। २२ . . .  
 शु. ६। १५। २४ . . .  
 रा. ७। १६। २५ . . .  
 चं. ८। १७। २६ . . .  
 पू. ८। १८। २७ . . .

रोहि राया द्वा म्गे द्वा मि पुष्य अवणो पौल भं  
 अहि बुल र्क्ष मेतेष नाडी दोषो न विद्यते  
 बिषारवा द्वा अव पुष्य रोहि रायु उत्तर भाद्र  
 पात रेवती च मघा अश्ले नेतरे चैक भद्रयोः  
 अज्ञात जन्म नां तृण नाम मेय रिचिंतयत  
 ते नैव पितये त्सर्व राशि कूट गंदि जन्म व  
 त् ॥

वर्ग चक्र म

| अ | क | च | ट | त | प | य | स |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इ | ख | क | ठ | थ | फ | र |   |
| उ | ग | ज | ड | ढ | ब | ल | ष |
| ए | व | श | ह | ध | भ |   | श |
| ओ | ङ | ञ | ण | न | म | व | ह |
| ऐ | औ | अ | इ | उ | ए | ओ | ऐ |

मि.  
४६







सु-च-ली  
४८

| प्रल्ल लगनाक्तन्म लग्न राशि जन्म भं चंद्र चं मष्टाष्ट गोदपत्यो मृत्यु प्रदांतरं |        |        |          |          |  |          |          |          |          |
|---|--------|--------|----------|----------|--|----------|----------|----------|----------|
| बर्षांतरमृत्यु  |        | रंदा   |          | कलंदो    |  | दुर्भगा  |          | कन्याजा  |          |
| पतिहा   |        | दोरहा  |          | विषकन्या |  | विषकन्या |          | विषकन्या |          |
| श   | चं.    | स्तिना | का       | कु       | चं   | श        | च        | श        | श        |
| मं  | मं.    | श      | श        | चं       | मं   | श        | च        | श        | श        |
| दिपुत्र   | हीनांग | रंदा   | वालविधवा | रंदा     | विषकन्या   | विषकन्या | विषकन्या | विषकन्या | विषकन्या |
| श   | पा     | चं.पा  | पा       | श        | मं   | श        | मं       | श        | मं       |
| श   | शु     | पा     | पा       | श        | मं   | श        | मं       | श        | मं       |
| शारवशा वेदादि   |        |        |          |          | अनाध्याय   |          |          |          |          |
| अ   | प      | सा     | अ        | संका     | मला  | जे.शु    | चं.क     | १४       | १५       |
| व   | शु     | भो     | वु       | मा.शु    | २२ प्रतिप  | अष्टमी   | १४       | १५       | ३०       |
| एक नाडी समायोगे एक स्वामी यदा भवेत् ।   |        |        |          |          | लग्नतेचं. ३५ ॥ १२ ॥ १० गुरुणा दृष्टा शुभं लग्नं लु.            |          |          |          |          |
| नाडी वेधं न तत्रैवं नास्ती हि द्वादशा स्तथा । १९                                |        |        |          |          | तु.कं. के.वे. चं.शु. युते सौम्य दृष्टा शुभं लग्ने क्षिते शु.चं |          |          |          |          |
|   |        |        |          |          | सिंहस्थे मिथुनां शो वलि नौ शुभं स्त्री राशि द्राक्कारो         |          |          |          |          |
|   |        |        |          |          | नवांशे मिलने रोचं. शु. दृष्ट कन्या लाभ पुलगेन                  |          |          |          |          |
|   |        |        |          |          | वांशो पुं ग्रह वली विक्षिते पुरुष प्राप्ति विषमभांशे           |          |          |          |          |
|   |        |        |          |          | शु.चं. लग्न पश्य वली शुभम् ॥                                   |          |          |          |          |

शि.  
४८



४८

वैश्यायः पंचभिर्युक्तं गणैर्यदकाष्टकं शुभं यदि नाडी विमुद्विष्यात्तदा दाहः सुखप्रदः वर्णादीनां गुणा  
 सर्वे लभ्यन्तेऽत्र षडष्टके तदा पाणिग्रहः कार्ये सुखदा सोमकोष्टवित् अति योग्यभावेनो दाहसेतुका  
 यो वियोगदः राशिर्वर्ष्यचयद्यस्ति कार्ये ननु दोषभाक् राशिप्रायोः सुहृद्वैमित्रत्वे चांशना  
 थयोः गणयादि दोस्तोऽप्युदाहः पुत्रपौत्रविवर्द्धनः मैत्र्या राशिस्वामिनोरंशनाश्च दंडं स्यापि स्या  
 म्दणानान्यदोषविदारित्वं नाशयेत्सङ्कटं खेदं प्रीतिश्चापि दुष्टं भूकटम् ॥

| अथ राशि स्वामी चक्रं |    |    |    |     |    |    |    |    |    |     |    | अथ होरा चक्रम् |    |    |    |    |     |    |    |    |    |    |     |    |      |       |
|----------------------|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|-----|----|----------------|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|-----|----|------|-------|
| मे                   | रु | मि | के | सिं | कं | तु | रु | ध  | म  | कुं | मी | राशि           | मे | रु | मि | के | सिं | कं | तु | रु | ध  | म  | कुं | मी | रा   |       |
| मं                   | शु | बु | चं | सु  | बु | शु | मं | रु | श  | श   | रु | स्वामि         | २५ | २५ | २५ | २५ | २५  | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५  | २५ | २५   |       |
| अथ देखाणा चक्रं      |    |    |    |     |    |    |    |    |    |     |    | सू             | चं | सू | चं | सू | चं  | सू | चं | सू | चं | सू | चं  | सू | चं   | स्वा. |
| मे                   | रु | मि | के | सिं | कं | तु | रु | ध  | म  | कुं | मी | रा.            | ५  | ४  | ५  | ४  | ५   | ४  | ५  | ४  | ५  | ४  | ५   | ४  | लग्न |       |
| १०                   | १० | १० | १० | १०  | १० | १० | १० | १० | १० | १०  | १० | १०             | १५ | १५ | १५ | १५ | १५  | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५  | १५ | १५   |       |
| १                    | २  | ३  | ४  | ५   | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११  | १२ | लग्न           | १५ | १५ | १५ | १५ | १५  | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५  | १५ | १५   |       |
| २०                   | २० | २० | २० | २०  | २० | २० | २० | २० | २० | २०  | २० | २०             | २० | २० | २० | २० | २०  | २० | २० | २० | २० | २० | २०  | २० | २०   |       |
| ५                    | ४  | ५  | ४  | ५   | ४  | ५  | ४  | ५  | ४  | ५   | ४  | लग्न           | २० | २० | २० | २० | २०  | २० | २० | २० | २० | २० | २०  | २० | २०   |       |
| १०                   | १० | १० | १० | १०  | १० | १० | १० | १० | १० | १०  | १० | १०             | २० | २० | २० | २० | २०  | २० | २० | २० | २० | २० | २०  | २० | २०   |       |
| ८                    | १० | ११ | १२ | १   | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७   | ८  | लग्न           | ४  | ५  | ४  | ५  | ४   | ५  | ४  | ५  | ४  | ५  | ४   | ५  | लग्न |       |



| दी. | सगाई का मुहूर्त           | सड़क के विवाह   | तिथि                 | वार                   | विवाह के नक्षत्र   | मामलूम   |
|-----|---------------------------|---|----------------------|-----------------------|--|--|
| १०  | ७-३ गे. क.<br>८-३ शुभ दिन | सहसास वा अ<br>ब्रमेहत कया<br>विवाह नावर्जित<br>अं ३ ह | रिक्ता<br>हित<br>अमा | चं. बु. ह.<br><br>शुभ | गे. ३-३-३ मृत्वा<br>म. म. ३-३-३ ह.<br>कोई मार्ग शिर<br>की इच्छा करने | मा. फा. वै. ज्ये. आ.<br>पुनर्वसु<br>यतिप्रिया<br>परिमित्रा<br>केतुर्द्वि |

[illegible]



कुलदेवता स्थापन

म.र.चि.ऽनु.उ.३शे.ह.आप.

|    |    |   |   |   |   |   |   |   |   |    |    |    |    |
|----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|
| ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९  | १० | ११ | १२ |
| १३ | १  | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ |

संकीर्ण विवाह म.

क. म. ह. ५५ द्वा. म. प. श्ले. पु. नि. वि.

शुभवारनगरेरिलेअमाविधि विना

विवाह पूर्वकृत्य

क्र.सं. म.प.प.उ.३४.चि.स्वा.५८.

जेष्ठ-ध-श-पू-वार-शनिभूय मंगल  
मु-अ-ध-श-पू-विवाह मेषशुभदिन नहो



सूचक  
५३

| तेलादिलेपन       | मं ७ १० १० १० १०     | कं ७ १० १० १० १०     | कुं ७ १० १० १० १०    | गु ७ १० १० १० १०     |
|------------------|----------------------|----------------------|----------------------|----------------------|
| सूर्यनक्षत्रदिशा | सूर्य १० १० १० १० १० | सूर्य १० १० १० १० १० | सूर्य १० १० १० १० १० | सूर्य १० १० १० १० १० |
| तिथिगणितचक्र     | नक्षत्रगणितचक्र      | लग्नगणितचक्र         | अथ तारादोष           |                      |

| ५ | १० | १५ | तिथि | जं. | रे. | श्ले | नक्षत्र | ४  | ८  | १२ | लग्न  | ४  | ८ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | गृह                  |
|---|----|----|------|-----|-----|------|---------|----|----|----|-------|----|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----------------------|
| १ | १  | १  | अंत  | २   | २   | २    | उत्तर   | १० | १० | १० | अंतपल | १२ | ० | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | ०  | सूर्यनक्षत्रसे जोये  |
| २ | ११ | १  | ति   | ३   | ३   | ३    | नक्षत्र | ५  | ५  | ५  | लग्न  | १३ | १ | १  | १  | १  | १  | १  | १  | १  | १  | १  | १  | १  | १  | १  | १  | १  | १  | १  | १  | १  | नक्षत्र होय तो लक्षा |
| ३ | २  | २  | ऽदि  | ४   | ४   | ४    | ऽदि     | ६  | ६  | ६  | ऽदि   | १४ | २ | २  | २  | २  | २  | २  | २  | २  | २  | २  | २  | २  | २  | २  | २  | २  | २  | २  | २  | २  | संघ होय इतिल         |
|   |    |    |      |     |     |      |         |    |    |    |       |    |   |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    | ता दोष ॥             |

अथ पात दोष

अथ युति चक्रम्

| अ.  | भ.  | क.    | रं. | म.  | ऽदी | प.  | वि. | शु. | ज्ये. | उषा. | अ.  | ध.  | श.   | पूर्वा. | सूर्य | नक्षत्र | जिस     | नक्षत्र | का    | विवाहो |
|-----|-----|-------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-------|------|-----|-----|------|---------|-------|---------|---------|---------|-------|--------|
| म.  | ह.  | उ.    | स.  | म.  | रे. | रे. | उ.  | उ.  | म.    | उ.   | सा. | म.  | रे.  | उ.      | अपर   | के      | नक्षत्र | पै      | जोर   | गृह    |
| शु. | उ.  | फा.   | .   | म.  | म.  | उ.  | ३   | वा. | म.    | वा.  | .   | सा. | ह.   | भा.     | सूर्य | होय     | तो      | वि      | यतो   | युति   |
| रे. | वा. | स्वा. | .   | ह.  | उ.  | वा. | .   | .   | म.    | शु.  | .   | म.  | उषा. | ह.      | वाह   | इन      | नक्षत्र | पै      | चंद्र | राशि   |
| .   | भा. | .     | .   | फा. | शु. | .   | .   | .   | .     | .    | .   | रे. | उ.   | शु.     | पात   | हो      | न       | करै     | यतो   | युति   |
|     |     |       |     |     |     |     |     |     |       |      |     | भा. | .    | .       | विवाह |         |         |         | होता  | है     |

पातन पति तो नक्षत्रा पातन पात तो होय पातन पति तो शंभु तस्मात्पात विवर्जयेत १



शुभ  
शुभ

अथ मित्र विवाह के लग्न से सातवें गृह जाय तो या मित्र दोष होता है

|    |    |   |      |    |   |    |    |    |
|----|----|---|------|----|---|----|----|----|
| शे | म  | ह | स्वा | पु | म | का | का | रे |
| नु | जे | ध | पू   | भा | ज | क  | र  | ह  |

ये विवाह के लग्न दन पै गृह होय तो या मित्र दोष होता है शुभ गृह

|     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| म   | मं  | पु  | पू  | रा  | के  | गृह |
| शुभ | शुभ | शुभ | शुभ | शुभ | शुभ | शुभ |

अथ वध नक्षत्र परस्पर

का तो इच्छा कर पाप का त्याग्य है  
चर्गा विध १ को ४ से और २ को ३ से

|    |   |    |    |    |    |    |    |     |    |    |    |    |      |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----|---|----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ज  | म | क  | रो | म  | ह  | पू | पु | स्व | म  | का | ह  | वि | स्वा | ४  | ३  | मू | चं | मं | व  | र  | पु | पू | ग  | कं |
| शु | उ | वि | म  | पू | पू | पू | पू | पू  | पू | पू | पू | पू | पू   | पू | पू | पू | पू | पू | पू | पू | पू | पू | पू | पू |

का तो इच्छा कर पाप का त्याग्य है

|     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| म   | मं  | पु  | पू  | रा  | के  | गृह |
| शुभ | शुभ | शुभ | शुभ | शुभ | शुभ | शुभ |

अथ एकांगल

अथ पंचक

|   |
|---|
| ज.भ.क.रो.म.स.श्री.पु.वि.नु.जे.का.ज.ध.प्रा.श्री.रोग.मि.नप.चौर.मलु.नाम      |
| म.गे.म.म.ह.म.उह.उ.म.उ.रे.उ.रे.उ.रे.रवी.मंग.शनि.मंग.बुध.वार                |
| ह.म.ह.उ.स्वा.पू.म.भा.उ.भा.रो.भा.रो.भा.रो.रात्रि.दिन.दिन.रात्रि.संध्या.समा |
| स्वा.पू.स्वा.फा.नु.फा.स्वा.वा.म.+म.म.म.उ.८।२०.११।२०.४।६।४.१।१०.११।        |
| +फा.++.म.+नु.रे.+.+.+.+फा.२।६.३.१३.२४.१६.                                 |
| उषा.रे.ग.+.   |



48

अपरसूर्यकेनक्षत्र नीच विवाह के

कीर्तिनाम्

|     |    |     |
|-----|----|-----|
| कुं | सी | मे  |
| म   |    | र   |
| ध   |    | मि  |
| रु  |    | क   |
| तु  | कं | सिं |

अथ यथाधिचक्रं लगना को

अथ दग्धा तिथि

|     |     |     |     |     |     |       |     |      |      |         |         |     |     |    |     |      |     |    |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-------|-----|------|------|---------|---------|-----|-----|----|-----|------|-----|----|
| सू. | चं. | मं. | बु. | हं. | शु. | प्रा. | गह. | दिने | गत्र | सधाउपरा | अंधेलया | २   | ४   | ६  | ८   | १०   | १२  | ति |
| ०   | ०   | ०   | ०   | ०१  | ०   | ०२    | दिन | २११५ | ६३३  | ०       | ०       | मी. | हं. | मे | कं  | रुशु | म   | सु |
| ३२  | २   | ६   | ६   | २६  | ६   | ४०    | बडी | १२   | १२   | ०       | ०       | ध   | कुं | के | मि. | सिं  | तुं | रा |

शि.  
५४



दी  
५५

| अथ लक्षादि दोषपारहार साध   |    |    |    |    |    |   | गुरुदृष्ट्यात दोषो नास्ति  |         |         |                               | वैधापवादः   |  |
|--|----|----|----|----|----|---|--|---------|---------|-------------------------------|---|--|
| एकांगीलोपत्रहपातलतायामित्र<br>कर्तृयुदयास्तदोषः नशयन्ति चंद्रा<br>कवलोपपन्नोलने यथा कस्मिदये<br>तुदोषं गुरौ लग्नाधिपे शुक्रे सर्वोपे<br>लग्न केद्रे रदश दोषा विनश्यति<br>यशमोतूल एषाथः |    |    |    |    |    |   | यत्तापवादस्वभस्याः स्त्री वग<br>श्वदो मित्रक्षेत्रे गतो पिवा<br>गुरुवा स्त्रीयवर्गस्थो वली<br>केद्रे गतिथिघुविलोकयेत्<br>दा दोषं नाशयेत्येव सहहः |         |         |                               | लग्न शुभग्रहो वा यत्ताग्नेशं लाभागे<br>यवा सौम्ये दृष्टे शुक्रो वा ज्ञ कालहोरा<br>शुभस्य वा विधदोषस्तदा नस्य विवाह<br>होसता नतं यामित्रस्त्वा चैथ वा स्वभवने स्फ<br>रदंश जालं साभ्या लये हित गृह शुभवर्ग<br>गोवायामित्रकादि परिचित दोष राशि<br>हत्वाद हाति वहुपाः सुखमेव चंद्रः |  |
| लतामालवके देष्टा पातः कौशलके तथा एकांगीलं च काश्मीरे बंध सर्वत्र वर्जयेत्<br>युते दोषो भवे रौडे यामित्र स्पाग सुने बंध दोषस्तु विद्यालं देष्टे नान्येषु केचनः                          |    |    |    |    |    |   | वारे शेषर लेवा   |         |         |                               | वारार्धापो वलोपता विधे<br>वा बल संयुते अर्द्ध प्रहसंभू<br>ता दोषो न वात्र विद्यते शु॥   |  |
| अथ कुलिकादि  |    |    |    |    |    |   | वारे शेषर लेवा   |         |         |                               |   |  |
| सू   | चं | मं | बु | वृ | शु | श | योगनी  | फल      | समय     | पिवलाटोलग्नगो                 |   |  |
| ७  | ६  | ५  | ४  | ३  | २  | १ | कुलिक  | सर्वनाश | अंतचक्ष | शुभकुलिकादि<br>या दोषस्तु विन | मं केद्रे गने चंद्र शुभांशो<br>वा शुभे क्षित लग्न शानु<br>वले वापि यमघंट सुदो<br>महा ॥  |  |
| २  | ४  | ३  | २  | १  | ७  | ८ | यमघंट  | शून्य   | अथ १    | श्रयंति न संशयः               |   |  |
| ४  | ७  | २  | ५  | ८  | ३  | ६ | मर्दया   | निधनं   | आदित्य  |                               |   |  |

शि.  
५५



५५५

| अथ विवाह लग्न विष्टे भावस्था. |     |     |     |     |     |     |     |     | अथ लग्नादि गुण |      |     |     |     |     |     |     | तिथिवास्व नक्षत्रं नव<br>भिश्च समन्वितं सप्त<br>भिश्च हरे द्वागं शेषां के<br>फलमादिशेत् १<br>त्रि शेषं च जलं विधासं<br>च शेषे प्रभंजन सप्त शेषे<br>वज्रपात ज्ञेयो वज्रादिल<br>क्षणमकर्तरी परि दार |
|-------------------------------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----------------|------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|---|
| सू.                           | षा  | र   | के  | मं  | चं  | बु  | ह.  | शु  | गह             | लग्न | चं  | ता  | यो. | क.  | वा. | न.  | ति.   |
| १००                           | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १००            | १००  | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १००   |
| १००                           | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १००            | १००  | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १०० | १००   |

अथ शुभाशुभ योगाः

अथ स्थितः सूर्य बुधश्च शुक्रा लग्ने च मौमे भगु षष्ट मस्थौ मृत्यु स्थिते जीव गते शशांके मासेन मेके  
पति मृत्यु कारो ॥ लग्ने शशी राहु तथैव सौरी अंतरे विभौ मे सितज्ञ चाष्टमे भवंति जीवो यदि सप्त मस्थे  
सख कंन्या परवे रिम दासी अंत शोरी रवि प्रांते अंत देव गुरोय हा म्रियते वेदिका मव्ये स्त्री वा पुरुषो  
पिवा १

वि.  
५५५



सुच-दी

५७

| तन                  | धन                | सहज                        | सुख                    | सुत                | रिपु                 | जाया            | मृत्यु              | धर्म              | कर्म           | न्यायु            | व्यय            | भाव   |
|---------------------|-------------------|----------------------------|------------------------|--------------------|----------------------|-----------------|---------------------|-------------------|----------------|-------------------|-----------------|-------|
| वर्ष ८<br>विधवा     | वर्ष ६<br>निधन    | वर्ष ३०<br>पूजक            | वर्ष ३०<br>बंध         | वर्ष ३३<br>पुत्र   | वर्ष ३८<br>धनप्रा.   | वर्ष ९<br>विधवा | वर्ष ७७<br>सहमृत्यु | वर्ष २३<br>धर्मगु | वर्ष १९<br>लीव | वर्ष ३८<br>धनं    | वर्ष ९<br>पतिहा | मृ.   |
| मा. १३<br>मृत्यु    | व. ३८<br>धनयुक्त  | आयुतल्य वैख. ७७<br>सौभाग्य | व. १८<br>सुखेसे        | व. १८<br>पुत्रवर्त | व. ४८<br>सहमृत्यु    | व. ३<br>सापत्नी | मा. ३<br>वैधव्य     | व. ११<br>पुत्र    | व. ११<br>सागी  | महाधनं            | व. २<br>मृत्यु  | चं०   |
| वर्ष १<br>वैधव्य    | व. १०<br>धनयुक्त  | सौभाग्य                    | व. ९<br>बंधुही.        | पुत्रही<br>न       | व. ३८<br>सुख         | कुछ सं<br>तात   | व. १३<br>मृत्यु     | व. १३<br>पतिमुख   | व. १३<br>परतः  | व. ८<br>धनयुक्त   | मा. ३<br>हानि   | म.    |
| सदा सौभा<br>ग्य     | पुत्रपौत्र<br>युत | पतिप्रि<br>या              | व. ६<br>सापत्नी        | पुत्रव<br>ती       | युगा<br>जितरो        | व. ७<br>पतिहा.  | मास ३<br>मृत्यु     | पुत्र<br>कर्त     | व. २०<br>आनंद  | सौभाग्य<br>युत    | प्रजा<br>हीन    | बु.   |
| प्रिय<br>भर्ता      | धना<br>ठ          | कलेन<br>धनहा               | बंधुप्रि<br>य          | उदय<br>भाग्य<br>पु | उदय<br>कुल<br>प्रिया | शील<br>चरित्र   | पास्पर<br>वैर       | देव<br>रति        | कुल<br>ज्ञा    | भात<br>प्रिया     | भृष्ट<br>धर्म   | वृ०   |
| दुर्वलं मा          | युतधन             | व. ३<br>भर्तास<br>गम       | व. १४<br>बंधुप्रि<br>य | बहु<br>पुत्रा      | पास्पर<br>वैर        | व. ३८<br>सुख    | मा. ६<br>मृत्यु     | व. ५०<br>सौख्य    | व. २<br>रुद्धि | व. १० वै<br>संमुख | धर्म<br>हानि    | शु०   |
| नीचकर्म<br>बहुपुत्र | व. ५<br>धन        | व. ५<br>धनधा               | अल्प<br>दुग्ध          | व. ११<br>हृदि      | मा. ६<br>पाप         | व. ६<br>पतिहा   | मा. ६<br>मृत्यु     | धर्मही<br>नयन     | पाप<br>कर्म    | मा. ६<br>विवर्ग   | मा. ६<br>रत्ता  | प्रा. |
| कुवातपव             | लाभ               | न्ययुत                     | वान                    | रोग                | स्त्री               | येभा            | वस्यद               |                   |                | साधन              |                 |       |

शि.  
५७



مہارت حکمرانوں کا

|            |    |   |   |   |   |   |   |    |    |                  |    |    |    |    |    |    |    |    |    |                       |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|------------|----|---|---|---|---|---|---|----|----|------------------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----------------------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| लघुभंगमिदं |    |   |   |   |   |   |   |    |    | अथ विवाहलग्नफलम् |    |    |    |    |    |    |    |    |    | संक्रांतिदिवसत्याज्या |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
| १२         | १० | ३ | १ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२               | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२                    | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ |
| श          | स  | र | क | ग | घ | च | ज | झ  | ट  | ड                | ण  | त  | थ  | द  | ध  | न  | प  | फ  | ब  | भ                     | म  | य  | र  | ल  | व  | श  | स  | र  |    |
| १२         | १० | ३ | १ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२               | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२                    | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ |
| श          | स  | र | क | ग | घ | च | ज | झ  | ट  | ड                | ण  | त  | थ  | द  | ध  | न  | प  | फ  | ब  | भ                     | म  | य  | र  | ल  | व  | श  | स  | र  |    |

अथ हृदि चक्रम्

|         |    |    |    |    |    |
|---------|----|----|----|----|----|
| सं. सं. | १  | २  | ३  | ४  | ५  |
| बु. सु. | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
| गुरु    | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| मंगल    | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
| शनि     | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ |
| विशेष   | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |

अथ लग्नशुद्धिजन्य लग्नभयो मृत्यु राशौ नेष्टा करग्रहः एकाधिप राशी प्र  
मेवेवानैव दोष कृत लग्ना दृष्टमरा राशौः केन्द्राः शुभ वीक्षते यस्य पृथक् ल  
ग्नोऽथ दोषमाशु व्यतो हतिः रधे प्राश्च प्राभां प्रास्थः नगरा खेक्षेत्र मित्रगाः अष्टम  
स्थाने दोष हि विनश्यति न संशयः दंपत्यो रक्ष मे लग्ने राशौ चापि तदकेत दीप्ते  
वालम्य गति तथो मृत्युर्न संशयः तथे वृद्धा दृष्टे लग्ने तदंशे वात दीप्ते वरे वि  
वाह लग्ने नैव नित्यं स्यात् कल हा द्यो अतन वाशौ नेच परिणो चया काचन वर्त  
त्वा मिह हिला नो च लग्ने च इलव योगे तोलि मग स्थे शंशा भूत कुयां त अद्वा  
पुनर्नेति वि मास भपक्ष दग्धा तिथ पंग काण विधिरंधु मुखा प्व दोषान प्रयति

विप्रसृष्टे यदि केन्द्र कोणे तद्द्वय पाय विधुप फन वास दोषो नीच राशी गते शुक्रे धातु क्ष गते पिवा स्रग वष्ट  
स्थ दोषो हि नास्ति तत्र न संशयः अस्तु गेनी च गो भौ मे पातु क्षेत्रे पिवा कुजाष्ट माद्रु बो दोषो न किंचिदपि  
विद्यते अस्तु गेनी च गो भौ मे पातु क्षेत्रे पिवा कुजाष्ट माद्रु बो दोषो न किंचिदपि

शि.  
पूट



सुचि  
शुभ

केद कोणे जीवश्रापे रवौ लगने चंद्रवापि वर्गेत मे वा सर्वे दोषान्नाश प्राप्ताति चंद्रलाभितद्वहुमुहुर्ता  
शदोष्टायस्यां नवांशमफलं  
यस्यांशः कल्पते लगनसचेत्स्वास्थ्यचलोकिते तदापुंसः शुभं विद्यात्सप्तमे चतत स्त्रिया तुला मियु  
न कन्यांशधनरंशार्द्धसंयुतः एत नवांशः शुभदायदिनात्याशकारबलः

| धवज | श्रीवत्स | ऽऽनद   | ऽहचंद्र | गज | शारद |
|-----|----------|--|---------|----|------|
| शुभ | चं       | मं १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ | मं      | सु | बु   |
| पाय | श        |  |         |    | श    |
|     |          |  |         |    | शुभ  |
|     |          |  |         |    | शुभ  |
|     |          |  |         |    | शु   |

| कठार | भिन्न | कलमार्ग |
|------|-------|---------|
| मं   | श     | श       |
| श    |       | सु      |
| शु   | शु    | चं      |

नास्या मृक्षनतिथिकरणं नवलग्न चिता  
नोवा वारो न चलविधर्नो मुहूर्तस्य चर्चाटोत्रा  
योगो न सतभवनं नैक्षया भिन्न दोषो धूलि  
स्यान्मचिमिरुदिता सवशास्त्रेषु स्ताः एतत्  
घटिकाला नक्षत्र यादीनां खे विवाह ॥

शि  
५२



प. च. ३०

|  |          |          |          |         |    |       |   |    |                   |   |                               |     |  |         |  |
|--|----------|----------|----------|---------|----|-------|---|----|-------------------|---|-------------------------------|-----|--|---------|--|
| विवाहान्तर प्रथम पति गृह निवास तस्य फः |          |          |          |         |    |       |   |    |                   | विवाहान्तर्दन दिनों में १६ दिन के बीच में |                               |     |  | वार दिन |  |
| ज.                                     | अध.मा.आ. | पं.      | चै.      | मास     |    | ७     | ५ | ८  | दिन               | तदुपरि यथे<br>का                          | ह.चं.मु.पा.<br>११३३/४/१० तिथि | वार |  |         |  |
| नेहा                                   | पतिदा.   | मासु.दा. | मासु.दा. | पितृदा. | वै | ९     | ३ | ५  | वर्ष              |   | २०११/१२/१३                    |     |  |         |  |
|  |          |          |          |         |    | रा.उ. | ३ | ह. | अशुभ्य.मने.वि.नु. |   | अशु.मू.म.क.नक्षत्र            |     |  |         |  |

जेष्टे पतिर्जष्ट मयाधिकं पतिर्द्वन्त्यादि मे भर्तुं गृहे वधू शुचौ च शुभसहस्यश्च मुगक्षयेत्तनुजातमयेनातगृहं वा

|   |                         |  |                             |                      |                    |   |
|---|-------------------------|--|-----------------------------|----------------------|--------------------|---|
| १ | द्विगगमन                | अ.सू.रे.रो.पु.२ह.३<br>उ.३सू.२सू.५नु.<br>वर्ष विषम ३५१२ | ११२<br>१०१३<br>५०११<br>१५५३ | वं<br>ब.ह<br>शु<br>र | १०१३<br>१११२<br>६७ | चरेदथो जहायने घटालि मेष गेर वोर तो न्य सुदि यो गतः<br>शुभ गृहस्य वासरे न्यपुन मीन कन्य का तुला विवे विल<br>गुगे द्वि गग मे लघु भवे चर ५ स्वयं मनु डोभिः ॥ |
| २ | प्रथम भोग स्त्री        | उ.३रो.सू.रे.चि.५नु.<br>ह.अ.पु.अ.भ.पु.                  | शु                          | शु                   | शु                 | भोग शस्या मनादे भव मनु लघु भवे त कादष्टः गुरा के व<br>मगे विष्णुः हस्ते मूल पुन वसा पुन कार्यं न संयोग स्त्रे संयंत                                       |
| ३ | स्त्रो दर्शनं           | पु.२ह.३रो.२उ.३रे.अ.<br>मास मा.अ.चै.अ.जे.आ              | शु                          | शु                   | शु                 | अद्या रजः शुभ माघे मागे राधे पु फाल गुणे ज्येष्ठ आषाढयो<br>शुक्ले सहो सरनो दिवा श्रुति त्रय मनु क्षि प्र भव स्वाती सुतां<br>ध्वरे ॥                       |
| ४ | रजस्वानं<br>प्रीति गर्भ | ह.स्वा.अ.सू.५नु.ध.<br>रो.उ.३सू.रे.स्वा.ह.अ.रो.         |                             |                      |                    | हस्तानि लाञ्छि मृग मैत्र वसु भवा रव्यो शक्रा न्वितां शु<br>भति यो शुभ वासरे वसु याद थो नर तु मतो मृग पौष वा<br>य हस्ता श्वि धातु भिग लभते च राभ मे ॥      |
| ५ | गर्भाधान                | उ.३सू.ह.५नु.रो.<br>स्वा.अ.ध.पा.                        | शु                          | शु                   | शु                 | गर्भाधानं शुनरे हर्क मैत्र ब्राह्म स्वाती विलु वस्व वुपे सत्<br>केंद्र त्रिकाणे शु शुभैश्च पापैः स्त्र्या पारिगैः पुगृह दष्ट लग्न                         |

का. २०

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

|               |      |   |   |   |   |   |   |   |   |   |    |
|---------------|------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|
| मासेची संस्का | मास  | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| गर्भसं        | ह्या | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |



सुचरी  
६१

# नगर प्रवेश

गृहे कुच पुष्यं संभवेष्टु क्रदोषोनः

नगर प्रवेश विषयादुपद्वेकर पीडने विदुधतीयात्रयो नपपीडने नववधूप्रवेशने प्रतिभार्गवो भवति दोषरुल

|    |                        |   |                                      |                    |                        |   |
|----|------------------------|---|--------------------------------------|--------------------|------------------------|---|
| ६  | पुसवन<br>सीमंत<br>कर्म | म. पु. म. अ. पु. ह.<br>मास ३।५  | र. वृ.<br>मं.<br>शु.                 | शु.                | शु.                    | जीवार्कादिने मृगेज्यनिरति आत्रादिनिवृद्धिभरेकासाकर्<br>साष्टवर्जतिथिभिर्मासाधिपेशीदरे सीमंतोष्ठपशुमासपुम<br>देके देविकोणखवलैलीभारिचिपुवाभ्रवांसमदेहेलमे |
| ७  | जात<br>कर्म            | मृ. चिरे. ५ न. ह. अ. पु.<br>उ. ३ रो. त्या. पु. अ. ध. श.               | शु.                                  | शु.                | शु.                    | तज्जातकर्मदिशि प्राविध्यपवीर्यारिक्तानतिथोभुभेहि<br>एकादशे द्वादशे केपि घस्रमदुधवक्षिप्रचराडुपुस्यात्।  |
| ८  | प्रसूती<br>स्नानं      | रे. उ. ३ रो. म. ह. ३<br>अ. ५ न.                                       | शु.                                  | र.<br>मं.<br>ह.    | शु.                    | पौलभ्रवेदुकरवातहयेपुसूलीस्नानं समिन्नभरवीज्यकु<br>जेशुसस्तं॥  |
| ९  | दोला<br>शेहणा          | म. रे. ति. ५ न. ह. अ. पु.<br>उ. ३ नै. मृज्यमसुध्या<br>व्याधिसौख ५ ५ ५ | मृग<br>भात                           | शु.                | शु.                    | दंतार्कभृगधतेदिग्नितवासरे स्यातवारशुभं मृदुलघु<br>भ्रवभैः शिशुनां दोलाधिरुदस्थानिष्कमणांचतुर्थमा<br>सगमोक्तं समयेऽकीधितद्विवासरत॥                       |
| १० | जल<br>पूजा             | अ. पु. पु. म. ह. मृ.<br>५ न.  | शु.                                  | शु.                | शु.                    | कवीज्यास्तचैवाधिसाननपोषे जले पूजेपेतरुति काशम<br>पूतो बुधे वीज्यवारविरक्तिं बाहि श्रुतिज्यादितीन्द्रकेन<br>ऋतमेव॥                                       |
| ११ | स्तन<br>पूजा           | उ. ३ रो. ५ अ. पु. पु. ५ न.<br>ह. ति. रो. म. अ. ध. श.                  | रा. ३।५<br>७।१।३<br>दि. १३<br>वा. १३ | बुध.<br>शु.<br>चं. | स्थिर<br>रा. ४।३<br>११ | जातकर्मैकनिहने श्रवणत्रय पुनर्वसौ लहास्वाति<br>स्तनपानं शुभे प्राक्तो शुभे हति॥   |

हि. प. न.  
चं. पु. म. न. क.

शि.  
६१



| सं                 | नाम ब्रह्म          | नाम नक्षत्र  | तिथि                    | वार                  | लग्न               | साक्षात् मुहूर्त चिंतामणि  |
|--------------------|---------------------|--|-------------------------|----------------------|--------------------|--|
| १                  | सूतिका<br>प्रश्न    | रे. ज. पु. सु. शु. म.<br>अ. ध. श. चि. उ. ३<br>रे. स्वा. ह. | २१३<br>५१७<br>११२३      | ह. शु.<br>बु. चं     | २१५<br>२११९<br>हेत | अन्ना समोक्त नक्षत्रे वारे दुर्योग वर्जितः शु भाहे<br>लग्नभाशे च सुतधिपुष्टि हेतवे         |
| २                  | पंचमी<br>षष्ठी पूजा | ० ० ० ०<br>० ० ० ०   | ०<br>०                  | ०<br>०               | ०<br>०             | जन्मतः पंच मद्यसे जीवत्यां पूजने निशः प्रष्टु क<br>षष्ठी का पूजा गीते जागणी दिभिः          |
| ३                  | सूतिका<br>स्नानः    | ह. म. शु. रो. रे<br>ऽश्व. उ. ३ स्वा                        | ३१<br>३१<br>५११         | ह. म.<br>मं.         | स्थिर              | दंतोत्पत्ति  |
| मास<br>४<br>५<br>६ | १<br>स्वयं<br>नाश   | २ ३ ४<br>वडा वहे माता<br>भाई न नाश                         | ११३<br>५<br>कोरे<br>कर  | भाई<br>वेद           | ह<br>भोग           | ७ ८ ९ १० ऊपर के निकलते पिताकुं<br>सुख पुष्ट लक्ष्मी सौख्य नेष्ट और नीचे के माता<br>का नष्ट |
| ५                  | देवकाज<br>परोजन     | रे. म. २ ह. चि. पु.<br>अ. स्वा. रो. उ. ३<br>मू. म.         | ११३<br>५<br>कोरे<br>कर  | भाई<br>वेद           | ह<br>भोग           |  |
| ६                  | बालक<br>निकास       | प. रे. ह. घ. रो<br>अ. पु. म. उ. ३<br>ऽनु. पु.              | ३१५<br>२१७<br>१३१<br>१० | बु. ह.<br>पु.<br>चं. | चर<br>११४<br>२०१९  | निष्क्रमण चतुर्थ मासे गमोक समये ऽर्कमिते हि<br>सत  |

शि.  
हे२



सु. न.  
सु. न.  
सु. न.

| सं. | नामसूक्त            | नामनक्षत्र  | ति.                     | वार                 | लग्न                | साक्षीसूक्त चिंतामणि  |
|-----|---------------------|---|-------------------------|---------------------|---------------------|---|
| १   | सतिका<br>मुलाज      | ५५ रा. पु. पु. अ. रु. भ.<br>वि. मू. चि. क्र.                            | ४।८<br>१४।१<br>३५।३     | मं<br>शु<br>र       | कूर                 | प्रतिसंवत्सरगतर्धे  |
| २   | कटिसूत्र<br>मुहूर्त | पुष्य. ह. अ. मू. उ. उ.<br>रो. म. जे. ५नु.                               | २३।४<br>३।८<br>११।३     | बु. उ.<br>अ. चं     | स्थि<br>र           | प्रतिसंवत्सरगतर्धे तनुणं सूत्रं विधि परं दत्ता गाम्भ<br>हिरण्यादितथा स्वर्णदिनिमिता ॥   |
| ३   | बालका<br>न्तप्रश्न  | रे. म. पु. पु. ५नु. म. अ. च.<br>शु. ह. चि. स्वा. रो. उ. उ.              | ३।४।२<br>७।१३<br>१०     | बु. चं<br>शु.<br>र  | जन्म<br>हिर<br>हित  | रिक्तानदां ५ष्टिदृष्टा हरिदिवससमथो सोरि भोमात्रि<br>र्बवारानलग्नजन्मर्धं लग्नाष्टमा गृहलवा मीन मेघा<br>लिकं चाहृत्वाष्टा सममास्थय चरमृगदृष्टं पचमादेज<br>मासेन क्षत्रस्थी ॥ |
| ४   | तांबूलभ<br>स्त्राण  | ५नु. ज्य. हे. चि. स्वा. रे. म.<br>मु. उ. उ. रो. अ. च. पा.<br>म. पु. पु. | ३।४।२<br>७।४।१<br>११।१३ | बु. उ.<br>शु.<br>चं | ३।१<br>६।११<br>२।१२ | वारे भौमाकिर्द्विनिधवमदुलधमो विष्णु श्रुतादितीचु सं<br>वंपते मिथुन मृगवधकं मंगोलीन मौतेल केन्द्रविको<br>गोरशुभगगनगोः शत्रूला भविसंस्थिता वूलसाधुमा                          |
| ५   | बालहो<br>मुहूर्त    | म. मी. पु. ह. चि. स्वा. अ.<br>इ. रा. जे. रे.                            | ३।४।२<br>७।८<br>१।१२    | बु. उ.<br>शु.<br>कं | २२।१<br>२।४         | चंडावघात तीर्थति प्रभुवति विष्णु मेष्माधरा कार्कषणी<br>पावानहिविचित्रोदगयन समये जेदुशुक्रे ज्येका नां वरि<br>लानाशयाश्च स्वाभाते च न तने धनं मृदुयक ॥                       |
| ६   | कर्णवेध             | रे. म. पु. पु. ५नु. अ. च.<br>ह. चि. म.                                  | २।३<br>५।१०<br>१३।७     | बु. उ.<br>शु.<br>चं | १.४<br>२।१२         | हितवेति चेन्नेपोचावमहरि शरानजन्मा संवरिकां पुंगमा<br>वदजन्मता शम्यत भनिवस भिसमिते सा सथा वाजन्मा<br>हातममेभ्ये परिमिति दिवसे हाज्यशुक्रदुवारे योजावद                        |

सु. न.  
सु. न.  
सु. न.

शि.  
६३



सु. च. की  
६४

|   |            |          |  |           |               |                |                |   |  |       |        |        |       |       |               |
|---|------------|----------|--|-----------|---------------|----------------|----------------|---|--|-------|--------|--------|-------|-------|---------------|
| भूगुणप्रवेशन                                    |            |          | उ. ३०. म. ३०. पु. ३०. २३५ ७८१० १११२३     |           |               | बु. ह. २५१ ६११ | स्थिर २५१ ६११  | पृथ्वी वराहमभिपूज्यकुजेविशुद्धेरिके त्रिथोत्रजति पंचममासि वालं वध्या शुभाह्ने कदिस्त्रभयक वदुजेहर्षमैत्रलघुभैरुप वशयेको ॥ |  |       |        |        |       |       |               |
| मि. सु. क.                                      | हीरा १२    | पू. च. ५ | गुरु १२                                  | बुध १२    | भौ. च. ४      | सूर्य ७        | शनि १०         | शुक्र ६   | तस्मिन्काले स्थापयेत्तत्पुस्तकं शास्त्रं पुस्तकं लेखनी च स्वर्णं रूयं यच्च गन्तव्यं तै राजी वै तस्य वृत्ति प्रतिष्ठा ॥ |       |        |        |       |       |               |
|   | मि. सु. क. | यु. ५    | दीर्घ जीव १२                             | रानी १२   | पिक पितृहक १२ | कुष्टी १२      | अनू १२         | भोग भाग १२  |  |       |        |        |       |       |               |
| कन्या की नावां वेधन                             |            |          | ह. च. १२                                 | पु. अ. १२ | ध. अ. १२      | २३५ ७८१० १११२३ | बु. ह. २५१ ६११ | शु. च. २५१ ६११  | हस्तो नगयाजि पुनर्वसौ च शुक्ति त्रयै ब्रह्मशास्त्रि च मैत्रे पौलश्रुता धा विष माद कोन्हे वोर शुभे छिद्र मु             |       |        |        |       |       |               |
| पाल की वन वावनी                                 |            |          | जे. उ. ३०. म. ३०. पु. ३०. २३५ ७८१० १११२३ | ह. चि. १२ | अ. च. १२      | २३५ ७८१० १११२३ | बु. ह. २५१ ६११ | शु. च. २५१ ६११  | शाको तरा प्राल मगादि राज्य मैत्रार्क चिवा श्रि हरि त्र ये च योगा शुभाह्ने शिव का सु कर्म सा के शुभे ब्रह्म पुता        |       |        |        |       |       |               |
| मि. सु. क.                                      | चैत्र      | वै.      | ज्ये.                                    | आ.        | श्रा.         | भा.            | अ.             | का.   | मार्ग.   | पौ.   | मा.    | फा.    | मास   | वार   | फलम्          |
|   | दुख        | सिद्धि   | मृत्यु                                   | बुध       | बुध           | दुख            | सर्व           | सिद्धि  | मंगल   | ज्ञान | बुद्धि | बुद्धि | फल    | सु.   | दुख           |
|   | १४         | ३        | १०                                       | ५         | ५             | ६              | १४             | ६   | ३  | ६     | ४      | ६      | तिथि  | व.    | शान्ति        |
|   | शु.        | शु.      | शु.                                      | शु.       | क.            | क.             | क.             | शु.   | शु.  | शु.   | शु.    | शु.    | पक्ष  | व.    | साधुई         |
| नक्षत्र रे. उ. ३०. वि. म. अ. ह. पुष्य. ३० ०० ०० |            |          |  |           |               |                |                |   |  |       | चं. ३० | मं. ४  | सु. ७ | श. १४ | सौभाग्य पशुदा |

सु. च. की  
६४

मि. सु. क.  
६४



मु. न. ल.  
६५

| अथ चंद्रावस्था चक्रं |        |       |       |       | एक अवस्था राश्यांशकी |       |       |       |       | वा ११ ३ घटी की हीती है |       |       |               |        |
|----------------------|--------|-------|-------|-------|----------------------|-------|-------|-------|-------|------------------------|-------|-------|---------------|--------|
| ११                   | मे.    | वृ.   | मि.   | कं.   | सि.                  | कं.   | तु.   | वृ.   | ध.    | म.                     | कुं.  | मीन   | घटादि         |        |
| मे.                  | प्रवास | नाश   | माण   | जय    | हास्य                | रति   | क्रोड | सुप्त | भक्ति | ज्वर                   | कंप   | स्थिर | अवस्था        | ११ घटी |
| वृ.                  | ना.    | म.    | ज.    | हा.   | र.                   | क्रो. | सु.   | भु.   | ज्व.  | कं.                    | स्थि. | प्र.  | घटी २२।३०     |        |
| मि.                  | मा.    | ज.    | हा.   | र.    | क्रो.                | सु.   | भु.   | ज्व.  | कं.   | स्थि.                  | प्र.  | ना.   | घटी २३।४५     |        |
| कं.                  | ज.     | हा.   | र.    | क्रो. | सु.                  | भु.   | ज्व.  | कं.   | स्थि. | प्र.                   | ना.   | म.    | घटी ४५।००     |        |
| सि.                  | हा.    | र.    | क्रो. | सु.   | भु.                  | ज्व.  | कं.   | स्थि. | प्र.  | ना.                    | म.    | ज.    | दिन ५६।२५     |        |
| कं.                  | र.     | क्रो. | सु.   | भु.   | ज्व.                 | कं.   | स्थि. | प्र.  | ना.   | म.                     | ज.    | हा.   | दिन १।०।३०    |        |
| तु.                  | क्रो.  | सु.   | भु.   | ज्व.  | कं.                  | स्थि. | प्र.  | ना.   | म.    | ज.                     | हा.   | र.    | दिन १०।४५     |        |
| वृ.                  | सु.    | भु.   | ज्व.  | कं.   | स्थि.                | प्र.  | ना.   | म.    | ज.    | हा.                    | र.    | क्रो. | दिन १।३०।००   |        |
| ध.                   | भु.    | ज्व.  | कं.   | स्थि. | प्र.                 | ना.   | म.    | ज.    | हा.   | र.                     | क्रो. | सु.   | दिन १।४१।४५   |        |
| म.                   | ज्व.   | कं.   | स्थि. | प्र.  | ना.                  | म.    | ज.    | हा.   | र.    | क्रो.                  | सु.   | भु.   | दिन १।५२।३०   |        |
| कुं.                 | कं.    | स्थि. | प्र.  | ना.   | म.                   | ज.    | हा.   | र.    | क्रो. | सु.                    | भु.   | ज्व.  | दिन २।३।४५    |        |
| मीन                  | स्थि.  | प्र.  | ना.   | म.    | ज.                   | हा.   | र.    | क्रो. | सु.   | भु.                    | ज्व.  | कं.   | दिन २।१५।००   |        |
| अंश                  | २      | ५     | ७     | १०    | १२                   | १५    | १७    | २०    | २२    | २५                     | २७    | ३०    | नाम सदृश फलम् |        |
|                      | ३०     | ००    | ३०    | ००    | ३०                   | ००    | ३०    | ००    | ३०    | ००                     | ३०    | ००    |               |        |

शि.  
६५



वि. ३३

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



सु. च.  
ह. मं.  
ह. मं.

| अथ संक्रांति कालात् शुभाशुभम् |          |        |         |         |         |       |          | सूर्यास्तकाल       | शुक्रान्ति   |           | सूर्यादिकार्यदेतवलं |
|-------------------------------|----------|--------|---------|---------|---------|-------|----------|--------------------|--------------|-----------|---------------------|
| सु.                           | चं.      | मं.    | तु.     | ह.      | शु.     | श.    | वार.     | रात्रौ प्रथम प्रहर | पिशाहति      |           |                     |
| उषः                           | तृतीयं   | मध्यं  | शैवम्   | प्रतपम् | मिथुनम् | मकरम् | नक्षत्रं | रात्रौ द्विप्रहरं  | चौरान्ति     | सूर्यवलतः | राजासे मिलना        |
|                               |          |        |         |         |         |       |          | रात्रौ विप्रहरं    | नर्तकान्ति   | चंद्रवल   | सर्वकृत             |
| द्यौः                         | द्वितीयं | महोदयं | मंथकिरी | नरा     | मिथुनी  | मकर   | नक्षत्रं | रात्रौ चतु प्रहरं  | पशुपालान्ति  | भौमवल     | संग्राम             |
|                               |          |        |         |         |         |       |          | सूर्योदये          | संन्यासियात् | बुधवल     | शास्त्र             |
|                               |          |        |         |         |         |       |          | दिन प्रथम अंशे     | नृपान्ति     | गुरुवल    | विवाह               |
| शुक्रान्तः                    | तृतीयं   | महोदयं | न्यास   | विप्रतप | मिथुनम् | मकर   | नक्षत्रं | दिन मध्य वाशि      | हिजान्ति     | शुक्रवल   | यात्रा              |
|                               |          |        |         |         |         |       |          | दिन तृतीयांशे      | वैश्यान्ति   | शनिवलत    | दीक्षा              |

| कर्कांक सूर्यादि वयन विधि |     |     |     |    |     |    |      | सूर्यस्य वेध   |    |   |    | मं. प्रा. रा.     |    |    |   | चंद्रस्य अम वेध स्थाने |   |    |    |
|---------------------------|-----|-----|-----|----|-----|----|------|----------------|----|---|----|-------------------|----|----|---|------------------------|---|----|----|
| सु.                       | चं. | मं. | तु. | ह. | शु. | श. | वार. | ६              | १० | ३ | ११ | ८                 | ११ | १० | ३ | ११                     | ९ | ६  | ७  |
| १०                        | २०  | ८   | १२  | १८ | १८  | ५  | विधि | १२             | ४  | ८ | ५  | ५                 | ८  | १२ | ४ | ८                      | ५ | १२ | २  |
| वृधस्य शुभ विद स्थान      |     |     |     |    |     |    |      | रास्य शुभ विधि |    |   |    | शुक्रस्य शुभ विधि |    |    |   |                        |   |    |    |
| ४                         | ६   | ८   | १०  | ११ | ५   | २  | ८    | ७              | ११ | २ | ३  | ४                 | ५  | ६  | ७ | ८                      | ९ | १० | ११ |
| ३                         | ८   | ९   | ८   | १२ | ४   | १२ | १०   | ३              | ८  | ७ | १  | १                 | ६  | ५  |   | ११                     | ६ |    | ३  |



|                    |     |             |            |                                     |      |                                   |     |                               |       |       |       |      |      |     |    |    |    |    |    |    |    |    |
|--------------------|-----|-------------|------------|-------------------------------------|------|-----------------------------------|-----|-------------------------------|-------|-------|-------|------|------|-----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गुरु शुभविधि       |     |             |            | शुक्रस्य शुभविधि                    |      |                                   |     | जन्म राशि ग्रहण की राशि तुल्य |       |       |       |      |      |     |    |    |    |    |    |    |    |    |
| ५२                 | ६   | ७           | ११         | २३                                  | ४    | ५                                 | ८   | ९                             | १२    | ११    | नक्ष. | १२   | ३    | ४   | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ |
| ४१२                | १०  | ३           | ८          | ७                                   | ११   | ८                                 | ५   | ११                            | ६     | ३     | सु    | सु   | सु   | सु  | सु | सु | सु | सु | सु | सु | सु | सु |
| ग्रह प्रांति रत्ना |     |             |            | पहले यह ग्रह जगली राशि का फल करे है |      |                                   |     |                               |       |       |       |      |      |     |    |    |    |    |    |    |    |    |
| बु.<br>प्राची      |     | शु.<br>हीरा |            | वं.<br>मीती                         |      | सु.                               | मं. | बु.                           | शु.   | चं.   | रा.   | शु.  | रु.  | कै. |    |    |    |    |    |    |    |    |
|                    |     |             |            |                                     |      | ५                                 | ८   | ७                             | ७     | ३     | ३     | ६    | २    | ३   |    |    |    |    |    |    |    |    |
| गु.                |     | सु.         |            | मं.                                 |      | दिन                               | दिन | दिन                           | दिन   | वर्षा | मास   | मास  | मास  | मास |    |    |    |    |    |    |    |    |
| पुष राज            |     | चुनी        |            | मृगा                                |      | जन्म राशि महीने में जिस चार का फल |     |                               |       |       |       |      |      |     |    |    |    |    |    |    |    |    |
| कै.                |     | श.          |            | रा.                                 |      | सु.                               | चं. | मं.                           | बु.   | रु.   | शु.   | शु.  | रा.  | कै. |    |    |    |    |    |    |    |    |
| पद्मा              |     | नीलम        |            | लहसनिया                             |      | मार्ग                             | जल  | अग्नि                         | मति   | बल    | सौख्य | दुःख | दुःख | ००  |    |    |    |    |    |    |    |    |
| लक्ष्मी वंती       | कै. | रवरी        | सुख विजिता | नारायणी                             | सुखी | मार्ग                             | जल  | लाल                           | मार्ग | सौख्य | दुःख  | दुःख | ००   |     |    |    |    |    |    |    |    |    |
|                    |     |             |            |                                     |      | मौ.                               | जल  | लाल                           | मार्ग | सौख्य | दुःख  | दुःख | ००   |     |    |    |    |    |    |    |    |    |



म. ५९  
५९

|       | ५९     | ५९   | ५९    | ५९    | ५९    | ५९    | ५९      | ५९   | ५९   | ५९      | ५९     | ५९    | दानदुष्टयोगादि |         |        |        |        |        |        |
|-------|--------|------|-------|-------|-------|-------|---------|------|------|---------|--------|-------|----------------|---------|--------|--------|--------|--------|--------|
| नीचे  | पशू    | धन   | सौ    | कुदि  | धन    | धर्म  | पितृ    | मान  | माझी | ज्येष्ठ | दुर्भा | फल    | योग            | चंद्र   | करण    | तिथ    | वार    | नाडी   | तास    |
| ऊपर   | ४      | ८    | ५     | ५     | ६     | ४     | ८       | ४    | २    | ४       | ८      | चडी   | स्वर्ण         | शंख     | धान्य  | चाव    | रत्न   | स्वर्ण | सैंधा  |
| स्थान | १      | २    | ३     | ४     | ५     | ६     | ७       | ८    | ९    | १०      | ११     | १२    | म.             | चं      | मं     | बु.    | र.     | शु.    | शनि.   |
| सूर्य | गम     | हानि | धन    | रो.   | दैन्य | सौख्य | गति     | रुक् | पापं | सौख्य   | धन     | पीडा  | ५८ फलम         | ५८ फलम  | ५८ फलम | ५८ फलम | ५८ फलम | ५८ फलम | ५८ फलम |
| चंद्र | पुष्टी | चित  | अग्रि | रोग   | सुखं  | लाभ   | धन      | रुज  | मौन  | सौख्य   | अग्रि  | पीडा  | ५८ फलम         | ५८ फलम  | ५८ फलम | ५८ फलम | ५८ फलम | ५८ फलम | ५८ फलम |
| मंगल  | भीति   | हानि | अग्रि | अग्रि | रुक्  | लाभ   | अग्रि   | पापं | पापं | रोगं    | अग्रि  | पीडा  | ५८ फलम         | ५८ फलम  | ५८ फलम | ५८ फलम | ५८ फलम | ५८ फलम | ५८ फलम |
| बुध   | बंधन   | लाभ  | अग्रि | चित   | शोक   | लाभ   | अग्रि   | धनं  | रोगं | मौन     | अग्रि  | पीडा  | पन्थेकाचक्रम   |         |        |        |        |        |        |
| गुरु  | भीति   | चित  | रुक्  | अग्रि | लाभ   | शोक   | सौख्य   | रुक् | मानं | दैन्य   | धन     | रोग   | चणी            | १       | २      | ३      | ४      |        |        |
| शुक्र | सुखं   | विज  | धनं   | सौख्य | रोग   | पीडा  | विपत्ति | सुख  | धर्म | दुखं    | धन     | लाभ   | चटी            | १५      | ३०     | ४५     | ६०     |        |        |
| शनि   | भीति   | शोक  | रुक्  | सुख   | हानि  | सुख   | अग्रि   | रुक् | पाप  | शोकं    | धनं    | अग्रि | फलं            | पशूपीडा | सुखं   | पितृ   | मानुल  | शि.    | हि.    |
| रहू   | हानि   | पाप  | रुक्  | वैरं  | शोक   | चित   | विपत्ति | रुक् | पाप  | वैरं    | सुख    | हानि  | हा             | नाश     |        |        |        |        |        |
| केतु  | हानि   | पाप  | धनं   | वैरं  | शोक   | चित   | विपत्ति | रुक् | पाप  | वैरं    | सुख    | हानि  |                |         |        |        |        |        |        |



७०५१  
७०५२

खलेपन जन्म चक्रम्

पाणि कारकम् ज्योतिषा कापाया

| शिरः सुख | स्कंध  | हृदि  | भुजा हय | ना    | गुह्य | जंवा  | मल    | आं    | १     | २     | ३     | ४     | चर्मा | १     | २     | ३     | ४     |
|----------|--------|-------|---------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| ५        | ५      | ८     | ८       | ८     | २     | २     | १०    | ६     | ६     | १५    | ३०    | ४५    | ६०    | ७५    | ९०    | १०५   | १२०   |
| पितृहा   | मातृहा | पुत्र | पुत्र   | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र |

चंद्रहात चंद्रचक्रं

| सूर्यचक्रं | सूर्यभात खलीतक | सूर्य | सूर्य | सूर्य | सूर्य | सूर्य | सूर्य | सूर्य | सूर्य | सूर्य | सूर्य | सूर्य | सूर्य | सूर्य | सूर्य | सूर्य | सूर्य |
|------------|----------------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| ५          | ५              | ८     | ८     | ८     | २     | २     | १०    | ६     | ६     | १५    | ३०    | ४५    | ६०    | ७५    | ९०    | १०५   | १२०   |
| पुत्र      | पुत्र          | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र | पुत्र |

नवग्रह वाहनानि

| सू      | चं  | मं   | बु | रु    | शु | शं   | रा  | के  | गह  | वा  | २ | ५ | ८  | रुपा  | ज्येष्ठ |
|---------|-----|------|----|-------|----|------|-----|-----|-----|-----|---|---|----|-------|---------|
| ज्येष्ठ | शशा | वाहा |    | शिवान | भग | दादु | भैस | धुच | काग | वाह | ३ | ७ | १० | बांवा | ज्येष्ठ |
|         |     |      |    |       |    |      |     |     |     |     | ४ | ८ | १२ | लोहा  | मेह     |

७०



सु. ७१

भौमष्टोत्रमच बुधर्हादुधच गुरुहात गुरुच शुक्रसात शुक्रच मान्यर्हा. गुरुहात गुरुचकं केतुर्हा.

|       |     |      |      |     |       |       |     |         |       |     |       |        |     |       |      |    |       |       |     |      |
|-------|-----|------|------|-----|-------|-------|-----|---------|-------|-----|-------|--------|-----|-------|------|----|-------|-------|-----|------|
| मुख   | ३   | रोग  | मु.  | ५   | ज्ञान | भाल   | ४   | रिज्य   | भाल   | ४   | मुख   | मुख    | १   | पीडा  | पाद  | ७  | धन    | नैत्र | ५   | शोक  |
| नेत्र | ३   | धर   | वे   | ५   | रज्य  | स्कंध | ४   | लक्ष्मी | स्कंध | ४   | लभोज  | गुह्य  | २   | पीडा  | हेभज | ५  | रोग   | मुख   | ५   | लाभ  |
| मस्त  | ३   | यशे  | कंठ  | ५   | मुख   | कंठ   | ४   | धन      | कंठ   | ४   | मुख   | नेत्र  | ३   | मुख   | भाल  | ३  | रिपु  | भाल   | ३   | रज्य |
| कंठ   | ४   | हेफा | हृदि | ५   | ज्ञान | हृदि  | ५   | पीत     | हृदि  | ५   | पीडा  | मुर्दि | २   | रज्य  | हृदि | २  | दुर्ज | रूक   | ४   | रीघी |
| हृदि  | ५   | निव  | पाद  | ५   | क्षय  | पाद   | ६   | पीडा    | पाद   | ६   | मस्य  | हृदि   | ५   | धन    | मुख  | १० | रिपु  | वाक्  | ४   | भय   |
| गुह्य | ३   | धर   | कर   | २   | ज्ञान | हस्त  | ४   | मस्य    | हस्त  | ४   | व्यथा | वाक्   | ४   | वाह   | वाक् | ५  | मस्य  | नाभि  | १   | नाश  |
|       | २   | भ्रम | अ    | १   | क्षय  | वत्र  | ३   | मुख     | नेत्र | ३   | पीडा  | पादवे  | ६   | दुर्ज | नाभ  | १  | शोक   | गुह्य | ३   | पीडा |
|       | ... | ...  | ...  | ... | ...   | ...   | ... | ...     | ...   | ... | ...   | ...    | ... | हेकर  | ४    | धन | गुह्य | ३     | रोग | ...  |
|       | रोग | अंग  | न    | फल  | अंग   | न     | फल  | अंग     | म     | फल  | अंग   | म      | फल  | अंग   | न    | फल | अंग   | न     | फल  | अंग  |

सतकन्ययोर्द्वयोजनमासभति योकर गृहः मोचिता घस वर्षे असस्य तेचे द्वितीयजनयोः सतमदः  
 यष्टव मध्य संस प्रदिष्टं निज्य रूप चैनव मुक्तं कदापि केचित् सूर्य वहि गं प्रोर्द्ध वाहर्मे वान्यो न्यज्य एषौ स्य  
 द्विवाहः १५ जाति परिणय यात घणसा मातः सता कर पीडत नच निज कुले तदेहा संदना दपि मुडने मच स  
 दूजयोः भौत्रो ह्यो सद्गोदर कन्य केन सद्गज सुतो हाहो व्याहो अभेत पितृ क्रिया ॥३॥

शि.  
७१



मु. च.  
७२

वध्या वरस्यापि कुले त्रिपुरुषे नाशं व्रजे त्कश्च ननिश्च योत्तरं मासोत्तरं तत्र विवाह इष्यते शाखा  
या वासु तक निर्गमै परैः १७ चूडा व्रतं चापि विवाह तो व्रतात् ॥ चूडाच नैषा पुरुष त्रयो तरे दधू  
प्रवेशाच्च सुता विनि र्गमः घण मासतो वाद विभेदतः शुभः १८ श्वश्रू विनाश महिजौ सुतां  
विधतः ॥ कन्या सुतौ नि ऋतिजौ श्व सुरं हतश्च ज्येष्ठा भजा तत नया स्वधवां गजं च शंकाग्नि  
जा भवति दै वर नाश कर्त्री १९ ही शाद्य पाद त्रय जा कन्या देवर सौख्यदा मूलांत्य पाद सूर्या  
द्य पाद जातौ तयोः शुभौ ॥ २० नारदी देव कमारिणि संप्राप्ते या तिथि भास्करो दायो सातिथी  
सकला झोया दाना इयन कर्मसु स्मरते स्नाते तथा नक्ते पितृ कार्ये विशेषतः यादव स्तंग  
ते भानु सातिथि सकला भवेत् उदया दश दैवत्या ततो अष्टम मानुषी ततो ई पद घटिका  
च गक्षसी द्विप्रहरौ घटिका हीनौ द्विप्रहरौ घटी द्वि कौ कुतयः काल विज्ञेयो पितृणां दत्तमक्षय  
म् प्रायश्चित्त चिकित्सां च ज्योतिषं धर्म निर्णयः विना शास्त्रेण यो ब्रूयात् तमाहुर्ब्रह्म घातके  
इति मुहूर्त चिंतामणि सारणी समाप्तः शुभम् ॥ इसमें १८४ मुहूर्त हैं संख्याओं पर दृष्टि  
न करना ॥ सम्बत् १९३२ ॥ सन् १८७४ ईसवी ॥ लिखतं नागर ब्राह्मण वैजमाथ महता ॥  
इति

शि.  
७२



